रांची, शुक्रवार
03.05.2024
वर्ष : 9, अंक : 151 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरें हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.com | bihanbharat@gmail.com | @bihan_bharat | Bihan Bharat | RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

हेमंत सोरेन सहित अन्य आरोपितों की न्यायिक हिरासत अवधि बढ़ाई गई

रांची। बड़गाई अंचल की जमीन घोटाले मामले के आरोपित जेल में बंद पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, निलंबित उप राजस्वकर्मी भानु प्रताप प्रसाद और फर्जी दस्तावेज तैयार करने के मास्टरमाइंड मोहम्मद सद्दाम की पेशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ईडी के विशेष न्यायाधीश राजीव रंजन की अदालत में हुई। गुरुवार को कोर्ट ने तीनों की न्यायिक हिरासत की अवधि 16 मई तक के लिए बढ़ा दी है। मामले में अगली पेशी 16 मई को होगी। मामले को लेकर ईडी ने ईसीआईआर 6/2023 दर्ज किया है। मामले में भानु प्रताप प्रसाद, हेमंत सोरेन सहित पांच के खिलाफ ईडी आरोप पत्र भी दाखिल कर चुकी है। ईडी ने हेमंत सोरेन को 31 जनवरी की रात गिरफ्तार किया गया था। मामले में ईडी ने अफसर अली, अंतु तिर्की, प्रियरंजन सहाय, विपिन सिंह और इरशाद को भी गिरफ्तार कर रिमांड पर पूछताछ के बाद जेल भेज दिया है।

कांग्रेस उम्मीदवार यशस्विनी छह को करेंगी नामांकन

रांची। रांची लोकसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार यशस्विनी सहाय छह मई को अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगी। इस दौरान मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, पार्टी विधायक दल नेता आलमगीर आलम, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय और कई मंत्री और विधायक शामिल होंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत की क्रिमिनल रीट पर फैसला आज

रांची। झारखंड हाई कोर्ट पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी के खिलाफ दायर याचिका पर शुक्रवार को फैसला सुनाएगा। हाई कोर्ट ने 28 फरवरी को सुनवाई पूरी करने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। हेमंत सोरेन ने अपनी गिरफ्तारी को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। हेमंत सोरेन का कहना था कि उनके खिलाफ जो मामला दर्ज किया गया है, वह मनी लॉन्ड्रिंग का नहीं है, जिस जमीन की बात ईडी कह रहा है वह जमीन उनके नाम कभी रहा ही नहीं। आदेश सुरक्षित रखने के बाद फैसला नहीं सुनाए जाने के खिलाफ हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका दायर की है। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर ईडी से जवाब मांगा है।

राहुल गांधी पर पीएम मोदी ने साधा निशाना

शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला

एजेंसी

आणंद: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस को पाकिस्तान का मुरीद करार देते हुए आरोप लगाया कि भारत की सबसे पुरानी पार्टी आज जब मर रही है तो उसके लिए पड़ोसी मुल्क के नेता दुआ कर रहे हैं और शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए उतावले हैं क्योंकि देश के दुश्मन यहां एक कमजोर सरकार चाहते हैं।

मध्य गुजरात के आणंद शहर में आणंद और खेड़ा लोकसभा सीट पर भाजपा उम्मीदवारों के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने यह आरोप भी लगाया कि कांग्रेस देश के संविधान में बदलाव कर मुस्लिमों को अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समुदायों का आरक्षण देना चाहती है।

लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस को पाकिस्तान के साथ जोड़ने का मोदी का बयान ऐसे समय में आया है जब एक दिन पहले पाकिस्तान में इमरान खान की कैबिनेट में मंत्री रहे चौधरी फवाद हुसैन ने कथित तौर पर अपने सोशल मीडिया हैंडल पर राहुल गांधी का एक वीडियो साझा किया था और उनकी तारीफ की थी।

मोदी ने कटाक्ष किया, संयोग देखिए, आज भारत में कांग्रेस कमजोर हो रही है। मजा ये है कि यहां कांग्रेस मर रही है और वहां पाकिस्तान रो रहा है। कांग्रेस के लिए अब पाकिस्तानी नेता दुआ कर रहे हैं। शहजादे (राहुल गांधी की ओर इशारा करते हुए) को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला है। उन्होंने कहा, यह आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि हम पहले से ही जानते हैं कि कांग्रेस पाकिस्तान की मुरीद है। पाकिस्तान और कांग्रेस की साझेदारी का पदार्फाश हो गया है। यह दिखाता है कि देश के दुश्मन भारत में मजबूत नहीं बल्कि कमजोर सरकार चाहते हैं। उन्होंने कहा, एक कमजोर सरकार जो 26/11 के मुंबई आतंकी हमले के समय थी। वे एक भ्रष्ट सरकार चाहते हैं जो 2014 से पहले थी। लेकिन मोदी की मजबूत सरकार न तो झुकती है और न ही रुकती है। उन्होंने कहा कि अब पहले जैसी स्थिति नहीं है जब कांग्रेस सत्ता में थी, अब पाकिस्तान के आतंक के टायर पंक्चर हो गए हैं। मोदी ने कहा, जो देश अतीत में आतंक का निर्यात करता था, वह अब आटा आयात करने के लिए जूझ रहा है। जिन हाथों में बम होते थे, वे अब भीख का कटोरा पकड़े हुए हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया भर के लोग अब कह रहे हैं कि भारत दुनिया का सबसे तेजी से उभरता देश है और उसे विश्व बंधु के तौर पर देखा जाता है जो दो देशों के बीच विवादों को हल कर सकता है। आरक्षण के मुद्दे पर उन्होंने आरोप लगाया, कांग्रेस मुसलमानों को आरक्षण देना चाहती है, जो कि उसका पसंदीदा वोट बैंक है।

इसके लिए वे संविधान में बदलाव चाहते हैं। मैं कांग्रेस को चुनौती देता हूं कि वह लिखित में दे कि वह मुसलमानों को धार्मिक आधार पर आरक्षण देने के लिए संविधान में बदलाव नहीं करेगी। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस और इंडिया गठबंधन को चुनौती दी कि वे लिखित में दें कि जिन राज्यों में पार्टी और उसके सहयोगी सत्ता में हैं, वहां ओबीसी कोटा घटाकर पिछले दरवाजे से मुसलमानों को आरक्षण नहीं दिया जाएगा।

राहुल गांधी का पीएम पर निशाना

हार के डर से नरेन्द्र मोदी अपने पद की गरिमा भूल गए हैं:राहुल

एजेंसी

नई दिल्ली: कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनाव के बाद केंद्र में विपक्षी गठबंधन इंडिया की सरकार बनने का भरोसा जताते हुए बुधवार को दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हताश, निराश हैं और हार मान चुके हैं। गांधी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि इन चुनावों में हार के डर से मोदी अपने पद की गरिमा भूल गए हैं और अनर्गल बातें कर रहे हैं तथा दावा कर रहे हैं कि कांग्रेस मंगलसूत्र, लोगों के घर के कमरे या भैंसें छीन लेगी। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, एक हताश, निराश और हारे हुए प्रधानमंत्री की बातें सुनिएः कांग्रेस आपके घर का कमरा छीन लेगी, कांग्रेस आपके गले का मंगलसूत्र छीन लेगी, कांग्रेस आपकी भैंस छीन लेगी। गांधी ने कहा, नरेन्द्र मोदी ऐसी बहकी-बहकी और झूठी बातें इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि कांग्रेस उनकी 300 में से 150 से ज्यादा सीट छीनकर सरकार बना रही है। इस डर में मोदी, प्रधानमंत्री पद की गरिमा भूल झूठ की मशीन बन गए हैं। उन्होंने कहा, ...इंडिया की सरकार जनता से लेगी नहीं, उन्हें देगी- उतना ही पैसा जितना मोदी ने अपने अरबपति मित्रों पर लुटाया है। हमारी सरकार अडानियों की नहीं हिंदुस्तानियों की होगी। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने प्रधानमंत्री को यह स्वीकार करने के लिए धन्यवाद दिया कि कांग्रेस अगली सरकार बनाने की राह पर है।

खेड़ा ने कहा, आज गुजरात में प्रधानमंत्री ने जोर-शोर से घोषणा की कि भाजपा एकमात्र पार्टी है जो 272 से अधिक सीट पर चुनाव लड़ रही है और उन्होंने कांग्रेस को चुनौती देते हुए दावा किया कि जब उसने 272 सीट पर उम्मीदवार भी नहीं उतारे हैं तो सरकार कैसे बनाएगी। खेड़ा ने कहा, धन्यवाद प्रधानमंत्री, कम से कम यह स्वीकार करने के लिए कि हम सरकार बनाने की राह पर हैं। हम आपको सूचित करना चाहेंगे कि हमने पहले ही 326 सीट पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। श्रीमान प्रधानमंत्री क्या यही एनटायर मैथेमेटिक्स की डिग्री है।

राहुल गांधी का नाम लिये बिना प्रधानमंत्री ने कहा कि पार्टी का शहजादा अब दावा कर रहा है कि अगर मोदी तीसरी बार सत्ता में आए तो देश जलेगा। उन्होंने कहा, वास्तव में यह कांग्रेस है जो अब जल रही है। वे ऐसी बातें इसलिए कह रहे हैं क्योंकि उनके सपने अब राख में बदल गए हैं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर में भाजपा उम्मीदवार का एक वीडियो साझा किया। रमेश ने एक्स पर वीडियो साझा करते हुए पोस्ट में कहा, कोल्हापुर की सभा में भाजपा प्रत्याशी और मौजूदा भाजपा सांसद धनंजय महाडिक की बहन शमिका महाडिक ने पूछा कि आप देश राहुल गांधी को सौंपेंगे या नरेन्द्र मोदी को? लोगों का जवाब आया राहुल।

प्रधानमंत्री मोदी रांची में आज शाम चार बजे करेंगे रोड शो

बिभा संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश कार्यालय में गुरुवार देर शाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रांची कार्यक्रम को लेकर महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रांची आगमन पर स्वागत की तैयारी पर चर्चा हुई।

बाद में पत्रकारों से बातचीत में प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी अपने दो दिवसीय झारखंड दौरे पर तीन मई को शाम चार बजे रांची पहुंचेंगे। भगवान बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से वे राजभवन जायेंगे। उन्होंने बताया कि बिरसा मुंडा राजपथ पर पूरे रास्ते, जिसमें हिनू चौक, बिरसा चौक, डीपीएस चौक अरगोड़ा चौक, भाजपा प्रदेश कार्यालय, हरमू चौक, सहजानंद चौक, कार्तिक उरांव चौक पर लोग प्रधानमंत्री का स्वागत हजारों की संख्या में कतारबद्ध होकर करेंगे। भारत माता चौक से बाल्मिकी नगर, किशोरगंज चौक, गाड़ी खाना चौक, मारवाड़ी भवन गौशाला, गिरधर प्लाजा, रातु रोड चौक तक प्रधानमंत्री जी रोड शो करेंगे।

बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, सांसद संजय सेठ, विधायक सीपी सिंह, समरी लाल, प्रदेश उपाध्यक्ष आरती कुजूर, प्रदेश मंत्री सरोज सिंह, सीमा पासवान, संजीव विजयवर्गीय, रमेश सिंह, कार्यालय मंत्री हेमंत दास, मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, प्रवक्ता प्रतुल शाह देव, रमाकांत महतो, राफिया नाज, अशोक बड़ाइक, राहुल अवस्थी और सुबोध सिंह गुड्डू आदि उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर हुआ फुल कारकेड रिहर्सल

रांची। प्रधानमंत्री के झारखंड के दो दिवसीय आगमन को लेकर राजधानी रांची में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये है। प्रधानमंत्री एयरपोर्ट से राजभवन जाने के दौरान रोड शो करेंगे। प्रधानमंत्री के रोड शो करने वाले सड़क मार्ग को पूरी तरह से बैरिकेडिंग कर दी गयी है। प्रधानमंत्री के दौरे को लेकर एयरपोर्ट से लेकर राजभवन तक चप्पे-चप्पे पर पुलिस के जवान की तैनाती रहेगी। सुरक्षा को लेकर आठ आईपीएस, 30 डीएसपी, इंस्पेक्टर- सब-इंस्पेक्टर रैंक के 200 अधिकारी और 1500 जवान तैनात किये गये है। जवानों में राज्य पुलिस और केंद्रीय रिर्जव पुलिस बल की भी तैनाती की गयी है।

पूरी सुरक्षा के वरीय प्रभार में पुलिस मुख्यालय की ओर से आईजी पंकज कंबोज को जिम्मेदारी दी गयी है। सुरक्षा को लेकर गुरुवार को एयरपोर्ट से लेकर राजभवन और राजभवन से लेकर एयरपोर्ट तक का फुल कारकेड रिहर्सल किया गया। इसके अलावा धुर्वा स्थित विस्थापित भवन में विधि-व्यवस्था की ड्यूटी के लिए सभी पुलिस पदाधिकारियों को वरिय अधिकारियों ने आवश्यक दिशा निर्देश दिये। बैठक में रांची आईजी अखिलेश झा, आईजी पंकज कंबोज, डीआईजी अनूप बिरथरे, एसएसपी चंदन सिन्हा, एसटीएफ एसपी प्रियदर्शी आलोक और एटीएस ऋषभ झा, सिटी एसपी राजकुमार मेहता सहित कई पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे। वहीं दूसरी ओर एसपीजी की टीम भी रांची पहुंची है। एसपीजी टीम प्रधानमंत्री के निर्धारित मार्ग और सुरक्षा की पूरी जानकारी तैनात अधिकारियों से ली।

जनता अब बदलाव चाहती है : चंपाई सोरेन

बिभा संवाददाता

धनबाद। धनबाद लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह ने बुधवार को नामांकन पर्चा दाखिल किया। अनुपमा सिंह पर्चा दाखिल करने के लिए झरिया के विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह, बेरमो विधायक अनूप सिंह के साथ समाहरणालय पहुंच धनबाद उपायुक्त को अपना नॉमिनेशन फाइल सुपुर्द किया। इसके बाद वह महागठबंधन के सभा मे पहुंची। जहां झारखंड के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा यदि लोकतंत्र और संविधान को बचाना है तो इंडि गठबंधन को जितना ही पड़ेगा।

धनबाद लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्यासी अनुपमा सिंह ने अपना पर्चा दाखिल करने के बाद झारखण्ड के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को रिसीव करने धनबाद के बरवाअड्डा स्थित हवाईअड्डा पहुंची और वहां से सडक मार्ग से गोल्फ ग्राउंड में आयोजित इंडि गठबंधन की सभा में पहुंची। मंच पर मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के साथ मंत्री आलमगीर आलम, बादल पत्रलेख, सत्यानंद भोक्ता एवं झारखंड कांग्रेस प्रमुख राजेश ठाकुर भी मौजूद थे। इस दौरान झारखंड के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने महागठबंधन के कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यदि लोकतंत्र और संविधान को बचाना है तो महागठबंधन को जितना ही पड़ेगा। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में केंद्र की सरकार ने सिर्फ झूठे वादे किए, आज देश मे बेरोजगारी और महंगाई चरम पर है, जनता अब बदलाव चाहती। लोग एनडीए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के झूठे वादों से ऊब चुकी है। इस एनडीए गठबंधन को लोगों से वोट मांगने का अब कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि यह सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है। यह सरकार अपने विरोधियों को झूठे आरोप में जेल में डालने का काम कर रही है। इसलिए अब इस ताना शाह सरकार को उखाड़ फेंकने के समय आ गया है।

चंद्रमा पर उम्मीद से पांच-आठ गुना ज्यादा पानी, इसरो की नई स्टडी में खुलासा

एजेंसी

नई दिल्ली : चंद्रमा पर उम्मीद से ज्यादा बर्फ मौजूद है. लेकिन ये सतह के नीचे हैं. इसे खोदकर निकाला जा सकता है. उसका इस्तेमाल चांद पर कॉलोनी बनाने के लिए कर सकते है यह खुलासा क्रफ्ड ने किया है. इसरो के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, आईआईटी कानपुर, यूनिवर्सिटी ऑफ साउदर्न कैलिफोर्निया, जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी और आईआईटी-आईएसएम धनबाद के वैज्ञानिकों ने मिलकर यह स्टडी की है.

नई स्टडी में यह खुलासा हुआ है कि चांद की जमीन यानी सतह से करीब दो-चार मीटर नीचे उम्मीद से ज्यादा बर्फ है. पहले की गणना से पांच से आठ गुना ज्यादा बर्फ को निकाला जा सकता है. ताकि भविष्य में लंबे समय के लिए इंसान चंद्रमा पर रह सके. इससे दुनिया की कई स्पेस एजेंसियों को फायदा होगा. इसरो के मुताबिक चंद्रमा के उत्तरी ध्रुव पर दक्षिणी ध्रुव की तुलना में दोगुना ज्यादा बर्फ है. चंद्रमा के ध्रुवों पर ये बर्फ कहां से आई... इस सवाल के जवाब में इसरो कहता है कि यह इंब्रियन काल का मामला है. वॉल्कैनिज्म यानी ज्वालामुखीय गतिविधियों से निकली गैस लाखों सालों में धीरे-धीरे सतह के नीचे बर्फ के रूप में जमा होती चली गई.

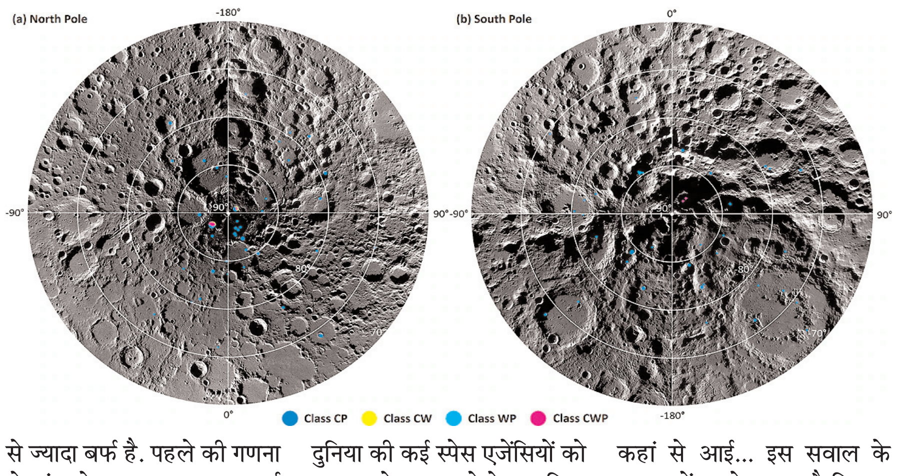

अमेरिकी स्पेसक्राफ्ट और चंद्रयान-2 के डेटा से की स्टडी

वैज्ञानिकों ने अमेरिकी लूनर रीकॉन्सेंस ऑर्बिटर (एलआरओ) और चंद्रयान-2 के ऑर्बिटर से मिले डेटा का एनालिसिस किया.
एलआरओ के राडार, लेजर, ऑप्टिकल, न्यूट्रॉन स्पेक्ट्रोमीटर, अल्ट्रा-वॉयलेट स्पेक्ट्रोमीटर और थर्मल रेडियोमीटर से ये डेटा लिए गए हैं. ताकि चंद्रमा पर बर्फीले पानी की उत्पत्ति, फैलाव और विभाजन को समझा जा सके.

चंद्रयान-2 ने पहले ही खोजा था चांद के ध्रुवों पर पानी का खजाना

हैरानी इस बात की है कि इस नई स्टडी से पुरानी स्टडीज को समर्थन मिलता है. पिछली स्टडी भी इसरो के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर ने चंद्रयान-2 के ड्युल फ्रिक्वेंसी सिंथेटिक अपर्चर राडार और पोलैरीमेट्रिक राडार डेटा का इस्तेमाल किया गय था. तभी चांद के ध्रुवीय गड्ढों के अंदर बर्फ की मौजूदगी का पता चला था. इस स्टडी से इसरो समेत पूरी दुनिया की स्पेस एजेंसियों को अपने फ्यूचर लूनर मिशन में मदद मिलेगी. पानी खोजने के लिए इसरो या अन्य स्पेस एजेंसिया ध्रुवों पर अपने मिशन और ड्रिलिंग मशीनें भेज सकती हैं.

सर्वेक्षणों की आड़ में मतदाताओं का विवरण मांगना बंद करें राजनीतिक दलः निर्वाचन आयोग

एजेंसी

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा अपनी प्रस्तावित योजनाओं के लिए विभिन्न सर्वेक्षणों की आड़ में मतदाताओं का विवरण मांगने को गंभीरता से लिया है, क्योंकि यह चुनाव कानून के तहत भ्रष्ट आचरण के समान है। चुनाव प्राधिकरण ने उल्लेख किया कि कुछ राजनीतिक दल और उम्मीदवार ऐसी गतिविधियों में संलग्न हैं जो वैध सर्वेक्षणों और चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के मद्देनजर व्यक्तियों को पंजीकृत करने के पक्षपातपूर्ण प्रयासों के बीच की रेखाओं को पार कर रहे हैं।

आयोग ने सभी राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों को किसी भी विज्ञापन, सर्वेक्षण या मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के लिए लोगों को पंजीकृत करने वाली किसी भी गतिविधि को तुरंत बंद करने के लिए एक सलाह जारी की। इसमें कहा गया है कि चुनाव के बाद के लाभों के मद्देनजर पंजीकरण के लिए निजी तौर पर मतदाताओं को आमंत्रित करने या बुलाने का कार्य निर्वाचक और प्रस्तावित लाभ के बीच एक लेन-देन जैसे संबंध का आभास पैदा कर सकता है और एक प्रलोभन जैसा है।

संक्षिप्त खबरें

सिलाई सेंटर में महिला से दुष्कर्म का प्रयास

रातू । रातू थाना क्षेत्र के पाली निवासी रिकेश महतो पिता लक्ष्मण महतो के विरुद्ध रातू थाना क्षेत्र के ही एक महिला ने जबरदस्ती दुष्कर्म का प्रयास करने एवं मारपीट करने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराया है । पीड़िता रातू में ही सिलाई का काम करती है । दर्ज प्राथमिकी में पीड़िता ने बताया कि रिकेश महतो पूर्व में भी कई बार उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास कर चुका है । इसको लेकर रातू थाना में पीड़िता के द्वारा पहले भी शिकायत की गई थी और बॉण्ड लिखवाकर रिकेश को थाना से छोड़ा गया था । आरोपी रिकेश रातू के ही रातू चट्टी कुम्बाटोली में लक्ष्मी फर्नीचर नामक दुकान चलाता है । 30 अप्रैल को दोपहर लगभग बारह बजे वह पीड़िता के सिलाई सेंटर में पहुंचा और अश्लील हरकत करने लगा जब पीड़िता ने इसका विरोध किया तो वह जबरदस्ती दुष्कर्म का प्रयास करने लगा एवं उसके साथ मारपीट करने लगा । इससे उसके चेहरे एवं शरीर के कई अंगो में चोटें भी आई । पीड़िता के हल्ला करने के बाद रिकेश जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकला । रातू पुलिस मामले की जांच कर रही है ।

आईएचएम रांची में विश्व मजदूर दिवस : चतुर्थ वर्ग कर्मियों के सम्मान एवं ध्यानवाद कार्यक्रम का आयोजन

मांडर : प्रखण्ड स्थित ब्राम्बे में विश्व श्रमिक दिवस के अवसर पर होटल प्रबंधन संस्थान (आईएचएम) राँची में कार्यरत हाउसकीपिंग कर्मचारी, सुरक्षाकर्मी एवम सभी चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों के संस्थान के प्रति अथक एवम उत्कृष्ट कार्यसमर्पण के लिए सम्मान एवम्-ध्यानवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह का मुख्य उद्येश वर्षभर संस्थान के कार्यों में चतुर्थवर्गिय कर्मियों के कार्यों को सम्मान देने, कार्यस्थल को कार्य करने हेतु व्यवस्थित करने तथा अनेकों कार्यों एवम् मेहनत को सराहने से था। इस समरोह की शुरूवात पासिंग द पार्सल तथा रन विद ग्लास प्रतियोगिता से की गयी तथा विजेता कर्मियों को पुरष्कृत भी किया गया। तत्पश्चात संस्थान में बनाए गए केक काटा गया तथा संस्थान के शेफ तथा छात्रों द्वारा पकाए गए स्वादिष्ट व्यंजनों को संस्थान के रेस्टोरेंट पाही मोखना में सभी कर्मियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया जिसका उपभोग कर सभी ने काफी प्रशंसा की । संस्थान द्वारा आयोजित इस भावपूर्ण आयोजन के दौरान सभी कर्मी भावुक हो गए। संस्थान के प्राचार्य डॉ. भुपेश कुमार ने विश्व श्रमिक दिवस की बधाई देते हुए बताया की किसी भी संस्था के विकास में चतुर्थवर्गीय कर्मचारीयों का अहम भूमिका होती है, साल के केवल एक दिन ही नहीं बल्कि हमे अपने कर्मचारियों एवम श्रमिकों उन्हें योगदान एवम मेहनत के लिए हमेशा सम्मान देना चाहिए तथा सदा प्रोत्साहित भी करते रहना चाहिए।

आफिया ने स्कूल टॉप करके चान्हो का मान

चान्हो। प्रखंड के चटवल की रहने वाली अफिया अंबर ने 12वीं में 86.6% नंबर लाकर स्कूल में टॉप किया। रांची के कांके स्थित अनीता इंटरमीडिएट कॉलेज, काँके स्कूल की छात्रा अफिया अंबर को साइंस स्ट्रीम में 418 अंक मिले हैं। लेकिन अफिया अंबर के लिए सफलता की राह इतनी आसान नहीं रही है। अफिया ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि उसे इतना तो भरोसा था कि रिजल्ट बेहतर होगा। लेकिन, यह नहीं सोचा था कि स्कूल में अव्वल रहेगी। अफिया का सपना डॉक्टर बनने का है। वह कहती हैं, मेरे अब्बू-अम्मी ने कड़ी मेहनत कर हम लोगों की पढ़ाई-लिखाई में कोई कमी नहीं रहने दी। मेरा अरमान है कि मैं उन्हें हर तरह की खुशी देने के काबिल बन सकूं। अफिया के पिता मौलाना मंसूर आलम को जब यह खबर मिली तो खुशी से झूम उठे।

भारती ग्रुप ऑफ इंस्टीच्यूचन में मजदूर दिवस मनाया गया

मांडर। प्रखंड स्थित भारती ग्रुप ऑफ इंस्टीच्यूचन में कार्यरत सभी श्रमिको को महाविद्यालय परिवार की ओर से महाविद्यालय के सचिव नितिन पराशर तथा दीपाली पराशर के द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। दीपाली पराशर ने कहा कि श्रमिक ही अर्थ व्यवस्था की रीढ़ है। इसके बिना विकास की बात नहीं कर सकते। महाविद्यालय के डीन उपेन्द्र उपराप्याय ने कहा कि मजदूर दिवस एक विशेष अवसर है जब दुनिया भर में लोग मजदूर वर्ग की सच्ची भावना और मजदूर आन्दोलन को मनाते है। महाविद्यालय के प्राचार्य ने श्रमिको के ऐतिहासिक आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा कि मजदूरो के कार्य को सम्मान से देखने की जरूरत है। मौरे पर कॉलेज के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी मौजूद थे।

ईसीआरकेयू ने मनाया मजदूर दिवस

धनबाद : ईस्ट सेंट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन धनबाद शाखा दो हर साल की तरह इस साल भी अपने धनबाद हिल कॉलोनी स्थित शाखा कार्यालय प्रांगण में मई दिवस का आयोजन किया गया था। जिसके तहत शाखा के शाखा अध्यक्ष एन के खवास के द्वारा झंडा उत्तोलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उपस्थित सभी कर्मचारियों को मई दिवस का बैच लगाया गया। और उपस्थित नेता करने अपना वक्तव्य रखें। इस कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष एन के खवास,के अलावे शाखा सचिव आर के सिंह,सोमेन दत्ता,सुप्रटिव चक्रवर्ती,एस बी सिंह,एम के मुकेश,अभिषेक कुमार,परमेश्वर कुमार,एस मुंजेश्वर राव,यू के पाठक,एस के पाल,मृग भूषण सिंह,रोहित पाठक,इस्लाम अंसारी,एस के महतो,एम के तिवारी,विकाश कुमार,गुड्डू कुमार,धर्मवीर पासवान,रिट लाल गोप,प्रदीपतो सिन्हा,अश्वनी कुमार,एम के मण्डल,मिथिलेश कुमार,महेंद्र कुमार,कौशलेन्द्र कुमार,बिस्वाजीत मुखर्जी,और दीपक कुमार उपस्थित रहे। वही दूसरी तरफ लाइन शाखा के कोचिंग परिसर में एक कार्यक्रम आयोजन किया गया सर्वप्रथम यूनियन शाखा सचिव जे के साव के द्वारा झंडा तोलन का कार्यक्रम किया गया कइस कार्यक्रम में मुख्य रूप से केंद्रीय संगठन सचिव हाजीपुर नेताजी सुभाष ने अपने वाणी से मजदूरों को यह बताने का कार्य किया कि मजदूरों की हक की लड़ाई केवल और केवल संगठन के द्वारा ही लड़ा जाता है कजिसमें एआईआरएफ और ईसीआरकेयु का महत्वपूर्ण योगदान रहता है कइस कार्यक्रम में मुख्य रूप से शाखा अध्यक्ष प्रशांत बनर्जी कोषाध्यक्ष सी एस प्रसाद डीपू इंचार्ज अभय मेहता, एन के खवास,सुरेंद्र चौहान,अमरजीत यादव,दिलीप कुमार,आरके अजय कुमार,नागेंद्र कुमार,धुरंधर यादव,नीतीश कुमार,फिरोज अंसारी,इजहार आलम,सुजाता देवी,रुचि कुमारी,शहनाज परवीन बिंदु देवी रीना कुमारी महुआ चौधरी मनजीत कुमार, अनुरंजन कुमार इत्यादि उपस्थित थे।

खलारी में सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

बिभा संवाददाता

खलारी। रांची जिले के खलारी थानान्तर्गत भेलवाटांड़ में बोलेरो व मोटरसाइकिल के बीच सीधी टक्कर में पति, पत्नी और दो बच्चों की मौत हो गई ।घटना बुधवार शाम 6.30 बजे की है ।मृतक की पहचान होमगार्ड जवान पंकज कुमार (33 वर्ष) अपनी पत्नी गुड़िया देवी (31 वर्ष), पुत्र दीपराज कुमार (11 वर्ष), राजदीप कुमार (9 वर्ष) तथा पुत्री शालिनी कुमारी (7 वर्ष) के रूप में की गई है ।मोटरसाइकिल खल्01अउ7124 से अपने घर जा रहा था। इसी क्रम में भेलवाटांड़ के निकट विपरीत दिशा से तेज गति से आ रही अनियंत्रित बोलेरो जेएच01इपी3826 ने मोटरसाइकिल को सीधी टक्कर मार दी ।बोलेरो की गति इतनी तेज थी कि मोटरसाइकिल को घसीटता हुआ कुछ दूर तक ले गया ।घटना स्थल पर ही पत्नी गुड़िया देवी व बेटी शालिनी कुमारी की मृत्यु हो गई ।गंभीर रूप से घायल पंकज और दो बेटों को तुरंत सीसीएल के बचरा अस्पताल पहुंचाया गया ।अस्पताल पहुंचने पर घायल पंकज कुमार और एक बेटे राजदीप कुमार की मृत्यु हो गई ।बड़ा बेटा दीपराज कुमार गंभीर रूप से घायल है ।उसे तुरंत रिम्स रेफर कर दिया गया ।पंकज कुमार प्रतापपुर थाना क्षेत्र (चतरा) के जोगियारा गांव का रहने वाला था ।वह पिपरवार में ही होमगार्ड के पद पर पदस्थापित था। बुधवार को डिउटी के बाद बाजार से पत्नी व अपने बच्चों के साथ घर जा रहा था ।इसी दौरान दुर्घटना हो गई ।ग्रामीणों के आक्रोश के कारण देर रात करीब दो बजे दुर्घटना स्थल पर पड़े.शवों को उठाया जा सका ।गुरूवार को चारो शवों को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया गया ।मृतक के बड़े भाई शशिकुमार गुप्ता ने घटना को लेकर खलारी थाने में प्राथमिकी दर्ज कराया है।

सड़क हादसे में पांच घायल

रातु। थाना क्षेत्र के हुरहुरी ठाकुरगांव मार्ग में दो अलग अलग सड़क हादसे में पांच लोग घायल हो गये। पहली घटना गुरुवार को दिन के 11 बजे की है। जिसमे एक तेज रफतार फ्ा5 बाइक जेएच01एफएच-6880 व टीवीएस एक्सल जेएच01ईएक्स-7767 में सीधी टक्कर हो गयी। हादसे में टीवीएस एक्सल में सवार कन्नौज निवासी एक व्यक्ति बुरी तरह से घायल हो गया। उसके पैर में गंभीर चोट आई है। वही बाइक सवार दो युवक भी बुरी तरह से घायल हो गये है। वही दूसरा हादसा उसी जगह पर दिन के तीन बजे घटी। जहां एक अपाची बाइक जे एच01सीजेड-5846 व स्कूटीजेएच01बीजे-3150 में आपने- सामने की सीधी टक्कर हो गयी। हादसे में स्कूटी सवार का पैर बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। वही अपाची बाइक सवार को भी शरीर के विभिन्न हिस्सो में चोट आई है। स्थानीय लोगो की मदद से सभी को रातू सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया जहां उनका इलाज चल रहा है।

कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी ने सिल्ली में कार्यकर्ता संग की मुलाकात

कहा बीजेपी एक वाशिंग मशीन, भ्रष्टाचार का आरोप लगे नेताओं का धूल जाते है दाग

बिभा संवाददाता

सिल्ली : रांची लोकसभा क्षेत्र से इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय बुधवार को नामांकन के पूर्व कार्यकत्ताओं से मिलने सिल्ली पहुंची। इस दौरान कार्यकत्ताओं ने पतराहातु व सिल्ली में गर्मजोशी से स्वागत किया। यशस्विनी सहाय ने सिल्ली स्तिथ लक्ष्मी नारायण मन्दिर में माथा टेका और जीत का आशीर्वाद ली। उन्होंने कहा दिल से निकलें आशीर्वाद से बड़ी कोई शक्ति नही होती, जो लोगों से हमें मिल रहा है मेरी जीत सुनिश्चित है। इस मौके पर यशस्विनी के पिता व पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा मोदी खुद को बड़ा ईमानदार बताते हैं, लेकिन इस देश में भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी स्कीम वही लेकर आए. यह स्कीम थी, जो चंदा देगा, उसका नाम गुप्त रहेगा। आगे उन्होंने कहा बीजेपी एक वाशिंग मशीन है 2014 से भ्रष्टाचार का आरोप झेल रहे विपक्षी नेता वीजेपी में शामिल हुए तो उन पर लगे दाग धूल गए। मौके पर कांग्रेस नेता कार्तिक महतो मनीराम दास मंजूर मोमिन पिनकी बनर्जी सदानंद सोनार बिन्देश्वर महतो देवाषिश दत्ता, झामुमो के रामानंद बेदिया राधिका महतो समेत काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मोटरसाइकिल चोरी करते हुए चोर को ग्रामीणों ने रंगे हाथों पकड़ा पकड़ा, पुलिस ने भेजा जेल

बिभा संवाददाता

खलारी। खलारी थाना क्षेत्र के राय कोलियरी में दो चोर मिलकर घर के बाहर खड़े मोटरसाइकिल चोरी करने का प्रयास कर रहे चोर को ग्रामीणों ने रंगे हाथ पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया ।मिली जानकारी के अनुसार खलारी थाना क्षेत्र के राय कोलोनी के जंग बहादुर राम का मोटरसाईकिल खल्01 इर 9344 हिरो एच०एफ० डिलक्स को सुरज कुमार साव के द्वारा चोरी कर ले जाने के क्रम में पकडा गया ।बताया जाता है कि दो चोर घर के बाहर रखे मोटरसाइकिल का लॉक को तोड़ कर ले जा रहे थे ।इतने में ग्रामीणों को भनक लग गई ।ग्रामीणों ने दो चोरों में से एक चोर को पकड़ने में सफल रहे और खलारी पुलिस को सूचित किया सूचना मिलते ही गस्ती दल पुलिस मौके पर पहुँच कर ग्रामीणों के द्वारा पकड़े गए चोर को थाना लाकर जेल भेज दिया गया ।गिरफ्तार अभियुक्त सूरज कुमार साव के द्वारा बताया गया कि उसके अन्य दोस्त भी थे जो भागने में सफल रहे जिनके विरुद्ध लगातार छापामारी भी चल रही है ।शीघ्र गिरफ्तारी संभावित है ।वही चोरी करते हुए मोटरसाइकिल हिरो एच०एफ० डिलक्स, अभियुक्त का काण्ड में प्रयुक्त मोटरसाईकिल जेएच01सी 2868 हिरो होण्डा सी0 डी0 100 को जप्त किया गया।

बीजेपी गरीबों की हितैषी नही, उखाड़ फेंकने की जरूरत : यशस्विनी

बिभा संवाददाता

सोनाहातू। बीजेपी आश्वासन की राजनीतिक कर आम गरीबों को ठगने का काम करती रही. अमीरों को आगे बढ़ाने का भरपूर सहयोग किया। उक्त बातें इंडिया गठबंधन के रांची लोक सभा कॉग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय ने गुरुवार को एक दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन में मॉही वेक्टर हॉल सोनाहातू में संबोधित करते हुए कही। इन्होंने कही कि मोदी सरकार ने दस साल के कार्यकाल में एक भी वादे पूरे नही किए। इंडिया गठबंधन की सरकार बनी तो वादे नही धरातल पर कार्य दिखेगी। वहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा कि मोदी सरकार जातिवाद की राजनीतिक कर देश को हिंसक बना कर लड़ाने का काम किया है। आनेवाले समय देश में गरीब ओर गरीब बनाएंगे और अमीर अमीर होते रहेंगे। सभा का अध्यक्षता अजगुत महतो व संचालन जिला अध्यक्ष राकेश किरण ने किया मौके पर पूर्व विधायक केशव महतो कमलेश, जिला महामंत्री निशिकांत गोंझू, झामुमो जिलाउपाध्यक्ष रामानंद बेदिया, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष हलधर महतो, वरीय नेता दिनेश साहू, प्रेम कुमार शाही, सोनाहातू प्रमुख विक्टोरिया देवी, मुखिया विकास सिंह मुंडा, कलेश्वर सिंह मुंडा, मेरी तिर्की, निशा भगत सहित महिला पुरूष मौजूद थे.

पुलिस ने अवैध रूप से अंग्रेजी शराब बेच रहे अभियुक्त को पकड़ कर भेजा जेल

बिभा संवाददाता

खलारी। खलारी पुलिस उपाधीक्षक राम नारायण चौधरी के निर्दशानुसार खलारी इंस्पेक्टर विजय कुमार सिंह के गठित टीम के द्वारा थाना क्षेत्र में अवैध रूप से शराब बेच रहे जगहों पर छापामारी किया गया ।इस दौरान खलारी पुलिस ने मोहननगर से अवैध रूप से अंग्रेजी शराब बेच रहे व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेजा ।जानकरी के अनुसार पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मोहन नगर में छापामारी कर जय प्रकाश नोनिया उम्र 44 वर्ष पिता- हिरा नोनिया के राशन दुकान एवं संलिप्त अभियुक्त सुरेश स्वाईन के घर से अवैध अग्रेजी शराब करीब 240 पीस बरामद किया गया है ।अवैध रूप से शराब का व्यापार में सम्मिलित जय प्रकाश नोनिया को पुलिस ने गिरफ्तार किया ।वही शेष बचे अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु छापामारी की जा रही है ।पुलिस ने अभियुक्त के पास से किंग फिसर बीयर 60 पीस,गौड फादर बीयर 96 पीस, सिग्नेचर, बलैंडर, मैक डॉयल, बकारडी, मेजीक मोमेंट, ओल्ड मोक इत्यादि नाम के अवैध अग्रेजी शराब की बोतल करीब 84 पीस जप्त किया गया ।खलारी पुलिस के द्वारा छापामारी अभियान में पुअनी सोनी प्रताप , सअनी राजकिशोर कुमार सिंह सशस्त्र बल शामिल थे।

यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर धनबाद, गोमो, कोडरमा के रास्ते हावड़ा- इंदौर के मध्य चलायी जाएगी स्पेशल ट्रेन

बिभा संवाददाता

धनबाद : यात्रियों की अत्याधिक भीड़ के मद्देनजर उनके सुविधा एवं सुगम आवागमन हेतु हावड़ा- इंदौर के मध्य एक फेरा विशेष ट्रेन चलायी जाएगी

गाड़ी संख्या 09335/ 09336 इंदौर- हावड़ा- इंदौर स्पेशल (उज्जैन- बीना- मैहर- माणिकपुर- प्रयागराज छिवकी- डीडीयू- गया- कोडरमा- पारसनाथ- गोमो- धनबाद- आसनसोल के रास्ते):-

गाड़ी संख्या 09335 इंदौर-हावड़ा स्पेशल दिनांक 03.05.24(शुक्रवार) को इंदौर से 22.30 बजे खुलकर शनिवार को 23.33 बजे कोडरमा पहुंचेगी और यहाँ से 23.35 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, रविवार को 00.20 बजे पारसनाथ पहुंचेगी और यहाँ से 00.25 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 00.40 बजे गोमो पहुंचेगी और यहाँ से 00.45 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 01.20 बजे धनबाद पहुंचेगी और यहाँ से 01.30 बजे आगे के प्रस्थान करेगी एवं रविवार को 06.00 बजे हावड़ा पहुंचेगी ।

गाड़ी संख्या 09336 हावड़ा-इंदौर स्पेशल दिनांक 05.05.24(रविवार) को हावड़ा से 17.40 बजे खुलकर 22.10 बजे धनबाद पहुंचेगी और यहाँ से 22.20 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 22.45 बजे गोमो पहुंचेगी और यहाँ से 22.50 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 23.03 बजे पारसनाथ पहुंचेगी और यहाँ से 23.05 बजे आगे के प्रस्थान करेगी, 23.50 बजे कोडरमा पहुंचेगी और यहाँ से 23.52 बजे आगे के प्रस्थान करेगी एवं मंगलवार को 00.50 बजे इंदौर पहुंचेगी ।

03 जोड़ी ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों के शेष फेरे कर दिए गए रद्द

धनबाद : ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों के शेष फेरे रद्द कर दिए गए हैं–

08183 टाटा– पटना स्पेशल शनिवार 04.05.24 से 29.06.24
08184 पटना– टाटा स्पेशल शनिवार 04.05.24 से 29.06.24
08013भागलपुर– राँची स्पेशल शुक्रवार 03.05.24 से 28.06.24
08014 राँची– भागलपुर स्पेशल गुरुवार 02.05.24 से 27.06.24
08623 इस्लामपुर– राँची स्पेशल शनिवार 04.05.24 से 29.06.24
08624 राँची– इस्लामपुर स्पेशल शनिवार 04.05.24 से 29.06.24

सहरसा एवं पटना से नई दिल्ली के मध्य चलेगी स्पेशल ट्रेन धनबाद के रास्ते हावड़ा-इंदौर स्पेशल का भी होगा परिचालन

हाजीपुर: यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी कड़ी में सहरसा एवं पटना से -नई दिल्ली एवं धनबाद के रास्ते हावड़ा-इंदौर स्पेशल ट्रेन संचालित की जाएगीः

गाड़ी सं. 04037 सहरसा-नई दिल्ली अनारक्षित स्पेशल दिनांक 04.05.2024 को सहरसा से 07.00 बजे प्रस्थान कर खगड़िया, बेगूसराय, बरौनी, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सोनपुर के रास्ते अगले दिन 07.00 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी ।

गाड़ी सं. 09336 हावड़ा-इंदौर सुपर फास्ट स्पेशल ट्रेन दिनांक 05.05.2024 को हावड़ा से 17.40 बजे प्रस्थान कर धनबाद, नेसुबो गोमो, पारसनाथ, कोडरमा, गया, डेहरी ऑन सोन, सासाराम, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के रास्ते दूसरे दिन 00.50 बजे इंदौर पहुंचेगी ।

गाड़ी सं. 04035 पटना-नई दिल्ली अनारक्षित स्पेशल दिनांक 03.05.2024 को पटना से 21.30 बजे प्रस्थान कर आरा, बक्सर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के रास्ते अगले दिन 15.00 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी ।

राहुल गांधी का भाषण असत्य निराधार व भ्रामक है : रंगनाथ महतो

बिहान भारत संवाददाता

रांची। विश्व हिन्दू परिषद झारखंड प्रान्त सहमंत्री रंगनाथ महतो ने प्रेस बयान जारी कर कहा है कि टाइम्स न्यूज नेटवर्क के नाम से गांधीनगर से एक समाचार टाइम्स आफ इण्डिया 30 अप्रैल 2024 दिल्ली, संस्करण में प्रकाशित हुआ है। समाचार में कांग्रेस के नेता श्री राहुल गांधी के गांधीनगर के भाषण का उल्लेख किया गया है। राहुल गांधी जी ने अपने भाषण में कहा है कि ह्लश्री राम जन्मभूमि मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा आयोजन में भारत की माननीय राष्ट्रपति महोदया को आदिवासी होने के कारण आमंत्रित नहीं किया गयाह्व। राहुल गाँधी जी के भाषण के ये वाक्य पूर्णतः असत्य, निराधार व भ्रामक है। प्रान्त सहमंत्री रंगनाथ महतो ने कहा है कि श्री गांधी जी को स्मरण कराना चाहूँगा कि महान भारत की राष्ट्रपति महोदया आदरणीया द्रौपदी मूर्मू जी एवं पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी दोनों को श्री रामजन्मभूमि मन्दिर में रामलला के नूतन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर आमन्त्रित किया गया था। श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग समाज से जुड़े हुए संत महापुरुष, गृहस्थजन और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में यश प्राप्त करने वाले, भारत का गौरव बढ़ाने वाले सज्जनों को आमंत्रित किया गया था, मन्दिर में सेवारत सभी श्रमिक कार्यक्रम में सम्मिलित रहे, अल्पसंख्यक समाज के कई बड़े राष्ट्रवादी उलेमा भी उपस्थित रहे, इतना ही नहीं प्राण प्रतिष्ठा पूजन विधि के समय मंदिर के गूढ़ मण्डप में अनुसूचित जाति, जनजाति व अति पिछड़ा वर्ग के गृहस्थों को पूजन करने का अवसर मिला। तीन मास पूर्व सम्पन्न हुए कार्यक्रम के बारे में तथ्यों की खोज बीन किए बिना ही, असत्य, निराधार व भ्रामक भाषण से समाज में भेद भाव व वैमनस्य पैदा कर सकता है। भाषण के ये अंश हमारे लिए गम्भीर आपत्तिजनक हैं तथा मैं इसकी घोर निंदा करता हूं।

संक्षिप्त खबरें

इंटर साइंस की स्टेट टॉपर स्नेहा को यशस्विनी ने किया सम्मानित

रांची। रांची लोकसभा क्षेत्र से इंडिया गठबंधन की प्रत्याशी कांग्रेस की यशस्विनी सहाय ने गुरुवार को झारखंड एकेडमिक काउंसिल द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में साइंस में स्टेट टॉपर होने पर उसुर्लाइन इंटर कॉलेज की छात्रा स्नेहा को उनके आवास जाकर उन्हें सम्मानित किया। इस मौके पर सुश्री सहाय अपने पिता पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय के साथ स्नेहा के आवास रांची शहर के हरमू क्षेत्र वार्ड 34 के विद्यानगर स्थित राजकुमार साह के निवास पहुंची तथा उनकी पुत्री स्नेहा को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। मौके पर संतोष कुमार, सुनील रजक भी उपस्थित थे।

सत्संग विश्व हिंदू परिषद के 19 आयामों में एक महत्वपूर्ण आयाम : बसंत रथ

रांची : विश्व हिंदू परिषद, झारखंड प्रांत सत्संग विभाग की बैठक विश्व हिंदू परिषद प्रांत कार्यालय, किशोरगंज रांची स्थित शक्ति आश्रम में हुई। बैठक में झारखंड के विभिन्न जिलों के सत्संग प्रमुख उपस्थित हुए। इस अवसर पर कार्यकताओं को संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सत्संग प्रमुख बसंत रथ ने कहा सत्संग विश्व हिंदू परिषद के 19 आयामों में एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसके माध्यम से हिंदू समाज के बीच संस्कार एवं देशभक्ति उत्पन्न करने का कार्य किया जाता है। यह धार्मिक हिंदू को सामाजिक हिंदू बनाने का कार्य है जिसमें व्यक्ति केवल अपना नहीं धर्म के साथ-साथ देश का चिंतन करता है। जहां सत्संग चलता है वहां सदगुण का विकास होता है, समरसता बढ़ती है। बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का संदेश सत्संग से ही प्रसारित होता है। प्रांत सहमंत्री श्री रंगनाथ महतो ने बताया वर्तमान में परिषद के द्वारा 1231 सत्संग केंद्र चल रहे हैं जिसे षष्ठीपूर्ति वर्ष में 2100 करने का लक्ष्य है। बैठक में विश्व हिंदू परिषद के प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र, सहमंत्री रंगनाथ महतो, मार्गदर्शक मंडल के प्रांत संयोजक स्वामी कृष्ण चैतन्य ब्रह्मचारी, सुभाष चटर्जी, संतोष सिंह, गुलाब सिंह, अमूल्य मिश्रा, कार्तिक विश्वकर्मा, योगेश खंडेलवाल, सोनाराम महतो, विकास कुमार, उमेश मांझी, देवीलाल मुर्मू, अतुल दत्ता, सरोज टुडू, प्रकाश दास गोस्वामी उपस्थित थे।

पांच दिवसीय फिजियोथेरेपी कैम्प संपन्न

रांची : मारवाड़ी ब्राह्मण सभा रांची के सौजन्य से चलाए जा रहे पांच दिवसीय फिजियोथेरेपी कैम्प दिनांक 27 से 01 मई का समापन हो गया। इन पांच दिनों में इस कैम्प में लगभग 500 विभिन्न वर्ग और समाज के लोगो ने अपना इलाज कराया। कैम्प में उदयपुर से आए डॉ. एम.ए. चैनम एवं कैलाश कुमार ने बताया कि यह थेरेपी फ्रोजन शोल्डर, कमर दर्द, घुटने का दर्द, एवम विभिन्न प्रकार के दर्द में विशेष रूप से प्रभावी है। इस अवसर पर मारवाड़ी ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष श्री रमेश चंद्र शर्मा, एवं मंत्री कृष्णा लाल शर्मा, ने बताया कि मारवाड़ी ब्राह्मण सभा भविष्य में फिर से इस तरह का कैम्प लगायेगी जिससे समाज के सभी लोगों को उचित उपचार मिल सके। इस कार्यक्रम में उपाध्यक्ष अरुण जोशी एवं अशोक कुमार पुरोहित, उपमंत्री प्रदीप शर्मा एवं महेंद्र कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष श्याम सुन्दर गोवला, आंतरिक अंकेक्षक अमित सारस्वत (काली), कार्यक्रम संयोजक नथमल शर्मा एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने अपना बहुमूल्य योगदान दे कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

स्वहित के लिए नहीं बल्कि समाज के उत्थान के लिए कार्य करें : राज्यपाल

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से गुरुवार को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के प्रशिक्षु पदाधिकारियों ने राज भवन में भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल ने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि वे स्वहित के लिए नहीं बल्कि सदा समाज के उत्थान के लिए कार्य करें। समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के निदान करने के लिए सक्रिय रहें। लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, पोषण आदि बुनियादी सुविधाओं की सुलभता से उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहें। राज्यपाल ने कहा कि जीवन में नियमों का पालन करते हुए सही मार्ग को अपनाएं और राज्य के विकास में योगदान दें।

राज्यपाल से कुलपति ने की मुलाकात

रांची : राज्यपाल-सह-कुलाधिपति सी.पी. राधाकृष्णन से आज डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. तपन कुमार शांडिल्य ने राज भवन में भेंट की तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों से अवगत कराया। उक्त अवसर पर राज्यपाल को डॉ. शांडिल्य ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में आमंत्रित किया।

रांची संसदीय क्षेत्र से चार उम्मीदवारों ने दाखिल किया नामांकन

रांची। रांची संसदीय क्षेत्र के लिए अधिसूचना जारी होने के चौथे दिन गुरुवार को अब तक कुल छह उम्मीदवारों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया है। गुरुवार को चार उम्मीदवारों ने नामांकन किया। समाहरणालय ब्लॉक-ए स्थित निवार्ची पदाधिकारी के कार्यालय में अभ्यर्थियों की ओर से नामांकन पत्र दाखिल किया गया। नामांकन करनेवाले उम्मीदवारों में भाजपा से संजय सेठ, निर्दलीय से अरशद अयूब, पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया (डेमोक्रेटिक) से पंकज कुमार रवि, लोक अधिकार पार्टी (झा) से हरिनाथ साहू शामिल है। इससे पहले 29 अप्रैल को एसयूसीआई के उम्मीदवार मिंटू पासवान और 30 अप्रैल को अम्बेडकराईट पार्टी ऑफ इंडिया के उम्मीदवार रामहरि गोप ने अपना नामांकन दाखिल किया था।

इंडी गठबंधन आदिवासी का हक भी एक विशेष वर्ग को देने की साजिश कर रहा है: धामी

बिभा संवाददाता

रांची : उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी 2 मई को रांची से एनडीए प्रत्याशी संजय सेठ के नामांकन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने मोरहाबादी मैदान स्थित में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि देश की आजादी के बाद जिन्होंने शासन चलाने का काम किया उन्होंने कभी आदिवासी समाज की शोध नहीं ली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के हर वंचित वर्ग के विकास की चिंता की। विकास का बीड़ा उठाया। उत्थान के लिए काम किया एक ही समय में झारखंड और उत्तराखंड का गठन हुआ। यह हमारे लिए समानता की बात है। दोनों राज्यों की परिस्थितियों भी एक समान है। अटल बिहारी वाजपेई ने इन दोनों राज्यों का निर्माण किया था आदिवासी समाज में पैदा हुई द्रोपति मुर्मू आज देश की पहले महिला आदिवासी राष्ट्रपति है। पूर्व में संभव नहीं हो पता था। पहले एक खास वर्ग के लोगों का मनोनयन होता था। समाज के आदिवासी और वंचित लोगों को आज अवसर मिल रहा है। यह भारतीय जनता पार्टी एनडीए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में ही संभव है।

श्री धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलीहातु जाकर उनको नमन कर इस माटी का तिलक करके देश के विकसित भारत का संकल्प लिया था। आदिवासी और वंचित समाज के लोगों को केंद्र में रखकर योजनाएं बनाई जा रही है। पहले योजनाएं कुछ लोगों के लिए ही बनाई जाती थी। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज दुनिया भर में भारत का डंका बज रहा है। मान सम्मान पूरी दुनिया में बढ़ रहा है। भारत अब मजबूत हाथों में है, मजबूर हाथों में नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए। कश्मीर में धारा 370 हटाया गया। सीएए लागू किया गया। तीन तलाक को खत्म किया गया। भगवान श्री राम के मंदिर का निर्माण भी भाजपा किधर इच्छा शक्ति कहीं परिणाम है। देवभूमि की अपनी एक प्रतिष्ठा है। देवभूमि का मूल स्वरूप किसी भी कीमत पर खराब नहीं होने देंगे। उसे बर्बाद नहीं होने देंगे। देवभूमि के अंदर समान नागरिक संहिता का कानून पारित हो गया है। वहां लैंड जिहाद के बड़े-बड़े मामले हुआ करते थे। लाखों एकड़ जमीन मुक्त कराई गयी है।

इस अवसर पर रांची विधायक सीपी सिंह, समरी लाल, बालमुकुंद सहाय, पूर्व विधायक मलखान सिंह, आरती कुजूर, आरती सिंह, सीमा शर्मा, महेश पोद्दार, जितेंद्र सिंह, संजय महतो सहित अन्य लोग मौजूद थे।

इस बार सभी 14 लोकसभा सीटों पर एनडीए जीत का परचम लहराएगा : अमर बाउरी

नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने कहा कि झारखंड, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ का निर्माण एक वक्त पर ही हुआ और इसका पूरा श्रेय श्रधेय अटल बिहारी बाजपेयी जी को जाता है जिन्होंने क्षेत्र, संस्कृत, भाषा आदि के आधार पर वर्षों से लंबित आम लोगों की अलग राज्य की मांग के सपने को पूर्ण किया। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा एक ऐसी पार्टी थी जिसने झारखंड को ही बेचने का काम किया था। वहीं कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति करने वाली पार्टी है। उन्होंने कहा कि जब से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गारंटी दी है की 2024 में जब भाजपा की सरकार बनेगी तो पूरे देश में यूसीसी कानून लागू कर दिया जाएगा, तब से विरोधी पार्टियों में खलबली मच गई है। वही उत्तराखंड एकमात्र ऐसा राज्य है जो वर्तमान में यूसीसी कानून को अपने राज्य में लागू कर चुका है।

वर्तमान सरकार झारखंड को रसातल में भेजने का काम कर रही है : आदित्य साहू

प्रदेश महामंत्री सह राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने कहा कि कांग्रेस ने 62 साल तक देश को लूटने का काम किया था। चुनाव में गांव के गरीब और किसान की बात करती है। कांग्रेस कभी गांव, गरीब, किसान, मजदूर की चिंता करने का काम नहीं की। हमेशा धोखा देने का काम किया। वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीबों को बहुत नजदीक से देखा है। गरीबी में ही पले और बढ़े हैं। गरीबी को जिया है। पिछले 10 वर्षों में देश के गरीबों, किसानों, महिलाओं की चिंता करने का काम किया। उनके विकास के लिए काम किया है। उनको सुविधा देने का काम किया है। झारखंड की वर्तमान सरकार ने राज्य को लूटने का काम किया है। राज्य को रसातल में भेजने का काम कर रही है।

देशभर में एनडीए गठबंधन की लहर चल रही है : खीरु महतो

राज्यसभा सांसद एवं जेडीयू के प्रदेश अध्यक्ष खीरु महतो ने कहा कि झारखंड और उत्तराखंड का निर्माण एक ही साल हुआ था। यहां से संकल्प लेकर जाएं कि संजय सेठ को जिताना है और 400 के नारे को चरितार्थ करना है। देशभर में एनडीए गठबंधन की लहर चल रही है।

जिसने भगवान राम के आमंत्रण को ठुकराया, उसे देश की जनता ठुकरा देगी : संजय सेठ

रांची से एनडीए प्रत्याशी संजय सेठ कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश की तकदीर और तस्वीर बदल दी। मोदी की गारंटी काम करती है। प्रधानमंत्री मोदी ने घर दिया। गैस कनेक्शन दिया। मुक्त राशन दे रहे हैं। आयुष्मान कार्ड दिया। अब लखपति दीदी बना रहे हैं। झारखंड की जनता ने गारंटी दी है कि झारखंड से 14 में से 14 सीट की माला बनाकर प्रधानमंत्री मोदी के गले में पहनाने वाली है। जिसने भगवान राम के आमंत्रण को ठुकराया, उसे देश की जनता ठुकरा देगी। पूरे देश में इंडी गठबंधन दलों का जमानत जब्त कर देगी।

झामुमो को आदिवासी मुख्यमंत्री चाहिए, पर वह घर का ही होना चाहिए : सुदेश महतो

आजसू पार्टी के प्रमुख सुदेश महतो ने कहा कि इस प्रदेश के लिए पीएम मोदी ने जो लक्ष्य दिया है, उसे पूरा करने के लिए एनडीए का हर कार्यकर्ता लगा हुआ है। पिछले बार से बेहतर परिणाम इस बार रांची देगा, इसकी तैयारी हम सब मिलकर कर रहे हैं। यह चुनाव देश के प्रधानमंत्री चयन का है। एक तरफ पिछले 10 साल से देश के विकास में लगा एक प्रधानमंत्री है, दूसरी तरफ एक ऐसा गठबंधन है, जिसने अपना नाम बदल लिया, लेकिन मोदी जी के सामने कौन नेता होगा यह आज तक तय नहीं कर पाया है। भारत के मतदाताओं को बहलाने फुसलाने का काम कर रहा है। बाराती तैयार है, दूल्हे का पता नहीं है। बिना दूल्हे का बारात लगाने की तैयारी कर रहे हैं। केवल तुष्टीकरण के बल पर राजनीति करने को देश की जनता स्वीकार नहीं करेगी। इंडी गठबंधन के दलों में जन्म लेने वाला या उनका रिश्तेदार मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री का ही दावेदार होता है। आज से लोगों ने तीसरे मुख्यमंत्री के आगमन की तैयारी शुरू कर दी है। झामुमो को आदिवासी मुख्यमंत्री चाहिए, पर वह घर का ही होना चाहिए। इतनी बड़ी आबादी में कोई दूसरा आदिवासी मुख्यमंत्री नहीं चाहिए। चंपाई सोरेन की विदाई की तैयारी शुरू हो गई है। कांग्रेस सिर्फ तुष्टिकरण की राजनीति करती है।

लोकसभा चुनाव में मतदान के लिए जागरुकता अभियान का बनें हिस्सा: के. रवि कुमार

सोशल मीडिया पर 7 मई को चलेगा मैं भी इलेक्शन एंबेसडर कैम्पेन

बिभा संवाददाता

रांची। लोकतंत्र के महापर्व के रूप में चल रहे लोकसभा चुनाव के लिए लोगों को मतदान करने के लिए प्रशासन विभिन्न स्तर पर जागरुकता अभियान भी चल रहा है। इसी क्रम में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से 7 मई को अपराह्न 6 बजे से 8 बजे तक मैं भी इलेक्शन एंबेसडर को सोशल मीडिया कैम्पेन चलाया जाएगा। इसमें राज्य के सभी स्कूल व कॉलेज के बच्चे, इंफ्लुएंसर, सेलेब्रिटी समेत सभी लोग अवश्य भाग लेंगे।

उक्त विचार गुरुवार को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने राज्य के सभी सीबीएसई एवं आईसीएसई स्कूल के प्रधानाध्यापकों के साथ गूगल मीट के माध्यम से निर्वाचन सदन में आयोजित बैठक में कहीं। उन्होंने कहा कि निर्वाचन के महापर्व को उत्साहपूर्ण ढंग से मनाने के लिए अपने कार्यों के डिजिटल कंटेंट को सोशल मीडिया पर अवश्य अपलोड करें। उन्होंने कहा कि स्कूल एवं कॉलेजों के बच्चों ने मतदाताओं के बीच मतदान की अहमियत को बताने के लिए स्वीप कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया। यह हमारे फ्यूचर और फर्स्ट टाइम वोटर के रूप में निर्वाचन में अपनी महती भूमिका निभा रहें हैं। बच्चों ने स्कूल एवं कॉलेजों में स्वीप सम्बंधी कई गतिविधियां कराई जा रही हैं। इन बच्चों द्वारा क्विज कंपीटिशन, पोस्टर मेकिंग, स्लोगन, पत्र लेखन आदि कई रोचक एवं मनोरंजक गतिविधियों द्वारा अपने अभिभावकों, आस-पास के मतदाताओं के बीच जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया है। उन्होंने कहा कि 7 मई को होने वाले सोशल मीडिया कैम्पेन में स्कूल प्रबंधन इन सभी गतिविधियों के डिजिटल कंटेंट को अपने सोशल मीडिया हैंडल पर #मैं भी इलेक्शन एंबेसडर हैशटैग के साथ अपलोड करें। साथ ही मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी झारखण्ड एवं भारत निर्वाचन आयोग के सोशल मीडिया अकाउंट को अवश्य टैग करें।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा कि मतदाताओं को निर्वाचन के महत्व को बताते हुए उन्हें मतदान में अपनी भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करना निर्वाचन आयोग की प्राथमिकता है। इसके साथ साथ मतदाताओं को नैतिक मतदान के लिए भी जागरूक करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। स्कूल के बच्चों को 'मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर 'जैसे कार्यक्रमों से जोड़कर लोकतंत्र के एक जागरूक मतदाता के रूप में हम उन्हें तैयार कर सकेंगें। साथ ही भविष्य में होने वाले मतदान में उनकी भागीदारी भी निश्चित कर सकेंगे।

ऑनलाइन माध्यम से आयोजित बैठक में निर्वाचन सदन से अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ नेहा अरोड़ा, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुबोध कुमार, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देव दास दत्ता, उप निर्वाचन पदाधिकारी संजय कुमार सहित राज्य के सभी सीबीएसई एवं आईसीएसई स्कूलों के प्रधानाध्यापक उपस्थित थे।

सभी तरह के पेड न्यूज पर निगाह चौकस रखें : उर्वशी पाण्डेय

बिभा संवाददाता

रांची : समाहरणालय ब्लॉक- ए स्थित कमरा संख्या-119 में जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी सह नोडल पदाधिकारी मिडिया कोषांग रांची, श्रीमती उर्वशी पाण्डेय द्वारा मिडिया कोषांग के पदाधिकारी/कर्मियों के साथ समीक्षा बैठक करते हुए सभी सम्बंधित पदाधिकारी/ कर्मियों को निर्देश देते हुए कहा की मीडिया कोषांग का कार्य बेहद महत्पूर्ण हैं। सभी चीजों पर सतत निगरानी बहुत जरुरी है।

जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी सह नोडल पदाधिकारी मिडिया कोषांग रांची, श्रीमती उर्वशी पाण्डेय द्वारा मीडिया कोषांग में कार्यरत सोशल मीडिया निगरानी कर्मियों को सोशल मीडिया में पेड न्यूज, फेक न्यूज से सम्बंधित बिंदुओं से अवगत कराया।

पेड न्यूज के अलावे विभिन्न फेक न्यूज यथा ई वी एम, बूथ मैनेजमेंट, पानी, बिजली, शौचालय, रैंप मतदाता सूची, विधि व्यवस्था, इलेक्शन प्लान आदि से संबंधित फेक खबरों का पहचान करना तथा आवश्यक कार्रवाई करते हुए सत्यापन कर खंडन भी उसी साइट सहित सभी मीडिया में करना है। इसकी जानकारी देते हुए त्वरित संज्ञान में लाने का निर्देश दिया।

झारखण्ड जल्द ही कालाजार मुक्त राज्य बनेगा: अजय कुमार सिंह

बिभा संवाददाता

राँची : बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, और पश्चिम बंगाल में कालाजार उन्मूलन कार्यक्रम की प्रगति को समझने के लिए राँची में श्री अजय कुमार सिंह, प्रधान सचिव स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग झारखंड की अध्यक्षता में आज से तीन दिवसीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीवीबीडीसी) स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग भारत सरकार की निदेशक डॉ. तनु जैन, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखण्ड के अभियान निदेशक आलोक त्रिवेदी, झारखण्ड के निदेशक प्रमुख स्वास्थ्य, डॉ. सी.के. साही, झारखण्ड के वैक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. बिरेन्द्र कुमार सिंह एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

राज्य के प्रधान सचिव स्वास्थ्य ने कहा कि कालाजार जो लगभग 20 से 30 साल पहले एक बड़ी समस्या थी, सरकार के दिशा-निर्देश और प्रतिबद्धता के अनुरूप राज्य में कालाजार रोग के उन्मूलन के लिए राज्य स्तर से ग्राम स्तर तक किये गए सार्थक प्रयासों का परिणाम है कि राज्य में वर्ष 2023 में सभी जिलों ने कालाजार उन्मूलन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है और हमें इस स्थिति को बनाए रखना है यानि सस्टेन करना है, जो अंत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए रणनीति बनाया जाना महत्वपूर्ण है। कालाजार से सम्बंधित जानकारी और इससे बचने के उपायों को आबादी के अंतिम पायदान तक ले जाना है, हम अक (आर्टिफिशल इंटेलिजेंस) के माध्यम से कालाजार की स्थिति को बेहतर तरीके से जान सकते हैं। इस बैठक में जो भी सुझाव आयेंगे, उन्हें कालाजार उन्मूलन की रणनीति में शामिल किया जायेगा। एक बात और, कालाजार प्रभावित क्षेत्रो के कच्चे मकानों में पाये जाने वाली दरारों को प्लास्टर के माध्यम से भरने का प्रयास किया जायेगा जिससे बालू मक्खी के प्रजनन को रोका का सके। उन्होंने कहा कि अगले 3 साल बहुत महत्वपूर्ण हैं- डोजियर बनाया जाएगा और इस पर चर्चा की जाएगी।

निदेशक एनसीवीबीडीसी, भारत सरकार, डॉ. तनु जैन ने कहा कि, ह्लसभी राज्यों ने कालाजार उन्मूलन के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में जो प्रगति की है वह प्रशंसनीय है मगर इस स्थिति को ऐसे ही बनाए रखना आवश्यक है जिससे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा देश को कालाजार मुक्त घोषित किया जा सके। इसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि कालाजार प्रभावित क्षेत्रों में बालू मक्खियों के प्रजनन को नियंत्रित करें और सभी प्रखंडों में प्रति 10000 की आबादी पर 1 से कम कालाजार के केसेस की स्थिति को बनाए रखे।

राज्य के अभियान निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, श्री आलोक त्रिवेदी ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा कालाजार उन्मूलन के लक्ष्य को पूरी तरह प्राप्त करने के लिए सुनियोजित कार्ययोजना बनाकर कालाजार से प्रभावित गांवों के हर घर में कीटनाशी छिड़काव (आईआरएस) सुनिश्चित किया जा रहा है जिससे बालू मक्खी का खात्मा कर इस रोग के प्रसार को रोका जा सके।

निदेशक प्रमुख स्वास्थ्य सेवाएँ झारखण्ड, डॉ सी. के. साही ने कहा कि कालाजार उन्मूलन मोड में है। किसी भी बीमारी के लिए बीमारी के कारण और उसके प्रसार को समझना आवश्यक है इसलिए हमें कालाजार के संचरण को समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जैसे हमने चेचक, पोलियो को खत्म किया है, वैसे ही हम कालाजार को भी खत्म करेंगे। इसके लिये राज्य और जिला स्तर से हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं।

दुमका जिले में वर्ष 2023 में कालाजार के नियंत्रण के क्षेत्र में सफलता एवं उपलब्धियों से संबंधित सफल कहानियों की पुस्तिका का इस अवसर पर प्रधान सचिव द्वारा विमोचन भी किया गया।

उपरोक्त समीक्षा बैठक के पहले दिन कालाजार प्रभावित राज्यों द्वारा कालाजार उन्मूलन की यथास्थिति बनाए रखने के लिए किये जा रहे प्रयासों को भी प्रेजेंटेशन के माध्यम से बताया गया, साथ ही सहयोगी संस्थाओं द्वारा भी सम्बंधित राज्यों को कालाजार उन्मूलन में दिए जा रहे सहयोग से सम्बंधित गतिविधियों के बारे में चर्चा की गयी।

तीन दिवसीय इस कार्यशाला में आगामी दो दिनों में कालाजार उन्मूलन हेतु आवश्यक डॉक्यूमेंटेशन एवं रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी।

कार्यक्रम में डॉ संबित प्रधान, एचओडी कालाजार, एनसीवीबीडीसी, भारत सरकार, द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यशाला में डॉ कृष्ण पाण्डेय, निदेशक आरएमआरआई, डॉ बदरी थापा, टीम लीड कम्यूनकेशन डिजीज, विश्व स्वास्थ्य संगठन, प्रो. श्याम सुंदर, इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), राज्यों के क्षेत्रीय निदेशक, एनसीवीबीडीसी, भारत सरकार और झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं बिहार राज्य के स्वास्थ्य पदाधिकारी और सहयोगी संस्थाओं यथा- आईसीएमआर, विश्व स्वास्थ्य संगठन, ग्लोबल हेल्थ स्ट्रेटजीज (जीएचएस), प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल (पीसीआई),पाथ, पीरामल स्वास्थ्य एवं डब्लू.जे.सी.एफ. के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग कर अपनी प्रस्तुतीकरण दी ।

ट्रेड यूनियन संयुक्त मोर्चा के घटक दलों ने संकल्प सभा का किया आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो : अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर आज 1 मई 2024 को ट्रेड यूनियन संयुक्त मोर्चा के घटक युनियनों बोकारो इस्पात कामगार यूनियन (एटक), इस्पात मजदूर मोर्चा (सीटू), सेन्टर आप स्टील वर्कर्स (एक्टू), बोकारो इस्पात सेंट्रल वर्कर्स यूनियन (एआईयुटीयुसी) द्वारा सेक्टर 4 गांधी चौक में संकल्प सभा का आयोजन किया गया। इसके पूर्व नया मोड़ बिरसा चौक से विशाल मजदूर रैली निकाली गई ।मई दिवस अमर रहे, शिकागो के शहीद मजदूरों को लाल सलाम, मजदूर विरोधी चारों लेबर कोड वापस लो, कॉरपोरेट घरानों की मजदू-किसान विरोधी सरकार मुदार्बाद आदि नारे लगाते हुए

रैली एडियम बिल्डिंग होते हुए सेक्टर 4 गांधी चौक पहूंचा जहां पहले से उपस्थित मजदूर साथियों ने स्वागत किया। संकल्प सभा को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि कारपोरेट प्रस्त केन्द्र सरकार मजदूरों के कानूनी हकों को समाप्त कर मजदूरों को पुनः बंधुआ मजदूर बनाने में लगी हुई है। संघर्षों के बल पर प्राप्त श्रम कानूनों को समाप्त कर लेबर कोड लागू करने जा रही है ।काम के घंटे को बढ़ाकर 12 घंटे कर रही है। देश के करोड़ों मजदूर जबरदस्त रूप से इसका विरोध कर रहे हैं। इसी का लाभ उठाकर सेल बोकारो स्टील प्रबन्धन मनमानी तरीके से मजदूरों ठेका मजदूरों का शोषण कर रही है ।वेज रिवीजन को अधर में लटका कर रखे हुए है ।1 जनवरी 2017 से एरियर भुगतान नहीं करना चाहती है ।सेल की न्यूनतम मजदूरी और ग्रैच्युटी सहित अन्य भत्ता भी ठेका मजदूरों को प्रबंधन देना नहीं चाहती है। मजदूर निर्णायक संघर्ष में जाने के लिए तैयार हैं। ट्रेड यूनियन संयुक्त मोर्चा ने बोकारो के मजदूरों से यह आह्वान किया कि किसान मजदूर विरोधी केन्द्र सरकार को सत्ता से बाहर करना होगा, तभी हमारे हक हुकुक की रक्षा होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता सत्येन्द्र कुमार ने किया। सभा को एटक के रामाश्रय प्रसाद,रामागार सिंह, सीटू के बी डी प्रसाद,आर के गोराई,एक्टू के जे एन सिंह,एस एन प्रसाद, एआईयूटीयूसी के मोहन चौधरी,आर एस शर्मा ने संबोधित किया।

बाल विवाह पर कार्रवाई , रास्ते से बैरंग लौटी बारात

सीडब्ल्यूसी की पहल : नाबालिग को बधु होने से बचाया गया।

बोकारो: बाल विवाह मुक्त भारत अभियान पर कार्यरत सामाजिक संस्था सहयोगिनी के शिकायत पर बरमसिया ओपी , चंदनकियारी थाना क्षेत्र से एक नाबालिग को बाल विवाह होने से बचाया गया। सहयोगिनी संस्था ने बाल कल्याण समिति को लिखित सूचना दिया कि चास के झालबरदा बस्ती के एक बच्ची का बाल विवाह एक मई को होने वाला है , उस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए बाल कल्याण समिति की न्यायिक बैंच ने बाल विवाह निषेध पदाधिकारी सह बीडीओ चंदनकियारी, को पत्र लिखकर अविलंब बाल विवाह रोकने को कहा। जिसकी प्रति उपायुक्त बोकारो, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी एवं बाल संरक्षण पदाधिकारी को दिया गया। बीडीओ की टीम, पुलिस एवं चाइल्ड लाइन की संयुक्त टीम द्वारा उक्त शादी पर रोक लगाया गया।

संक्षिप्त खबरें

हत्या कर फरार दोनों सगे भाई गिरफ्तार

बोकारो : बोकारो मे पैसे के बीच बंटवारे को लेकर हुई मारपीट के दौरान हुई हत्या मे हरला पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है. दोनों को पुलिस ने मेडिकल जांच करवाने के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया. मालूम हो कि हरला थाना क्षेत्र के सेक्टर 9 सी स्ट्रीट 26 के पास 34 वर्षीय ज्योति लाल चौधरी की पत्थर से कुचलकर निर्मम हत्या कर दी गई थी. मृतक सेक्टर 9 ए स्ट्रीट तीन आवास संख्या 641 निवासी श्याम लाल चौधरी का पुत्र था. हरला इंस्पेक्टर अनिल कच्छप के मुताबिक घटना जमीन खरीद बिक्री में रुपयों के लेनदेन से जुड़ा हुआ बताया गया है. हरला थाना प्रभारी अनिल कश्यप ने बताया की 12 लाख को तीन हिस्से में बांटना था जिसमें मृतक अपना हिस्सा मांगने आया था उसी क्रम में घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी फरार हो गए थे. मृतक रविवार की रात 9 बजे सेक्टर 9 स्ट्रीट 26 स्थित घटना में आरोपी नागेंद्र कुमार के आवास संख्या 1015 पर रुपए मांगने गया था. इसी मुद्दे पर विवाद बढ़ गई थी, जिसमे आरोपियों ने हत्या कर दी थी. इस मामले में 5 लोग आरोपित किए गए थे, जिनमें से दो आरोपी गिरफ्तार किए गए है और बचे 3 अपराधी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

मजदूरों का योगदान समाज में महत्वपूर्ण और उन्हें सम्मान व न्याय मिलना चाहिए : शम्भु कुमार

बोकारो : सेल एससी - एसटी इम्प्लाईज फेडरेशन ने शम्भु कुमार अध्यक्ष बोकारो यूनिट एवं सदस्य केन्द्रीय कमिटी नई दिल्ली के नेतृत्व में नगर सेवा भवन के समीप अंबेडकर प्रतिमा स्थल पर मजदूर दिवस मनाया। शम्भु कुमार ने कहा कि मजदूर समाज की आधारभूत ढांचे को सुनिश्चित करते हैं। वे श्रम करके उत्पादन का संचालन करते हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक विकास संभव होता है। श्रमिकों का समाज में योगदान न केवल आर्थिक रूप से है, बल्कि उनके अधिकारों और सामाजिक स्थिति के मामले में भी महत्वपूर्ण है। श्रमिकों के सम्मान के साथ ही उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाने के उद्देश्य से इस दिन को मनाए जाने की शुरूआत हुई। दुनियाभर में 01 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। मजदूर दिवस मनाने का महत्व विभिन्न देशों में अलग-अलग हो सकता है लेकिन यह एक संदेश देता है कि मजदूरों का योगदान समाज में महत्वपूर्ण है और उन्हें सम्मान व न्याय मिलना चाहिए। इस अवसर पर एसआरयू से रामाकांत राम, करतार सामंत, महेंद्र राम, राकेश कुमार, सच्चु रजवार, मंतोष पासवान, नबानंदेश्वर हेम्बरम, आनंद कुमार रजक, संजय अंबेडकर, मुकेश पासवान, विशेश्वर रजवार, विजय राम, सुनील कुमार, दिलीप कुमार, संजय पासवान, राजेश कुमार, कुमार सानू , प्रभाकर कुमार, सुमित एक्का, बिष्णु बड़ाइक, नवीन आदि मौजूद रहे।

संत जेवियर्स में मजदूर दिवस का आयोजन

बोकारो : संत जेवियर्स विद्यालय में सोशल सर्विस लीग द्वारा मजदूर दिवस का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में सभी गैर शिक्षण कर्मचारियों को उनके दैनिक छोटे-छोटे कार्यों के लिए सराहना की गई, जो सभी के काम को आसान बनाते हैं कार्यक्रम की शुरूआत में सभी कार्यकताओं का स्वागत पुष्प वर्षा से किया गया। इसके बाद एक नुक्कड़ नाटक से दर्शया किया गया कि कैसे वो हमारी मदद करते हैं और हम किस प्रकार उन पर निर्भर हैं इसके बाद प्राचार्य फादर अरुण मिंज , एस. जे. ने सभी मजदूरों को धन्यवाद अदा किया और बताया कि श्रम दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य देश के निर्माण में श्रमिकों के योगदान को याद करना और सम्मानित करना है। फिर स्टाफ को अपनी प्रतिभा जाहिर करने का मौका दिया गया। किसी ने गाना गया, किसी ने सभी टीचर्स, प्रिंसिपल और प्यारे बच्चों का शुक्रिया किया कि इतने अच्छे माहौल में उन्हें काम करने का अवसर मिलो कार्यक्रम के अंत में सभी कर्मचारियों का पुनः आभार व्यक्त किया गया।

आईएसओ 50001: 2018 ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली का सवेर्लेंस ऑडिट

बोकारो : तीन दिवसीय ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली के सवेर्लेंस ऑडिट आईएसओ 50001: 2018 कार्यक्रम का आयोजन श्री गुलशन कुमार , मुख्य महा प्रबंधक (ऊर्जा प्रबंधन विभाग) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया. मेसर्स टीयूवी के बाहरी लेखा परीक्षक श्री कौशिक चक्रवर्ती (टीम लीडर) और श्री विकास गुप्ता (सदस्य) के द्वारा सवेर्लेंस ऑडिट किया जा रहा है. श्रीमती अनुपमा तिवारी, महा प्रबंधक (बिजनेस एक्सीलेंस) ने लेखा परीक्षकों का स्वागत किया. श्री गुलशन कुमार, मुख्य महा प्रबंधक (ऊर्जा प्रबंधन विभाग) ने ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली तथा सवेर्लेंस ऑडिट के महत्व के बारे में बताया. आईएसओ 50001: 2018 ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली के अंतर्गत बोकारो स्टील प्लांट के सी ओ & सी सी, सिंटर प्लांट, ब्लास्ट फर्नेस, हॉट स्ट्रिप मिल, ऊर्जा प्रबंधन विभाग, डी एन डब्ल्यू, आई & ए, ई टी एल, सामग्री प्रबंधन और मानव संसाधन विभाग का सवेर्लेंस ऑडिट किया जा रहा है. ऑडिट कार्यक्रम, ऊर्जा प्रबंधन विभाग और बिजनेस एक्सीलेंस विभाग के द्वारा संयुक्त रूप से संचालित और समन्वित किया जा रहा है.

भाजपा छोड़ कांग्रेस में सम्मिलित होते ही बदला तेवर, भाजपा के विरुद्ध दिया विवादित बयान

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो विधायक आवास कार्यालय में भाजपा जिलाध्यक्ष जयदेव राय प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा की मृत्युंजय शर्मा के भाजपा छोड़ने एवं नेता प्रतिपक्ष श्री अमर कुमार बाउरी एवं मुख्य सचेतक (प्रतिपक्ष) श्री बिरंचि नारायण पर उनके द्वारा लगाए गए आरोपों का जबाब देते हुए कहा की मृत्युंजय शर्मा के भाजपा छोड़ने से भाजपा पर कोई प्रभाव पड़नेवाला नहीं है क्योंकि उनका शरीर भाजपा में था परंतु उनकी आत्मा कांग्रेस में ही थी। उन्हें कांग्रेस से ज्यादा सम्मान भाजपा ने दिलाया परंतु उन्होंने भाजपा के नेता प्रतिपक्ष श्री अमर कुमार बाउरी एवं मुख्य सचेतक (प्रतिपक्ष) श्री बिरंचि

नारायण एवं धनबाद लोकसभा के भाजपा सह राजग प्रत्याशी पर जो सत्य एवं तथ्य से परे अनर्गल आरोप लगाए है उसका कोई आधार नहीं है। उन्होंने अमर कुमार बाउरी पर जो आरोप लगाया है वे उस आरोपों को साबित नहीं कर सकते है यदि वे ऐसा करते है तो हमलोग राजनीति से सन्यास ले लेंगे। वहीं जिलाध्यक्ष जयदेव राय ने कहा की मृत्युंजय शर्मा ने जो आरोप बोकारो के विधायक सह मुख्य सचेतक (प्रतिपक्ष) बिरंचि नारायण पर लागाया है तो वह जान लें की बिरंचि नारायण जनता की कृपा एवं कार्यकर्ता के मेहनत से विधायक बने है मृत्युंजय शर्मा के कृपा से नहीं, वही भाजपा जिलाध्यक्ष ने उलटे मृत्युंजय शर्मा पर आरोपों की झड़ी लगाते हुए कहा की खुद वह जब एस०एस०इंटर एवं डिग्री कालेज थे तो उनके भ्रष्टाचार के कारनामों को पूरा बोकारो-चंदनकियारी की जनता जानती है उन्होंने किस प्रकार इन संस्थानों को लूटने का काम किया। पूर्व जिला परिषद के अध्यक्ष मिहिर सिंह चौधरी ने कहा की दूसरे पर आरोप लगाने ने पहले उन्हें अपने गिरेबान में झाकना चाहिए, उन्होंने कहा की मृत्युंजय शर्मा जो कुछ दिन पहले तक खातियानी संघर्ष मोर्चा की राजनीति कर रहे थे वे बताएं की उनका कितना में कांग्रेस से डील हुआ की आज वे भाजपा सह राजग प्रत्याशी श्री ढूलू महतो का, चंदनकियारी के विधायक सह नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, बोकारो के विधायक सह मुख्य सचेतक (प्रतिपक्ष) बिरंचि नारायण का विरोध करने लगे। मिहिर सिंह चौधरी ने कहा की ढूलू महतो एक युवा संघर्षशील ईमानदार किसान मजदूर का बेटा को भाजपा ने टिकट दिया है ये बात कांग्रेस को पच नहीं रहा है। मौके पर जिला अध्यक्ष जयदेव राय, मिहिर सिंह चौधरी, संजय त्यागी, विधानसभा के सह संयोजक वीरभद्र प्रसाद सिंह एवं विजय आनंद उपस्थित रहे।

कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष ज्योति प्रकाश द्विवेदी अपने समर्थकों साथ भाजपा में हुए शामिल

बिभा संवाददाता

बोकारो : भाजपा के नीति व सिद्धांत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी जनकल्याणकारी कार्यों से प्रभावित होकर 1 मई को बोकारो विधायक बिरंची नारायण के आवासीय कार्यालय में कांग्रेस पार्टी के जिला उपाध्यक्ष सह दी सिटी सेंटर ट्रेडर्स एसोसिएशन के महासचिव ज्योति प्रकाश द्विवेदी और उनके समर्थकों को धनबाद लोक सभा प्रत्याशी ढुल्लू महतो,बोकारो विधायक बिरंची नारायण भाजपा जिलाध्यक्ष जयदेव राय ने अंग वस्त्र व पुष्प देकर पार्टी में शामिल किए । शामिल होनेवाले ज्योति प्रकाश द्विवेदी, अनीत सिंह दांगी, निकेश उपाध्याय, बिनोद पांडेय, मोनू कुमार, प्रसांत द्विवेदी, अनीश कुमार, शंकर मराण्डी, मदन हांसदा, आनंद लाल महतो, सौरव रस्तोगी, बिपिन अग्रवाल, उमेश सिंह, रितेश सिंह, अमरेंद्र कुमार, आनंद सोरेन, संजय कुमार उक्त अवसर पर मिहिर सिंह, शशि भूषण ओझा मुकुल,दिलीप श्रीवास्तव,कमलेश राय,संजय त्यागी,बिराभद्र प्रसाद सिंह,अनिल सिंह,देवेंद्र सिंह,ब्रज दुबे,अमर स्वर्णकार अभय कुमार गोलू आदि उपस्थित थे।

ग्रीष्मकालीन क्रिकेट प्रशिक्षण शिविर आज से

बिभा संवाददाता

बोकारो : ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन शुक्रवार से सेक्टर 3 ट्रेनीज हॉस्टल मैदान में शाम 4 बजे से 6 बजे तक किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए क्रिकेट खिलाड़ी अरूण कुमार ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में क्रिकेट की तकनीकी बारीकियों के अलावा, खिलाड़ियों के फिटनेस व मेंटल स्ट्रैंथ पर भी काम किया जाएगा। इस शिविर में 8 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों को क्वालिफाइड कोच के माध्यम से निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर की पहल कुछ पूर्व खिलाड़ियों की ओर से किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण शिविर का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चों को क्रिकेट के साथ स्वस्थ जीवन जीने के बारे में जागरूक करना है। मौके पर अरूण शर्मा, संजय पाण्डेय समेत अन्य पूर्व खिलाड़ी शमिल रहे।

धमन भट्टी मे ठेका मजदूर बेहाल :बीके चौधरी

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के धमन भट्टी बिभाग मे हजारो ठेका मजदूर कार्यरत है फलस्वरूप प्रबंधन के द्वारा दिए जा रहे मासिक टार्गेट को पूरा करने के लिए भीषण गर्मी हो या अन्य बिपरीत परिस्थिति हो धुल,डस्ट एवं गैस के रहते हुए भी पूरे मेहनत और लगन के साथ लगे रहते हैं इसके बाबजूद प्रबंधन के नाक के निचे ठेकेदार द्वारा उनका आर्थिक और मानसिक शोषण फलना फूलना एक गंभीर और चिन्तनीय सबाल खड़ा है। प्रबंधन द्वारा नियमानुसार उनका बेतन तो बैंक खाता मे भेजा जाता है लेकिन उनसे बेतन के लगभग 30 से 40 प्रतिशत तक रुपये उनको अपने ठेकेदार को वापस करने के लिए मजबूर होना पड़ता है साथ साथ ई एल,बोनस 100% लौटाना नियति बना हुआ है। बिभाग मे बहुत सारे ऐसे ठेकेदार भी हैं जो

गरीब असहाय मजदूर को मिलने बाले बेतन का 100% भुगतान भी करता है और एक रूपया वापस भी नही लेता है। बिभाग के चार्जिंग साइड मे बर्षो से लोटाये जाने की परम्परा को कुछ मजदूरों ने मरता क्या नही करता बाली कहाबत को चिर तीर्थ करते हुए अपने बेतन से लौटाना जब बन्द किया तो कुछ मजदूरों का गेट पास रोक दिया गया था। जब प्रभावित मजदूर जय झारखंड मजदूर समाज के महामंत्री बि के चौधरी से अपनी वेदना बताया तो इसकी जानकारी बिभाग के मुख्य महाप्रबंधक से अनेको बार मिलकर उन मजदूरों का गेट पास दिलबाने पर जोर देता रहा लेकिन उनके द्वारा इसे ठेकेदार का दुस्साहस तो बताता रहा लेकिन मजदूरों को न्याय मिलने मे आनाकानी देख कर आज धमन भट्टी के मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय मे महामंत्री बि के चौधरी अपने सेकडो सहयोगी के साथ आर पार का नतीजा निकालने के लिए पहुंच गये। मामले की गंभीरता को देखते हुए कार्मिक विभाग के उपमहाप्रबंधक पी के सिंह ने हस्तक्षेप करते हुए समस्याओ का समाधान मुख्य महाप्रबंधक के साथ टेबल बैठकर निकालने के अस्वासन पर सम्मेलन कक्ष मे लम्बी चौडी बार्ता मे यह तय हुआ कि 10 दिनो के भीतर अगर मजदूरो को काम पर वापस नही लिया गया तो इस कॉन्ट्रेक्ट को केन्सील कर एच एस सी एल को काम दिया जायगा। कार्यक्रम मे संयुक्त महामंत्री एन के सिंह, एस के सिंह, रमा रवानी,लाल बाबू भारती, ए डब्लू ए अंसारी,रौशन कुमार, आर बी सिंह, बादल कोयरी,आशिक अंसारी,राजेन्द्र प्रसाद, आई अहमद,आर के मिश्रा,भी के साह, दयाल मांझी,संतोष गुप्ता,धर्मेंद्र कुमार, ऐ के महन्ती,देवेन्द्र गोराई, तुलसी साह, दिवाकर कुमार, कार्तिक सिंह, बालेश्वर राय, शशिकांत, देवेन्द्र गोराई, ऐ के मंडल, डी एन पी सिंह, डी एन महली इत्यादि उपस्थित थे।

कीम्स के बैनर तले प्राइवेट कंपनी इलेक्ट्रोलाइजर के तानाशाही के खिलाफ कर्मी आमरण अनशन पर बैठे

बिभा संवाददाता

बोकारो : सेल बोकारो इस्पात संयंत्र के शीत बेलन शाला नंबर तीन के हाइड्रोजन प्लांट में कार्यरत ठेका मजदूरों ने मुख्य महाप्रबंधक सी आर एम 3 तथा ठेका कंपनी मे० इलेक्ट्रोलाइजर लिमिटेड के सांठ-गांठ एवं तानाशाही के खिलाफ क्रांतिकारी इस्पात मजदूर संघ (एचएमएस) के बैनर तले मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय पर न्याय मिलने तक आमरण अनशन पर बैठ गए।

अनशन पर बैठे ठेका मजदूरों ने मामले की जानकारी देते हुए कहा कि हम लोग 01/01/2022 से उक्त कंपनी में कार्यरत है और सभी लोग अपने कार्य में दक्ष है। जब हम लोगों ने नियमानुसार वेतन और हक की मांग की तो हमें जबरन 01/01/2024 को कार्यस्थल से धक्का मुक्की कर बाहर कर दिया गया और कहा गया कि दोबारा यहां दिखे तो मार भी पड़ेगी।न्याय की आस में हम लोग मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय पर आमरण अनशन को मजबूर हैं।

मामले के बारे में संघ के महामंत्री सह सदस्य एनजेसीएस श्री राजेंद्र सिंह ने कहा कि 1 मई यानी 'मजदूर दिवस' पर प्रबंधन एवं ठेका कंपनी का ऐसा व्यवहार साफ दर्शाता है कि यह लोग मजदूर हित के प्रति कितने चिंतित है?

मामला बेहद ही गंभीर है हाइड्रोजन प्लांट में कार्यरत ठेका मजदूरों की समस्याओं को लेकर 27/4/2024 को मुख्य महाप्रबंधक से हमारी बात हुई थी हमें आश्वासन दिया गया था कि सभी मजदूरों के साथ न्याय होगा। बात होने के बाद मजदूरों को काम से बाहर निकाल देना साफ-साफ जाहिर करता है कि मामले में मुख्य महाप्रबंधक की भूमिका बेहद संदेहास्पद है। इतना ही नहीं पूर्व में भी जिस भी ठेका मजदूर ने अपने हक की बात की है उन्हें सी आर एम 3 से बाहर का रास्ता देखना पड़ा है। इसके दो ही मायने हैं या तो सीजीएम साहब का कंपनी से कोई व्यक्तिगत लाभ है या फिर इनका प्रबंधन बेहद ही लचर है। हम साफ-साफ चेतावनी देते हैं कि अगर हाइड्रोजन प्लांट के ठेका मजदूरों को जल्द से जल्द न्याय नहीं मिला तो यूनियन संपूर्ण बोकारो स्टील प्लांट को बंद करने के लिए बाध्य होगी।

झारखंड क्रांतिकारी मजदूर यूनियन ने मजदूरों का रैली निकालकर मजदूर दिवस मनाया

बिभा संवाददाता

बोकारो : सेक्टर 9 कार्यालय में मजदूरो को संबोधित करते हुए महामंत्री डी.सी गोहाई ने कहा कि विश्व मजदूर दिवस देश के विभिन्न प्रतिष्ठानों में कार्यरत मजदूर एवं असंगठित मजदूर जिनकी संख्या 50 करोड़ से ज्यादा है, इन मजदूरों को राजनीतिक , आर्थिक सामाजिक एवं उनके हक अधिकार से वंचित कर इन्हें हंसीये में धकेल दिया गया है।

श्री गोहाई ने कहा कि बोकारो इस्पात संयंत्र हो या बोकारो पावर प्लांट के हर विभाग के उत्पादन , ऑपरेशन, मेंटेनेंश के हर कार्यो को ठेका मजदूर अपना खून पसीना बहाकर इसे निष्पादित करते है,परंतु तमाम श्रम कानून और उनका मासिक वेतन कुशल मजदूरों को 20000 एवं अकुशल मजदूरों को ?15000 प्रति महीना उनके बैंक खाते में जाने के बावजूद भी ठेका मजदूर इस वेतन का आधा पैसा ही घर ले जाने को बाध्य है। भीषण बेरोजगारी एवं गगनचुंबी महंगाई के कारण ठेका मजदूर अपने बाल बच्चे एवं परिवार का पालन पोषण करने के लिए अधिकारी एवं ठेकेदार के समक्ष आत्म समर्पण करने को बाध्य है।

इन ठेका मजदूरों की नरकीय जिंदगी, अमानवीय जिंदगी की झलक इस बात से स्पष्ट होता है कि कारखाना के इर्द गिर्द दो दर्जन से अधिक झुग्गी झोपडी मे बसने वाले मजदूरों के समक्ष पीने के लिए ना जल है ना सड़क है ना शौचालय , उनके बच्चों के लिए कोई पाठशाला नहीं है, उपर से बोकारो के 64 मौजा के विस्थापित बेरोजगार नौजवान स्थाई नौकरी की आस में आज ठेका मजदूरी करने के लिए विवश है।

बोकारो इस्पात संयंत्र एवं पावर प्लांट में कार्यरत 30 से 40 हजार ठेका मजदूरो के सामने भयावह एवं अनिश्चितता के मकड़जाल से मुक्ति कराने की जिम्मेदारी बोकारो प्रबंधन एवं मजदूर संगठनों की पहल की आवश्यकता है और आज मजदूर दिवस की यही हम सभी का संकल्प होना चाहिए ।सभा को अरविंद कुमार, राम लखन चौधरी ,सालखंन मुर्मू, लछ्मन टुड्डु, फुलेश्वर महतो,रामनिवास सिंह, वकील प्रसाद, वीरेंद्र झा ,घासी साहु, अनिल शर्मा ,भगवती ठाकुर ,कांता कुमार दास, दिनेश कर्मकार, बसंत उरांव, गणेश कुमार राय,राम लखन महतो ,वीर बहादुर प्रसाद, संजीव राय ,फागु बगवार, नंदकुमार ,विनोद राम ,आरसी प्रसाद, सुजीत कुमार ,राहुल सिंह ,गगन कुमार दास ,मंटू महतो ,दिलीप महतो शब्बिर अंसारी, मोहन हांसदा, मुकेश गोप,गणेश महतो हेरेन्द्र केवट, आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी जय प्रकाश भाई पटेल ने किया नामाँकन

भाजपा जुमलेबाजी , झूठ की राजनीति करती है: चंपई सोरेन

हजारीबाग : इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी जय प्रकाश भाई पटेल ने एक मई को नामाँकन किया। जिला स्कूल परिसर में तेज धूप में भी लोगो के उत्साह देखते बन रहा था और हजारों हजार की भीड़ की उपस्थिति में सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कांग्रेस जिला अध्यक्ष शैलेंद्र कुमार यादव और धन्यवाद ज्ञापन रामगढ़ जिला अध्यक्ष मुन्ना पासवान ने की । सभा में झारखंड के मुख्यमंत्री चंपई सोरेन,पूर्व वित्त मंत्री रहे यशवन्त सिन्हा,प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर,कैबिनेट मंत्री आलमगीर अलाम,बादल पत्रलेख,बन्ना गुप्ता,प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर,राजद से मंत्री सत्यानन्द भोक्ता,जेएमएम से फागु बेसरा,बरही विधायक उमाशंकर अकेला यादव,बड़कागांव विधायिका अम्बा प्रसाद,पूर्व विधायक सौरव नारायण सिंह,योगेंद्र साव,ममता देवी,बजरंग महतो,भीम कुमार,संजय पासवान,कुमार गौरव सिंह,महिला प्रदेश अध्यक्ष गुंजन सिंह,मथुरा महतो,जयशंकर पाठक,केदार पासवान,अशोक चौधरी ,अजय सिंह,सुरेंदर सिंह,बिनय सिन्हा दिप्पू ,बिनोद कुशवाहा,संजू बेदिया,कमल नयन सिंह,मुन्ना सिंह,डॉ आर सी मेहता,महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत,निसार खान,राजद से हीरामन यादव,राजू खण्डेलवाल,, शैलेंद्र सिंह, गणेश सीटू,शान्तनु मिश्रा,सहित दिग्गज नेतागण के साथ महागठबंधन के नेतागण,प्रदेश,जिला और महानगर,प्रखंड कमिटी,बीस सूत्री व मंच मोर्चा के अध्यक्ष और नेता भाग लिए । मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने कहा भाजपा सिर्फ जुमलेबाजी करती है औ? झूठ की राजनीति करती है, जब-जब चुनाव आता है तब तब नया-नया जुमला लेकर आती है भाजपा की गारंटी योजना भी सिर्फ एक जुमला है झूठे वादे कर लोगों को ठगने का काम करती है ।श्री सोरेन इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल के नामांकन के बाद सभा को संबोधित कर रहे थे इन्होंने कहा कि अब तक जनता से किए गए वादों को भाजपा ने पूरा नहीं किया। भाजपा आदिवासी की विरोधी है बीजेपी पार्टी से सावधान रहने की आवश्यकता है।

सभा को पूर्व वित्त और विदेश मंत्री यशवन्त सिन्हा ने सम्बोधित करते हुए कहा की हजारीबाग को बचाना है और हमने यह प्रण लिया है । हजारीबाग को अतंत ताई शक्तियो से बचाएगे और जय प्रकाश भाई पटेल को भारी बहुमत से जीताना है। हजारीबाग को सुरक्षित हाथों में सौपना है । इस अवसर पर प्रदेश के अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा की देश में सिर्फ राहुल गांधी की गारंटी चलेगी , यह चुनाव लोकतंत्र संविधान को बचाने व तानाशाह को रोकने का है । भाजपा की अलग नीति रही है सिर्फ झूठ बोल रही है अच्छे दिन लाने वाले आज भूल गए हर साल 2 करोड़ बेरोजगार को रोजगार देने की बात जुमला साबित हुआ । 15 लाख देने का वादा किया लेकिन खाता में 15 पैसा भी नहीं आया । इस अवसर पर विधायक दल के नेता और कैबिनेट मंत्री आलमगीर आलम ने कहा की 2019 में डबल इंजन की सरकार ने राज में 11 लाख राशन कार्ड रद्द कर दिया था हमारी सरकार ने 20 लाख ग्रीन कार्ड बनाकर दिया गरीब का बच्चा नहीं पढ़े इसलिए रघुवर सरकार ने 5000 प्राथमिक विद्यालय बंद कराया था । सभा को संबोधित करते हुए सौरव नारायण सिंह ने कहा की केंद्र सरकार सभी चीजों को निजी कंपनियों के हाथों में सौप रही है 2014 के पूर्व में भाजपा महंगाई का विरोध करती थी लेकिन सत्ता में आते ही देश में महंगाई बढ़ने लगी महंगाई से जनता त्रस्त है

विधायक उमाशंकर अकेला यादव ने कहा कि हमारी सरकार खेतों में सालों भर सिंचाई के लिए पानी पहुंचा रही है इस बार तानाशाही सरकार को उखाड़ फेंकना है और हजारीबाग के व्यपारी प्रत्याशी से हजारीबाग को बचाना है।

बड़कागांव विधयिका अम्बा प्रसाद ने कहा केंद्र सरकार आरक्षण नीति को समाप्त करना चाहती है इसलिए 400 पार की बात कर रही है ।भाजपा मुट्ठी भर पूंजी पतियों के लिए राजनीति कर रही है महागठबंधन के सभी घटक दल एकजुटा का परिचय दे रहे हैं और यहां से जयप्रकाश भाई पटेल को भारी मतों से जीतवाने की अपील की। कार्यक्रम में दारू प्रखंड के प्रमुख स्वेता कुमारी,कटकमसांडी के संजय सिंह ने कांग्रेस पार्टी में अपने समथकों के साथ जॉइन किया । कार्यक्रम समाप्ति के बाद पूरे शहर में रोड शो का कार्यक्रम भव्य तरीके से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर हजारों हजार इंडिया गठबंधन के नेतागण और कार्यकताओं की भागीदारी रही ।

अनिरुद्ध कुमार ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया

हजारीबाग : लोकसभा हजारीबाग क्षेत्र के लिए अभ्यर्थी के रूप में अनिरुद्ध कुमार ने निवार्ची पदाधिकारी,14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र नैंसी सहाय के समक्ष अपना नामांकन दर्ज किया। श्री अनिरुद्ध कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के उम्मीदवार घोषित किए गए है। नामांकन के समय पूर्व सांसद भुनेश्वर प्रसाद मेहता भी उपस्थित थे।

निर्दलीय उम्मीदवार शशि भूषण केशरी ने दाखिल किया नामांकन पर्चा

हजारीबाग : 14 लोकसभा हजारीबाग क्षेत्र के लिए अभ्यर्थी के रूप में शशि भूषण केशरी ने निवार्ची पदाधिकारी नैंसी सहाय के समक्ष अपना नामांकन पर्चा दाखिल किया। अभ्यर्थी शशि भूषण केशरी निर्दलीय उम्मीदवार होंगे।

असंगठित कामगारों का हो रहा है शोषण:अमर

राँची : झारखंड समस्त कामगार संघ (जेएसकेएस) के प्रदेश अध्यक्ष अमर मुंडा ने बताया शिकागो में मजदूरों से 15-15 घंटे काम कराया जाता था जिसके कारण उनकी मौत हो रही थी उनके विरोध करने पर 1886 में एक कानून बनाया गया जिसके तहत कामगारों से 8 घंटा काम करना था और सप्ताह में 1 दिन की छुट्टी दी जानी थी इसी कानून को भारत के चेन्नई शहर में 1923 को लागू किया गया आज इतने साल बीत जाने के बाद भी कामगारों के साथ नाइंसाफी हो रही है महंगाई बढ़ती जा रही है लेकिन उनके मानदेय में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही है 12-12 घंटा उनसे काम लिया जाता है ओवरटाइम के नाम पर कुछ भी नहीं मिलता त्योहारों के समय उनकी आओ भगत कीजाती है और जैसे ही बाजार ठंडा पड़ता है उन्हें काम से निकाल दिया जाता है जिसका झारखंड समस्त कामगार संघ पूर्ण विरोध करता है।

मारवाड़ी समाज की अनदेखी करने वाली पार्टियों और नेताओं को दे मुंह तोड़ जवाब: बिमल बुधिया

समाज के मान सम्मान के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा: महावीर अग्रवाल

लोकसभा चुनाव को लेकर मारवाड़ी समाज की मारवाड़ी धर्मशाला में 12 मई को होगी बैठक

मतदान को लेकर सम्मेलन के पदाधिकारियो व कार्यकारिणी सदस्यों ने ली शपथ

प्रकाश पटवारी

रामगढ़: लोकसभा चुनाव में मारवाड़ी समाज की भूमिका क्या होगी समाज की लगातार अनदेखी करने वाले नेताओं और पार्टियों को किस तरह से सबक सिखाना है और मारवाड़ी समाज की मान-सम्मान के लिए समाज को कैसे एकजुट किया जाए इसको लेकर रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारणी की एक बैठक जिला अध्यक्ष महावीर प्रसाद अग्रवाल की अध्यक्षता व प्रमंडलीय मंत्री बिमल बुधिया कि उपस्थित में बुधवार 1 मई को स्थानीय मारवाड़ी धर्मशाला के सभागार में आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से फैसला लिया गया कि लोकसभा चुनाव को लेकर मारवाड़ी समाज की मारवाड़ी धर्मशाला में 12 मई को बैठक रखी जाय बैठक में रामगढ़ जिला मारवाड़ी समाज के सभी लोगों को आमंत्रित किया जाए समाज की विशाल बैठक कर यह संदेश दिया जाए की दूसरे समाज की तरह ही मारवाड़ी समाज भी एकजुट है और अपने मान सम्मान और अधिकार के लिए कुछ भी करने को तैयार है।

बैठक को संबोधित करते हुए प्रमंडलीय मंत्री बिमल बुधिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज की अनदेखी करने वाली पार्टियों व नेताओ को मुंह तोड़ जवाब देने का समय आ गया है। चुनाव में अगर मारवाड़ी समाज अपनी एकजुटता का परिचय देता है और यह प्रण लेता है कि हम लोग लोकसभा व विधान सभा चुनाव में उसी पार्टी और नेता को समर्थन देंगे जो मारवाड़ी समाज के साथ कदम पर कदम मिलाकर चलने का वादा करेगा मारवाड़ी समाज के किसी व्यक्ति के ऊपर अगर मुसीबत आती है तो उसकी मदद करेगा तो पार्टी और नेता अपने आप सुधार जायेगे। अभी जो परिस्थितियों है उसके अनुसार किसी की पार्टी का नेता उम्मीदवार मारवाड़ी समाज से केवल वोट पाने की उम्मीद रखता है काम आने के वक्त अपना पल्ला झाड़ लेते हैं ऐसी पार्टी और नेताओं से मारवाड़ी समाज को दूरी बनाकर रखना है।

श्री बुधिया ने कहा कि हमारे समाज का मतदान काफी कम होता है इसको बढ़ाना होगा उन्होंने समाज के लोगों से अनुरोध करते हुए कहा कि वोट जरूर दें मतदान वाले दिन घर से मतदान केंद्र तक जरूर जाएं अपना वोट दें क्योंकि एक वोट सरकार बना सकता है गिरा सकता है विधायक को जीता सकता है संसद को हरा सकता है।

समाज के मान सम्मान के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा: महावीर अग्रवाल

रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष महावीर अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज के मान-सम्मान के साथ खिलवाड़ कर अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसी पार्टियों और नेताओं को यह बताने का समय आ गया है कि मारवाड़ी समाज किसी पार्टी विशेष और नेता की कठपुतली नहीं है जिसे जब चाहे वह जिस तरह से नचा ले मारवाड़ी समाज के मान सम्मान के साथ खिलवाड़ करने वाले नेताओं पार्टी और गुंडे तत्व को मारवाड़ी समाज अकेले सबक सिखाने के लिए काफी है लेकिन इसके लिए मारवाड़ी समाज को एकजुट होना जरूरी है। हमें इस परंपरा को भी तोड़ना होगा की लंच हमारा मंच हमारा लोग हमारे और इसका फायदा किसी विशेष पार्टी और नेता को हो।

महावीर अग्रवाल ने समाज के लोगों से अपील करते हुए कहा है कि परिस्थिति चाहे जैसी भी हो मतदान करने जरूर निकले खुद भी मतदान करें और आसपास के लोगों को भी मतदान के लिए जागरूक करने का काम भी करें।

बैठक में अगामी लोकसभा चुनाव में मारवाड़ी समाज का शत प्रतिशत मतदान कराने पर भी विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में सम्मेलन के संरक्षक गोविंद मेवाड़ ने समाज को मजबूत करने पर बल देते हुए कहा कि समाज को हर जरुरतमंद के साथ खड़ा होने कि जरुरत है ।समाज के गरीब बच्चियों के विवाह में सहयोग करने कि लिए आगे आ कर सहयोग करने से ही समाज के लोगो में एकजुटता का संदेश जाएगा ।

संरक्षक संतोष पटवारी ने कहा कि मारवाड़ी समाज की एकजुट के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए जिससे मारवाड़ी समाज को केवल इस्तेमाल करने वाले लोगों नेताओ और पार्टियों को सबक मिल सके

जिला उपाध्यक्ष विनय अग्रवाल ने कहा कि हमें मतदान बढ़ाने पर कार्य करना चाहिए, मतदान के लिए हर मतदाताओं को जागरूक करना चाहिए। इसके लिए रैली पंपलेट आदि के माध्यमों से प्रयास होना चाहिए।

योजना समिति के सुशील गर्ग ने कहा कि समाज के प्रमुख लोगों को सहयोग की भावना से जोड़ते हुए सहयोग करना चाहिए।

मंत्री प्रकाश पटवारी ने शत प्रतिशत मतदान के लिए शहर के प्रमुख जगहों पर 'हा में राष्ट्र का निमार्ता हुं, में मतदान जरूर करुंगा' का सेल्फी पोइंट बनाया जा सकता है।

बैठक में उपस्थित सभी लोगों ने अपनी अपनी राय दी और मारवाड़ी समाज की एकजुट और लोक सभा चुनाव को लेकर अपने-अपने विचार रखें। बैठक में सर्वसम्मति से रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन के बैनर तले मारवाड़ी समाज की आम बैठक 12 मई 24 को संध्या 7:30 बजे मारवाड़ी धर्मशाला में आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

मतदान को लेकर सम्मेलन के पदाधिकारियो व कार्यकारिणी सदस्यों ने ली शपथ

रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियो व कार्यकारिणी सदस्यों ने लोकसभा चुनाव में मतदान करने और अधिक से अधिक लोगों को मतदान के लिए जागरूक करने के लिए शपथ भी लिया । बैठक में प्रमंडलीय मंत्री बिमल बुधिया, जिला अध्यक्ष महावीर प्रसाद अग्रवाल, जिला मंत्री प्रकाश पटवारी, गोविंद मेवाड़, विनय अग्रवाल,संदिप अग्रवाल, मदन महेश्वरी, उमेश राजगढ़िया, विनोद कुमार, सुशील गर्ग,जय प्रकाश मित्तल, मनोज बंसल, महावीर खंडेलवाल, सुभाष अग्रवाल, संतोष अग्रवाल, रवि अग्रवाल, विजय कुमार अग्रवाल, मुरारी लाल अग्रवाल अभिषेक अग्रवाल संतोष पटवारी व अभिषेक अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

पतरातु पुलिस ने हथियार के साथ तीन अपराधकर्मी को गिरफ्तार कर जेल भेजा

बिभा संवाददाता

रामगढ़: जिला के पतरातु पुलिस ने हथियार के साथ तीन अपराधकर्मी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा है' जिला पुलिस की यह बड़ी कामयाबी है ' रामगढ़ पुलिस अधीक्षक डॉ बिमल कुमार को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि रामगढ़ जिला में राँची से कुछ अपराधकर्मी मोटरसाईकिल से हथियार से लैश होकर किसी जघन्य अपराध को अंजाम देने लिए आने वाले है और घटना कर पुनः वापस भागने वाले हैं। इस संदर्भ में पुलिस अधीक्षक रामगढ़ डॉ बिमल कुमार के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी थाना प्रभारी, रामगढ़ जिला को एंटी क्राईम चेकिंग अभियान चलाने का निर्देश दिया गया। साथ ही संबधित अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस निरीक्षक को निगरानी करने हेतू दिसा निर्देश गया।

उक्त आदेश के आलोक में सभी थाना प्रभारी के द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में गहनता पूर्वक एंटी क्राईम चेकिंग अभियान चलाया गया। इसी क्रम में एसडीपीओ पतरातू के नेतृत्व में पुलिस निरीक्षक पतरातू एवं पतरातू थाना पुलिस के द्वारा पतरातू खलारी मुख्य मार्ग पर एंटी क्राईम चेकिंग अभियान में खलारी से पतरातू की ओर आ रही एक काले नीले रंग की डिस्कवर मोटरसाईकिल संख्या जेएच01आर 2171 सवार तीन व्यक्ति पुलिस बल को देख मोटरसाईकिल पीछे मुड़ाकर भागने का प्रयास करने लगे।

संदेह होने पर पुलिस बल के द्वारा उक्त मोटर साईकिल जेएच 01 आर2171 सवार तीनों व्यक्ति को रोका गया लिया गया ।पुलिस बल के द्वारा तीनों व्यक्ति का नाम-पता पूछताछ करने पर उनके द्वारा अपना नाम रमेश मुण्डा, उम्र करीब 39 वर्ष पित्ता-स्व० बीरू मुण्डा सा० हिरिंग ,रूपण हांसदा उम्र करीब 28 वर्ष पिता-बदु मांझी, सा०- पंडरिया, बलतु मांझी उम्र करीब 35 वर्ष, पे० बदु मांझी, सा०- पंडरिया तीनों थाना बुढ़मु, जिला- रॉची बताया गया। पकड़ाये व्यक्तियों का विधिवत बदन तलाशी लिया गया। तलाशी के क्रम में एक लोडेड देशी कट्टा, एक 7.65 एमएम का देशी पिस्टल, 315 एमएम का दो (02) जिंदा कारतूस बरामद किया गया। उक्त पकड़ाये व्यक्ति से बरामद हथियार एवं जिंदा कारतूस का वैध कागजात का माँग किया गया लेकिन उनके द्वारा कोई वैध कागजात प्रस्तुत नहीं किया गया। पकड़ाये तीनों व्यक्ति से पूछताछ के क्रम में उनके द्वारा बताया गया कि वे हथियार से लैश होकर पतरातू क्षेत्र में लूट-पाट की घटना को अंजाम देने जा रहे थे। उक्त पकड़ाये तीनों व्यक्ति को अवैध रूप से बिना लाईसेंस के हथियार एवं जिंदा कारतूस रखने के आरोप मे विधिवत गिरफ्तार किया गया ' अभियुक्त के विरूद्ध इस संदर्भ में पतरातू थाना कांड संख्या 113/24, दिनांक- 01.05.2024, धारा-25(1-ु)/26/35 आर्म एक्ट दर्ज किया गया। गिरफ्तार उक्त अभियुक्तों न्यायिक हिरासत में भेजा गया है । छापेमारी में मुख्य रूप से एसडीपीओ बिरेन्द्र राम,पुलिस निरीक्षक योगेन्द्र सिंह, पतरातू अंचल, शिवलाल कुमार गुप्ता, थाना प्रभारी, पतरातू,शिया कच्छप, पतरातू थाना एवं पतरातू थाना सशस्त्र बल शामिल थे।

6000 करोड़ खर्च करने के बाद भी क्यों बंद किया गया खरकई डैम प्रोजेक्ट:हाईकार्ट

रांची : झारखंड हाईकोर्ट के सम्मुख, सरायकेला के खरकई डैम प्रोजेक्ट पर सरकारी निर्णय के सम्बन्ध में जनता में उत्पन्न असंतोष की जगह पर नए सवाल और संदेहों का दौर आया है। हाईकोर्ट के आदेश के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि इस प्रोजेक्ट पर 6100 करोड़ रुपये के खर्च के बावजूद भी अभी तक यह पूरा नहीं किया गया है।

जनता के माध्यम से सरकार से सवाल उठ रहे हैं कि इस प्रोजेक्ट को बंद क्यों किया गया और क्या कारण है जो इसे पूरा नहीं किया जा रहा है?

आज की कार्यवाही में मान्नीय उच्च न्यायालय की दोहरी बेंच में जस्टिस श्री सुजित नारायण प्रसाद जी ने राज्य के सरकार के वकील श्री अशोक यादव के माध्यम से झारखंड सरकार को चेतावनी दी कि ₹अगर आप 6100 करोड़ रुपये से ज्यादा की कीमत का जनता के टैक्स के पैसों का दुरुपयोग कर- के परियोजना को बंद करने का इरादा रखते हैं, तो मैं इस जनहित याचिका में भारत सरकार को इसके एक पक्ष के रूप में शामिल कराऊंगा और राज्य के अधिकारियों पर जनता के पैसे का दुरुपयोग और इस परियोजना में धन की बबार्दी के लिए जांच करने के लिए शिकायत दर्ज कराऊंगा।

जल संसाधन विभाग द्वारा दाखिल किए गए शपथ पत्र में स्थानीय ग्रामीणों के विरोध के कारण प्रोजेक्ट में विलम्ब हुआ है, जिसे हाईकोर्ट ने कड़ी नाराजगी के साथ स्वीकारा है। हाई कोर्ट ने कहा कि वह सरकार द्वारा उत्पन्न यह जनता का असंतोष को समझती है और उसे हल करने के लिए प्रतिबद्ध है। हम जनता के हित में काम करते रहेंगे और उनके विश्वास को बनाए रखेंगे।

हाईकोर्ट के मामले में जो संकेत मिले हैं, उनका उचित जाँच और निष्पक्ष मामले का समाधान सुनिश्चित करने राज्य सरकार को एफिडेविट के द्वारा जवाब दाखिल करने को कहा गया है। इस मुद्दे पर हाईकोर्ट के अगले सुनवाई का निर्धारण 14 मई को किया गया है, जिसमें राज्य सरकार द्वारा आशा की गई है कि वह इसका पूरी तरह से सहयोग करें और कोर्ट के निर्देशों का पूरा अनुपालन करें।

हजारीबाग लोस के एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल के नामांकन-सह-आशिर्वाद सभा में उमड़ा विशाल जनसैलाब

बिभा संवाददाता

हजारीबाग : एनडीए समर्थित भारतीय जनता पार्टी के हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद प्रत्याशी मनीष जायसवाल का नामांकन- सह- आशिर्वाद सभा का आयोजन हजारीबाग स्टेडियम कर्जन ग्राउंड परिसर में बुधवार को हुआ। जिसमें विशेषरूप से राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, झारखंड भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, झारखंड के विधायक दल के नेता अमर कुमार बाउरी, जदयू के राज्यसभा सांसद खीरू महतो, गिरिडीह के आजसू के सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी, कोडरमा विधायक नीरा यादव, बोकारो विधायक बिरंची नारायण, बरकट्ठा विधायक अमित कुमार यादव, कांके विधायक समरी लाल, गोमिया विधायक लंबोदर महतो, रामगढ़ विधायक सुनीता चौधरी, सिमरिया विधायक किसुन दास, धनबाद विधायक राज सिन्हा, विश्रामपुर विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी, पूर्व मंत्री सह विधायक मनोज कुमार यादव, लोकनाथ महतो सहित अन्य सैकड़ों भाजपा, आजसू, जदयू, लोजपा (रामविलास) पार्टी के गणमान्य नेतागण मौजूद हुए। सभी नेताओं को अंग- वस्त्र भेंटकर और माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। जनसभा में सांसद प्रत्याशी मनीष जायसवाल के समर्थन में पूरे हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सभी पांचों विधानसभा रामगढ़, सदर, मांडू, बदकगांव और बरही विधानसभा क्षेत्र से जनसैलाब उमड़ा । लोग गाजे-बाजे, ढोल- तासे संग नाचते- झूमते और हाथों में एनडीए गठबंधन में शामिल भाजपा, आजसू, जदयू और लोजपा (रामविलास) का पताखा लहराते दिखे। नामांकन आशीर्वाद सभा से पूर्व ,सांसद प्रत्याशी मनीष जायसवाल अपने हजारीबाग के झंडा चौक के समीप स्थित आवास विशेश्वर दयाल जायसवाल पथ से पिता ब्रजकिशोर जायसवाल और माता विद्या जायसवाल का पैर छूकर आशीर्वाद लेकर निकले। मनीष जायसवाल जैसे ही अपने आवास से निकले उनके घर के बाहर उमड़े जन सैलाब में शामिल लोग हाथों में पीएम मोदी और हजारीबाग के सांसद प्रत्याशी मनीष जायसवाल से संबंधित तख्ती के साथ भाजपा झंडा लहराते हुए पारंपरिक आदिवासी नृत्य- संगीत संग नारा जयकारा लगाते हुए उनका स्वागत किया। यहां से मनीष जायसवाल जनसैलाब के साथ महावीर स्थान चौक पहुंचे। जहां महावीर स्थान मंदिर में पूजा अर्चना कर माथा टेका।

सभा की अध्यक्षता रामगढ़ के भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता ने किया। वहीं मंच संचालन भाजपा हजारीबाग जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह ने और धन्यवाद ज्ञापन रामगढ लोकसभा के सह -संयोजक रणंजय कुमार उर्फ कुंटु बाबू ने किया। सभा को संबोधित करते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान और झारखंड की धरती वीरों की धरती रही है। कांग्रेस पार्टी ने हमेशा लूट की राजनीति की है एवं कभी भी गरीबों और किसानों की चिंता नहीं की है। कांग्रेस पार्टी यह झूठा प्रचार कर रही है की आने वाले समय में भाजपा द्वारा संविधान को बदल दिया जाएगा, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंच से यह साफ कर दिया है कि ऐसा कांग्रेस पार्टी झूठा प्रचार कर रही है ।कांग्रेस पार्टी भ्रष्टाचार की जननी है। उन्होंने झारखंड की जनता से अपील की है कि राजस्थान की तरह झारखंड से भी 14 में से 14 सीट एनडीए गठबंधन को जीताकर (13 फूल और एक फल) मोदी जी को फिर से प्रधानमंत्री बनाने के लिए समर्पित करें। उन्होंने हजारीबाग की जनता से आह्वान किया कि पिछले बार से भी ज्यादा प्रचंड बहुमत से इस बार भाजपा को जिताना है और मनीष जायसवाल को सांसद बनना है` भाजपा झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि 20 मई को हम सबको एक-एक वोट कमल फूल को देना है और मनीष को जिताना है ताकि नरेंद्र मोदी फिर से प्रधानमंत्री देश का प्रधानमंत्री बन सके।

झारखंड के भाजपा विधायक दल के नेता सह चंदनकियारी विधायक अमर कुमार बाउरी ने हजारीबाग की जनता से अपील करते हुए कहा की इस बार हजारीबाग के लाडले विधायक और भाजपा के प्रत्याशी मनीष जायसवाल मोदी के कमल लेकर खड़े हैं, आप स्बाही मनीष जायसवाल को जिताकर मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाएं।

आजसू पार्टी से गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने कहा की विपक्ष के पास ना कोई विजन है और ना कोई दिशा है। मोदी के पिछले 10 साल की विकास कार्यों पर जनता अपनी मोहर लगाएगी और इस बार भी केंद्र में एनडीए की सरकार बनेगी और हजारीबाग की सीट एनडीए प्रचंड बहुमत से जीतेगी। जदयू से राज्यसभा सांसद खीरू महतो ने जनता से अपील करते हुए कहा की इस बार हमें यह संकल्प लेकर के जाना है कि जिस तरह से बाबा धाम जाने समय कावड़िया यह संकल्प लेते हैं कि हमें पूरे मन से बाबा को जल चढ़ाना है ठीक उसी प्रकार हजारीबाग की जनता को भी यह संकल्प लेना है कि मनीष जायसवाल के जीत के लिए पूरी ताकत झोंकनी होगी ताकि जीत ऐतिहासिक हो ।

भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने कार्यकताओं और उपस्थित लोगों का शीश झुकाकर वंदन किया और कहा की भारत को पहली बार ऐसा प्रधानमंत्री मिला जिनके मस्तक पर त्रिकुंड और गले पर रुद्राक्ष की माला है इसीलिए भारत का चौतरफा विकास हो रहा है। आगे उन्होंने कहा की इंडी महागठबंधन का एक भी नेता ऐसा नहीं जिन्होंने अयोध्या जाकर श्री राम लाल का दर्शन किया हो उनके दल से जुड़े आचार्य प्रमोद में ऐसा करने का प्रयास किया तो उन्हें पार्टी से ही बाहर कर दिया गया। जो राम का नहीं वो किसी काम का नहीं इसे लोकसभा चुनाव तक याद जरूर रखिएगा। उन्होंने कहा की आशीर्वाद दें, मैं हजारीबाग का बेटा और भाई हूं, आपका सम्मान बढ़ाऊंगा और हजारीबाग के विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करूंगा। सभा गोमिया विधायक को लंबोदर महतो बोकारो के भाजपा विधायक विरंची नारायण ,कोडरमा विधायक नीरा यादव के अलावे लोकनाथ महतो ,रोशन लाल चौधरी,तिवारी महतो ने भी संबोधित किया।

कोरोना वैक्सीन पर राजनीति नहीं

संजय गोस्वामी

पहली और दूसरी खुराक प्राप्त करने के 48 घंटे बाद, 687 अभ्यास (पुरुष = 275; महिला = 412) में बुखार, शरीर में दर्द, ठंड लगना, मतली, मैलगिया, सिरदर्द, अस्वस्थता , थकान की व्यापकता का आकलन किया गया और पहली खुराक की तुलना में दूसरी खुराक के प्रशासन के 48 घंटे बाद अन्य प्रणालीगत खुराक में काफी गिरावट आई अधिकांश प्रतिकूल घटनाओं में साइड इफेक्ट की रिपोर्ट दर <0.50% थी, जो सभी पुरुष एवं महिला के लिए वैक्सीन के लिए कोविशील्ड सुरक्षित है। कोरोना कब खत्म हो गया और इसपर अभी भी राजनीति चालू है, इस पर राजनीति नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ये आम लोग के स्वास्थ्य से जुड़ा है जानकारी के अभाव लोग घबरा जाएंगे।

कोरोना की कोविशील्ड वैक्सीन बनाने वाली ब्रिटिश कंपनी एस्ट्राजेनेका ने कोर्ट में माना है कि इस वैक्सीन से कुछ लोगों को दिल का दौरा और ब्रेन स्ट्रोक का खतरा है. यह वही वैक्सीन है जिसका भारत में बड़े पैमाने पर सीरम इंस्टीट्यूट के जरिए उत्पादन किया गया था. एक निजी संस्थान द्वारा उत्पादित वैक्सीन को न केवल सरकार द्वारा प्रचारित किया गया, बल्कि इसे आईसीएमआर द्वारा प्रमाणित और सुरक्षित भी बताया गया। जबकि सभी जानते हैं कि वैक्सीन का ट्रायल बहुत जल्दबाजी में किया गया था. क्लिनिकल और अन्य परीक्षणों की लंबी और वर्षों-लंबी प्रक्रिया को कुछ महीनों और हफ्तों में यह कहकर संक्षेप में प्रस्तुत किया गया कि यह समय की आवश्यकता थी। प्रधानमंत्री ने स्वयं सीरम इंस्टीट्यूट का दौरा किया और इसके एमडी अदार पूनावाला के साथ देश को वैक्सीन उत्पादन बढ़ाने का आश्वासन दिया। उन्होंने खुद भी टीका लगवाया और देशवासियों से भी टीका लगवाने की अपील की. इसके बाद कोवैक्सिन, कोरवेबेक्स जैसी कई अन्य वैक्सीन भी आईं और लगाई गईं। सरकार ने इसे बड़े पैमाने पर खरीदा और जनता को मुफ्त में सप्लाई किया। पूरे देश में टीकाकरण शिविर आयोजित किये गये। वैक्सीन लेने के लिए लोगों को लंबी लाइनों में खड़ा होना पड़ा. वैक्सीन प्रमाणपत्र वितरित किए गए और कई सरकारी सेवाओं के लिए यह प्रमाणपत्र अनिवार्य कर दिया गया। यह प्रमाणपत्र आज भी हम सभी के मोबाइल फोन या दराज में मौजूद है। ये सब हुए कई साल बीत गए. कोरोना की कभी-कभी छोटी लहर की चर्चा के अलावा कोई बड़ी लहर नहीं आई है. ऐसा लगता है कि वैक्सीन का असर हुआ है. कोरोना के नए-नए वेरिएंट आते हैं और बिना कोई खास असर दिखाए वापस चले जाते हैं. पुराने वेरिएंट को वैक्सीन से खत्म कर दिया गया है और इम्यूनिटी बढ़ने से नए वेरिएंट को अपनी ताकत दिखाने और बढ़ने का मौका नहीं मिल रहा है. लेकिन दूसरी ओर, अचानक दिल का दौरा, हार्ट अरेस्ट और ब्रेन स्ट्रोक के मामले बढ़ रहे हैं. आए दिन हमें ऐसी खबरें और वीडियो पढ़ने, देखने और सुनने को मिलते हैं. न केवल भारत में, बल्कि ब्रिटेन सहित अन्य देशों में भी, जहां कोविशील्ड का आविष्कार किया गया था। स्ट्रेजेनेका कंपनी ने इसे सबसे पहले कहां बनाया था और किन देशों से लाइसेंस या सहयोग लेकर अन्य देश और उनकी वैक्सीन कंपनियां इसका उत्पादन कर रही हैं। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया इनका सबसे बड़ा उत्पादक है और इसकी बनी वैक्सीन पूरी दुनिया में सप्लाई होती है. लेकिन अब एस्ट्राजेनेका मुश्किल में है और उसकी परेशानी का साया सीरम इंस्टीट्यूट से लेकर भारत सरकार तक दिखाई दे रहा है. चूंकि इन दिनों भारत में लोकसभा चुनाव चल रहे हैं कोविशील्ड पर एस्ट्राजेनेका के कबूलनामे से विपक्ष को

सरकार के खिलाफ नया हथियार मिल गया है. कोविशील्ड के बारे में खतरनाक तथ्य सामने आने से उन विपक्षी दलों को भी नई ताकत मिलेगी जिनके नेताओं ने शुरूआत में इस वैक्सीन का मजाक उड़ाया था और इसे बीजेपी की वैक्सीन बताकर इसे लगवाने से इनकार कर दिया था। हालाँकि बाद में जनता के दबाव में उन्होंने वैक्सीन लगवा ली, लेकिन कई आम लोगों की तरह वैक्सीन को लेकर उनका संदेह पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था. इनमें समाजवादी पार्टी के प्रमुख का नाम प्रमुख है. उनकी पार्टी इस चुनाव में भारत गठबंधन का हिस्सा है। जब से एस्ट्राजेनेका द्वारा अदालत में वैक्सीन की खामियों को स्वीकार करना मीडिया में उजागर हुआ है, जिस महिला की कथित तौर पर कोविशील्ड लेने के बाद मृत्यु हो गई, उसके माता-पिता ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के खिलाफ मामला दर्ज करने का फैसला किया है, जिसके एक दिन बाद भारत में वैक्सीन बेचने वाली एस्ट्राजेनेका ने अदालत में स्वीकार किया कि उनका कोविड शॉट एक दुर्लभ दुष्प्रभाव का कारण बन सकता है। . एस्ट्राजेनेका का कबूलनामा सामने आने के बाद अभिभावकों को न्याय की उम्मीद है. नीति आयोग के सदस्य डॉ. वीके पॉल ने एक सम्मेलन बैठक में कहा, सीरम इंस्टीट्यूट के कोविशील्ड के दुष्प्रभाव नगण्य से भी कम हैं। कोविड-19 एक घातक बीमारी है, और हम सभी को जीवन में बाद में अनावश्यक स्थितियों से बचने के लिए उचित सावधानी बरतनी चाहिए। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कोरोना और कोविशील्ड को लेकर चचाओं से भर गए हैं। ऐसा लगता है मानों सबको अपना गुस्सा निकालने का मौका मिल गया हो. कोई इसके लिए एस्ट्राजेनेका और अदार पूनावाला को जिम्मेदार ठहरा रहा है तो कोई इसे चुनावी बांड चंदे और विदेश में कॉरपोरेट जगत के लालच से जोड़ रहा है. कोरोना महामारी को लेकर अब भी लोगों में संदेह होने लगा है। वे पूछ रहे हैं कि क्या यह पश्चिमी अमीरों और शासकों की कोई सुनियोजित साजिश नहीं थी? जिसके तहत जनसंख्या को कम करने और फामेर्सी, अस्पताल, बीमा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे व्यवसायों को बढ़ावा देने के लिए दुनिया के करोड़ों लोगों को गिनी पिग बनाया गया और उनके जीवन और स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया गया और इसके लिए चीन जिम्मेदार है। आपको यह जानना चाहिए कि किसी भी दवा का मानव के ईलाज में प्रयोग करने से पहले क्लिनिकल परीक्षण किया जाता है वैक्सीन का साइड इफेक्ट क्लिनिकल परीक्षण में नगण्य है सबसे पहले किसी रसायन जो कि टीके या दवा के लिए प्रयोग किया जाना है का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जाता है। यदि प्रयोगशाला में सफलता मिल जाती है, तो इसके बाद इसका प्रयोग छोटे जानवरों (जैसे चूहा, बिल्ली, आदि) पर किया जाता है। यदि इन पर भी प्रयोग सफल होता है तो यही प्रयोग विभिन्न जाति के बंदरों पर किया जाता है। इस परीक्षण में इस दवा के दुष्परिणाम तथा दवा के विषैलेपन का भी परीक्षण किया जाता है। यदि यहां तक सफलता मिल जाती है तो उसके बाद दवा नियंत्रक तथा अन्य नियामक एजेंसियों से मानव पर उपरोक्त दवा के परीक्षण की इजाजत मांगी जाती है। इस इजाजतनामे में मानव परीक्षण की जरूरत किस प्रकार का परीक्षण किया जायेगा, कौन-कौन शोधार्थी इसमें शामिल होंगे और किन-किन अस्पतालों के माध्यम से यह शोध किया जायेगा, इस सब का विवरण देना होता है। साथ ही हर चरण के परीक्षण के बाद सम्पूर्ण विवरण नई दवा या टीके का परीक्षण करने वाली कम्पनी को उक्त एजेंसी को देना होता है।मानव परीक्षणों में हर दवा को तीन चरणों में गुजरना होता है।पहला चरण क्लीनिकल ट्रायल होता है, जिसमें दवा की सुरक्षा तथा शरीर में प्रतिरोधक क्षमता तथा अलग-अलग मात्रा में दवा की खुराक देकर दवा की खुराक (डोज) निर्धारित की जाती है। पहले चरण के परीक्षण में 10 से 20 तक स्वस्थ मानवों की आवश्यकता होती है, तथा इस पूरी प्रक्रिया में दो वर्ष का समय लगता है। दूसरे चरण में यही प्रक्रिया 300 से ऊपर स्वस्थ मानवों में दोहरा कर परीक्षण किया जाता है। इस प्रक्रिया में भी दो वर्ष से ऊपर का समय लगता है।तीसरे चरण में यह दवा उस बीमारी के हजारों रोगियों को दी जाती है, जिसे मर्ज के लिए यह दवा तैयार की गयी है। इस तीसरे चरण की खास बात यह है कि जितने मरीजों पर इस दवा का प्रयोग किया जा रहा है, उतने ही मरीजों पर प्लेसिबो (जो कि नमकीन पानी होता है) का परीक्षण किया जाता है। परीक्षण के बाद दोनों समूहों, जिन्हें दवा दी गयी है और जिन्हें प्लेसिबो दिया गया है, के नतीजों की तुलना की जाती है और सारी सूचना नियंत्रक एजे ंसी को दी जाती है। अब यहनियंत्रक एजेंसी देखती है कि क्या दवा में रोग को पूर्ण तथा समाप्त करने की क्षमता है या नहीं। साथ ही उसके मानवशरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन भी किया जाता है। फरवरी 2021 में, त्रिनिदाद और टोबैगो ने अपना राष्ट्रीय COVID-19 टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया। वैक्सीन कार्यकर्ता ChAdOx1 ल्लउङ्गश-19 (ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका (कोविशील्ड, हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे, भारत) प्राप्त करने वाले पहले समूह में थे, जो राष्ट्रीय स्तर पर पहली COVID-19 वैक्सीन उपलब्ध थी। आई बी एम कार्पोरेशन, अर्मोन्क, एनवाई, यूएसए द्वारा किया गया परीक्षण में इस वैक्सीन की सुरक्षा जांच की गई, स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता द्वारा प्राप्त टीकाकरण के बाद रिपोर्ट की गई टीकाकरण के बाद सिस्टमगत और स्थानीय अध्ययन दस्तावेजों का एक क्रॉस-अनुभागीय अध्ययन , चिकित्सा और दस्तावेजीकरण दस्तावेज -19 से संबंधित इतिहास और पहले के अनुभव में दिए गए स्थानीय और सिस्टमगत अध्ययन से संबंधित डेटा के माध्यम से जांच किया गया था। इस परीक्षण की पहली और दूसरी खुराक प्राप्त करने के 48 घंटे बाद, 687 अभ्यास (पुरुष = 275; महिला = 412) में बुखार, शरीर में दर्द, ठंड लगना, मतली, मैलगिया, सिरदर्द, अस्वस्थता , थकान की व्यापकता का आकलन किया गया और पहली खुराक की तुलना में दूसरी खुराक के प्रशासन के 48 घंटे बाद अन्य प्रणालीगत खुराक में काफी गिरावट आई अधिकांश प्रतिकूल घटनाओं में साइड इफेक्ट की रिपोर्ट दर <0.50% थी, जो सभी पुरुष एवं महिला के लिए वैक्सीन के लिए कोविशील्ड सुरक्षित है। कोरोना कब खत्म हो गया और इसपर अभी भी राजनीति चालू है, इस पर राजनीति नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ये आम लोग के स्वास्थ्य से जुड़ा है जानकारी के अभाव लोग घबरा जाएंगे।

संपादकीय

जवाबदेह बनें संस्थाएं

सर्वोच्च अदालत ने लोक सभा चुनाव से पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय को लेकर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से सवाल किया और जांच एजेंसी से इसका जवाब मांगा। अदालत ने पांच सवाल पूछे और उनके जवाब लेकर आने का निर्देश दिया। दो सदस्यीय बेंच ने कहा कि स्वतंत्रता बहुत महत्त्वपूर्ण है। आखिरी सवाल गिरफ्तारी के संबंध में है। न्यायिक कार्यवाही के बिना, जो कुछ हुआ उसके संदर्भ में कार्यवाही कर सकते हैं। अदालत ने पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के लिए कहा कि पक्ष और विपक्ष में निष्कर्ष हैं। हमें बताएं कि केजरीवाल का मामला कहां है। क्या हम सीमा को बहुत विस्तृत बनाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि जो व्यक्ति दोषी है, उसका पता लगाने के लिए मानक समान हों। केजरीवाल 21 मार्च से शराब नीति घोटाले के मामले में न्यायिक हिरासत के तहत दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। केजरीवाल इस गिरफ्तारी से पहले ही सार्वजनिक तौर पर कई मर्तबा दोहरा चुके थे कि मोदी सरकार लोक सभा चुनाव के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर सकती है। दिल्ली सरकार के नेता पहले ही जेल में हैं। माना जा रहा है कि आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता विभिन्न राजनैतिक दलों के लिए चुनौती बनती जा रही है। सत्ताधारी दल की यह जिम्मेदारी है कि वह अन्य विपक्षी दलों के साथ पूर्वाग्रह भरा बर्ताव करने से बचे। दंड प्रक्रिया संहिता के अध्याय 5 में स्पष्ट प्रावधान है, कोई भी गिरफ्तारी इसके अधीन ही होनी चाहिए। केजरीवाल अपनी गिरफ्तारी और हिरासत को अवैध बता रहे हैं। यह कहना गलत नहीं है कि चुनाव के दरम्यान लगातार गिरफ्तारियां हो रही हैं तथा नोटिस भी थमाए जा रहे हैं या छापे तक डाले जा रहे हैं। दरअसल, केजरीवाल की गिरफ्तारी की टाइमिंग को लेकर सवाल उठ रहे हैं, जिनके उत्तर मिलने चाहिए। यह स्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उचित नहीं कही जा सकती। बेशक, न्यायिक व्यवस्था अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। सार्वजनिक जीवन में रहने वाला कोई भी राजनीतिज्ञ यदि किसी तरह के घोटाले में शामिल है तो उसे दंडित करने के लिए अदालतें हैं। अदालतोंपर पहले ही लंबित मामलों का दबाव है। उस पर मोदी सरकार लगातार आरोपियों को भाजपा में शामिल कर उन्हें क्लीन चिट देने का काम कर स्पष्ट संकेत दे रही है। यह अपने आप में गलत संदेश दे रहा है। बावजूद इसके अंतिम फैसला तो जनता के हाथ में है, जो मूकदर्शक जरूर है, लेकिन अपना निर्णय समय आने पर देगी।

चिंतन-मनन

राजा की उदारता

राजा भोज के नगर में एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे। एक दिन गरीबी से परेशान होकर उन्होंने राजभवन में चोरी करने का निश्चय किया। रात में वे वहां पहुंचे। सभी लोग सो रहे थे। सिपाहियों की नजरों से बचते हुए वह राजा के कक्ष तक पहुंच गए। स्वर्ण, रत्न, बहुमूल्य पात्र इधर-उधर पड़े थे। किंतु वे जो भी वस्तु उठाने का विचार करते, उनका शास्त्र ज्ञान उन्हें रोक देता। ब्राह्मण ने जैसे ही स्वर्ण राशि उठाने का विचार किया, मन में स्थित शास्त्र ने कहा- स्वर्ण चोर नर्पगामी होता है। जो भी वे लेना चाहते, उसी की चोरी को पाप बताने वाले वाक्य उनकी स्मृति में जाग उठते। रात बीत गई पर वे चोरी नहीं कर पाए। सुबह पकड़े जाने के भय से ब्राह्मण राजा के पलंग के नीचे छिप गए। महाराज के जागने पर रानियां व दासियां उनके अभिवादन हेतु प्रस्तुत हुई। राजा भोज के मुंह से किसी श्लोक की तीन पंक्तियां निकली। फिर अचानक वे रुक गए। शायद चौथी पंक्ति उन्हें याद नहीं आ रही थी। विद्वान ब्राह्मण से रहा नहीं गया। चौथी पंक्ति उन्होंने पूर्ण की।

महाराज चौंके और ब्राह्मण को बाहर निकलने को कहा। जब ब्राह्मण से भोज ने चोरी न करने का कारण पूछा तो वे बोले- राजन्, मेरा शाछ्व ज्ञान मुझे रोकता रहा। उसी ने मेरी धर्म रक्षा की। राजा बोले- सत्य है कि ज्ञान उचित-अनुचित का बोध कराता है, जिसका धर्म संकट के क्षणों में उपयोग कर उचित राह पाई जा सकती है। राजा ने ब्राह्मण को प्रचुर धन देकर सदा के लिए उनकी निर्धनता दूर की दी।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस : स्वतंत्रता के पहले सुधार जरूरी

आनन्द पुरोहित

पांच सौ सात सौ में प्रेस कार्ड और पांच सात लाख में अखबारों पत्र पत्रिकाओं द्वारा सम्मान की लॉलीपाप देने और मिलने की खबरें और सूचनाओं के बीच हम सब आज 3 मई को भारत में भी विश्व प्रेस दिवस मना रहे हैं। जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस घोषित करने के बाद विश्व प्रेस दिवस के रूप में ही जाना जाता है। प्रेस के हालात आज ये हैं कि, रील बनाने के लिए चौराहे पर नाचने वाली से लगाकर छोटे बड़े नेता अभिनेता या सोशल साइट्स के तथाकथित सेलिब्रिटी मतलब सीधे साफ शब्दों में कहें तो हर कोई ऐरा गैरा एक्स, वाय, झेड भी प्रेस (जिसके लिए वर्तमान में प्रचलित शब्द मिडिया)..... पर उंगली उठाता रहता हैं। .....चाहे उनका कृत्य गलत, अव्यावहारिक, असामाजिक या आपराधिक अथवा गैर जिम्मेदाराना ही क्यों न हों.... वे अपनी गलती अपनी कमी नही मान मीडिया को ही दोषी ठहराते हैं।.... आइना दिखाने के लिए उधर मीडिया में भी कुछेक जमीर वाले अभी भी है, जो उनका पुरजोर विरोध करते उनको ही नहीं जन जन को उनकी हैसियत .....बोलें तो उनकी औकात उनके मुंह पर ही बता देते हैं.... परन्तु धीरे धीरे वे भी बहुत कम होते जा रहे हैं। और उनके लिए ही अत्यंत जरुरी है प्रेस स्वतंत्रता। भारत में प्रेस या कहें मीडिया एंव पत्रकारों की स्वतंत्रता अथवा आजादी भारतीय संविधान के अनुच्छेद-19 में भारतीयों को दिए गए अभिव्यक्ति की आजादी के मूल अधिकार से सुनिश्चित होती है। प्रेस की इसी आजादी को विश्व स्तर पर सम्मान देने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा 3 मई को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस घोषित किया जिसे विश्व प्रेस दिवस के रूप में भी जाना और मनाया जाता है। वैसे हम भारत के पत्रकार हर साल 16 नवंबर को हमारा राष्ट्रीय प्रेस दिवस भी मनाते हैं क्योंकि उस दिन हमारे यहां पीसीआई की स्थापना जो हुई थी।

आज की पीढ़ी के जो पत्रकार हैं उनमें से शायद अधिकांश को ....पीसीआई क्या है... यह ही पता न हो .... जिसके चलते वह भी यहां दिया जाना वांछित ही है। हालांकि उनकी इस अपरिचितता के लिए इन पत्रकारों का कोई दोष नहीं है क्योंकि इन्हें बताया ही नहीं गया या इनकी मनोवृत्ति ऐसी कर दी कि इन्होंने जानना भी नहीं चाहा..... सबसे पहले और सबसे तेज के चक्कर में ये यहां वहां से कोर्स कर कर के प्रेस का प्रतिनिधित्व करने पत्रकार बने या जैसा कि मैंने शुरूआत में कहा पांच सौ सात सौ में कार्ड लेकर फील्ड में आ गए.... पढ़ने जानने की, न लालसा रही न जिज्ञासा इसलिए नहीं जानते। खैर....

प्रेस स्वतंत्रता के संदर्भ में तो वर्तमान समय में दो स्तरीय स्थिति है.... एक जो लिखते हैं दूसरे जो लिखाते है.....सीधे सीधे कहे तो एक अखबार मालिक और दूसरे उनके कर्मी जिनमें संपादक, उप संपादक, प्रतिनिधि और रिपोर्टर जैसे अन्य सभी जमात शामिल, तो प्रेस स्वतंत्रता किसके लिए ? क्या दोनों के लिए ? नये जमाने की प्रेस जिसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहा जा रहा उसकी बात करना तो बेमानी ही है.उसका कोई औचित्य हीं नहीं है... क्योंकि जब 1991 में यूनेस्को ने विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस का निर्णय लिया था तब इसका अस्तित्व ही नहीं था ....और वर्तमान में भी नब्बे प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकारिता के मापदण्डों तक दस प्रतिशत भी नहीं पहुंच पाया है ।... ये तो बस बहसबाजी और बाईट मीडिया बन गया है। आलोचको की मानें तो उनके अनुसार वहां... बाइट पत्रकारिता... होती है... बाईट ले ली बन गई रिपोर्ट हो गई पत्रकारिता.... तो 1991 में विश्व प्रेस स्वतंत्रता की बात अखबारों के मद्देनजर ही कहीं गई थी । हालांकि अब इलेक्ट्रॉनिक के बाद एक और सोशल मीडिया भी प्रेस की जमात में शामिल होने को तत्पर है... इसलिए प्रेस शब्द के आयाम का विस्तार तो जरूरी हो गया है। इसको पुनः परिभाषित भी करना होगा। सिर्फ अखबारों को लेकर प्रेस स्वतंत्रता की बात में तो पिछले वर्षों चर्चित एक व्यंग्यात्मक जुमला कि... जो छप कर बिकते थे अब बिक कर छपेंगे बहुत कुछ कह गया है....संदर्भ सीमित था लेकिन अर्थ अनन्त है। ... हालांकि हकीकत यह भी है कि, कुछेक ऐसे भी हैं ....जो न छपकर बिकते हैं, न बिककर छपते हैं ....बस चलते हैं....मतलब छपते ही नहीं तो और क्या... साल में दो चार छः बार भी छप गए तो छप गये नहीं तो चल तो रहे ही है।..... सरकारी संस्थान जैसे मध्यप्रदेश जनसंपर्क विभाग के प्रकाशन भी इसमें शामिल हैं... और ऐसे सैंकड़ों नहीं हजारों, लाखों है भारत में। इनमें से अधिकांश स्वयं सिद्ध नही होकर प्लांट किये गये है और लगातार किये जा रहे है.... कुछ विशेष उद्देश्य प्राप्ति के लिए कुछ क्षेत्र विशेष के सक्षमों द्वारा.... और इन तथाकथित सक्षमों द्वारा ही पूर्ण जिम्मेदारी एंव ईमानदार से पत्रकारिता के मानकों को निभाते प्रेस की मयार्दा और गरिमा को कायम रखने वाले अखबारों को बांधने के जतन किए जा रहे हैं.. चाहे नीतियों का हवाला देकर दबाव बनाते अथवा सुविधाओ के साथ प्रलोभन देकर... मतलब साम दाम दण्ड भेद भरपूर चल रहा है प्रेस की आजादी को दबाने में। हालांकि ये तथाकथित सक्षम प्रेस के समर्थन से ही सक्षम बन पायें हैं, नहीं तो इनकी हैसियत कुछ भी नहीं थी...और अब उस पर ही उंगली उठा उसे बांधने का प्रयास कर रहे..यह भूल कर की प्रेस का स्वरूप बहुत विराट है....उसे किसी भी तरह के बंधन में बांधा जाना संभव नहीं है, परन्तु ये चंद प्रेस करें जयचंदी स्वभाव वालों से मिल उन्हें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभान्वित कर या प्रलोभन देकर, उनके साथ अपना यह कुत्सित प्रयास कर रहे... इसलिए ही प्रेस स्वतंत्रता की जरूरत है.... लेकिन अभी उसके पहले प्रेस के इन लोभी जयचंदो की पहचान कर उन्हें हटाने की जरूरत है। भारत में इसके लिए ही शायद पीसीआई का गठन किया गया जिसकी स्थापना दिवस को हम राष्ट्रीय प्रेस दिवस के रूप में मनाते हैं। जैसा मैंने उपर बताया। पर पीसीआई अर्थात प्रेस कौंसिल ऑफ इंडिया भी अपनी स्थापना के उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया इसलिए वो भी परिवर्तनीय है। और विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने के पहले प्रेस से दूषित लोभी जयचंदो को किनारे कर अखबार मालिकों और पत्रकारों को स्व आचार संहिता बना उसके अनुरूप आचरण सुधार की आवश्यकता है। दो शब्दों में कहूं तो स्वतंत्रता के पहले स्वच्छता।

भारत एवं कनाडा के रिश्ते खतरनाक मोड़ पर

ललित गर्ग

कनाडा में रविवार को वहां के प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो की मौजूदगी में खालसा दिवस समारोह के दौरान खालिस्तान समर्थक नारे लगाए जाने के बाद भारत सरकार जो सख्ती दिखाई है, वह आवश्यक एवं समयोचित कदम है। इस घटना पर भारत का चिंतित होना एवं कनाडा को चेताया जाना स्वाभाविक है। विदेश मंत्रालय में कनाडा के उप-उच्चायुक्त को तलब कर इस मामले में गहरी आपत्ति जताई गई है। कनाडा सरकार ने अपने राजनीतिक हितों के लिये अनेक बार भारत विरोधी घटनाओं में संदेहास्पद एवं विवादास्पद भूमिका का निर्वाह करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की मयार्दाओं को धुंधलाया है। कनाडा की धरती से खालिस्तानी समर्थक अलगाववाद, कट्टरपंथ और हिंसा को बढ़ावा दिया जाता रहा है। इस तरह की घटनाओं से कनाडा में अपराध का माहौल बना हुआ है। इससे कनाडा के नागरिकों के लिए भी खतरा पैदा हो गया है। जिससे भारत में भी स्थितियां संकटपूर्ण बनी है। पिछले साल खुद टूडो ने सार्वजनिक रूप से निज्जर हत्याकांड में भारत के शामिल होने का निराधार आरोप लगाया था। भारत के मांगने के बाद भी आज तक उनकी सरकार इस आरोप के पक्ष में कोई सबूत नहीं दे पाई है। जस्टिन टूडो ने आरोप लगाकर दोनों देशों के बीच विवाद खड़ा कर दिया था। भारत ने आरोप को बेबुनियाद बताते हुए खारिज कर दिया था। इसके बाद से कनाडा और भारत के संबंधों में खटास आ गई और दोनों देशों के रिश्ते सुधरने की बजाय खतरनाक मोड़ पर पहुंच गये हैं।

रविवार के खालसा दिवस समारोह में न केवल खालिस्तान समर्थक नारे लगाए गए बल्कि ऐसे बैनर प्रदर्शित किए गए, जिनमें भारत-विरोध के त्रासद एवं राष्ट्र-विरोध के भ्रामक, झूठे एवं बेबुनियाद आरोप थे। अफसोस और चिंता की बात यह रही कि कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो ने तो इन सब भारत-विरोधी घटनाओं को रोकने की या इन्हें गलत बताने की कोई कोशिश की। इस पूरे मामले में टूडो का व्यवहार आपत्तिजनक बना, दो देशों के बीच खटास घोलने वाला एवं राजनीतिक अपरिपक्वता का रहा। जिसे दोनों देशों के राजनयिक पैमाने पर उचित नहीं कहा जा सकता। इस तरह कनाडा अपने देश की राजनीतिक जरूरतों के चलते भारत के साथ अपने रिश्ते इस मोड़ पर ले आया हैं, जहां उनके बीच विश्वास, भरोसे, आपसी सहयोग और संवाद की कमी है, तो यह अकारण नहीं है।

भले ही लगभग आठ लाख कनाडाई सिखों की वहां की राजनीति में सक्रिय भागीदार हैं। सिख समुदाय की जरूरतों एवं उनके शांतिपूर्ण जीवन के लिये कनाडा सरकार की प्रतिबद्धता में कोई आपत्ति नहीं हैं। सिख समुदाय के मौलिक अधिकारों व स्वतंत्रता की रक्षा करने के वायदे यदि वहां की सरकार करती है तो अच्छी बात है। भले ही कनाडा सरकार सिखों के सामुदायिक केंद्रों, गुरुद्वारा समेत पूजास्थलों की सुरक्षा को और मजबूत करने के साथ भारत एवं कनाडा के बीच उड़ानें और रूट बढ़ाने को लेकर भारत के साथ नए समझौते करें, लेकिन इन स्थितियों के बीच खालिस्तानी अलगाववाद को प्रोत्साहन देना भारत के लिये असहनीय है। भारत बार-बार इस बात को दोहरा रहा है कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस तरह अलगाववादी और अतिवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना न केवल दोनों देशों के रिश्तों के लिए बल्कि खुद कनाडा के लिए भी खतरनाक है। भारत जिस तरह से लम्बे समय तक खालिस्तानी आतंकवाद को झेला है, कनाडा में इन तत्वों को प्रोत्साहन देकर कनाडा आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र बन सकता है, जो उसके लिए नुकसानदेह ही साबित होने वाला है।

निश्चित ही कनाडा में खालिस्तानी आतंकी फल-फूल रहे हैं। खालिस्तानी न केवल भारतीय राजनयिकों को धमका रहे हैं बल्कि हिंदू मंदिरों को भी निशाना बना रहे हैं। कनाडा की धरती पर हर किस्म के खालिस्तानी चरमपंथी ही नहीं पल रहे हैं बल्कि वहां भारत से भागे गैंगस्टर और नशे के तस्कर भी शरण पा रहे हैं। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद में भारत ने कनाडा को जो खरी-खोटी सुनाई, वह इसलिए आवश्यक थी, क्योंकि वहां की टूडो सरकार अपने भारत विरोधी रवैये से बाज नहीं आ रही है। वह जिस तरह खालिस्तानी अतिवादियों को संरक्षण दे रही है, उसकी मिसाल यदि कहीं और मिलती है तो वह पाकिस्तान में। कनाडा अपने भारत विरोधी रवैये के कारण पाकिस्तान सरीखा बनता जा रहा है। कनाडा अपने हितैषी एवं पडोसी देशों से दूरियां बना रहा है। खालिस्तान समर्थन एवं प्रोत्साहन के चलते कनाडा में फिलहाल कुछ भी ठीक नहीं चल रहा। अपने देश के साथ दुनियाभर में वह आलोचकों के निशाने पर हैं। कनाडा में खालिस्तान समर्थकों पर नियंत्रण रखने में कथित नाकामी के चलते टुडो को अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर विरोध का सामना करना पड़ रहा है। इसी के चलते जी-20 बैठक में उन्हें भारत और सदस्य देशों का ह्यठंडाह्न रिस्पांस मिला। भारत में खास अहमियत नहीं मिलने से खिसियाए टुडो को कनाडा के मीडिया ने भी आड़े हाथ लिया है। टुडो सरकार पर भारत के साथ रिश्तों को नुकसान पहुंचाने और व्यापार वार्ता के बारे में अंधेरे में रखने के आरोप भी लगे हैं। घरेलू राजनीतिक हितों के लिए टुडो भारत के साथ लड़ाई मोल लेकर अपने देश का भारी आर्थिक नुकसान कर रहे हैं। यह सर्वविदित है कि भारत अब दुनिया की एक आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। कनाडाई में उत्पादित वस्तुओं के निर्यात और व्यापार में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है और दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव का असर यहां की इकोनॉमी पर पड़ रहा है। भारत की नाराजगी बेवजह नहीं है, क्योंकि कनाडा भारत के विरोध में लगातार सक्रिय हैं, कनाडा ने ही किसानों के आंदोलन के समर्थन में अतिश्योक्तिपूर्ण सहयोग होने दिया।

सांख्य का क्रियात्मक रूप है योग

प्राचीन काल में हमारे ऋषियों ने योग को अनुभव किया और इसके महत्व को पहचाना. इसके बाद उन्होंने समाज के कल्याण के लिए इस पद्धति को विकसित किया. उन्होंने इसे इतने सुंदर और तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया कि यह आधुनिक समाज में भी लोकप्रिय है.

भारतीय दर्शन को षडदर्शन जैसे– मीमांसा, वेदांत, न्याय, वैशेषिक, सांख्य और योग कहे जाते हैं. सांख्य और योग, प्राचीन वैदिक तथा वेदांत फिलॉसफी हैं. इन दोनों दर्शनों ने भूमंडल के सभी विद्वानों को अपने दर्शन से चकित कर दिया है. सांख्य के आचार्य ऋषि कपिल और योग के हिरण्यगर्भ हैं. दोनों दर्शन एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं. योग सांख्य का क्रियात्मक रूप है. यह तत्व ज्ञान को स्वयं अनुभव करना सिखा कर मनुष्य को अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाता है.

आयुर्वेद का स्तंभ है योग

हिरण्यगर्भ के सूत्रों के आधार पर महर्षि पतंजली ने योग सूत्र का निर्माण किया था. पतंजली मुनि के अनुसार योग से अंत-करण, पद से वाणी और आयुर्वेद से मल को दूर किया जाता है. योग को आयुर्वेद का मूलाधार स्तंभ भी माना जाता है. यह योग प्रक्रिया के आधार पर ही है. प्राचीन काल में ऋषियों ने पहले इससे स्वयं साक्षात्कार किया और इसे अनुभव किया. इसके बाद लोक समाज के लिए इसे ग्राह्य एवं उपयोगी बनाने के लिए क्रमिक अभ्यास की विधियां विकसित की. इसके ज्ञान को उन्होने इस सुंदर और तार्किक तरीके से प्रस्तुत किया कि यह आज वैज्ञानिक युग में भी लोकप्रिय है. विद्वानों ने इसे आधुनिक समाज की आवश्यकताओं एवं जीवनशैली के अनुरूप बनाने का प्रयास किया है, जिससे लोग व्याधि मुक्त, तनाव मुक्त, स्वस्थ, संतुष्ट एवं श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर सकें. योग दर्शन पर भाष्य रची गयी हैं, जिनमें व्यास भाष्य, तत्व बैशारदी, योग वर्तिका, योग सार आदि प्रमुख हैं.

योग की हैं अनेक पद्धतियां – पतंजली मुनी का अष्टांग योग, महर्षि धेरंड द्वारा रचित धेरंड संहिता में सप्तांग योग, गोरखनाथ रचित गोरक्षशतक में षडांग योग की चर्चा है. इसका अर्थ यह है कि समय एवं आवश्यकता के अनुसार लोगों ने योग की कुछ पद्धतियों को प्रचलित किया. परंतु आधुनिक काल में पतंजली का अष्टांग योग ज्यादा लोकप्रिय है. ये यम(आत्मसंयम), नियम (आत्मशोधन के नियमों का पालन), आसन (शारीरिक मुद्रा), प्राणायाम (श्वास–प्रश्वास का नियमन), प्रत्याहार(इंद्रियों को उसके विषय से रोकना), धारणा(चिंतन), ध्यान (तल्लीनता) और समाधि(पूर्ण अंतरतन्मयता) हैं. इस प्रकार योग ऐसी पद्धति है, जिससे व्यक्ति अपने भीतर छिपी शक्तियों को संतुलित रूप से विकसित कर सकता है. यह पूर्ण स्वानुभूति कराने का साधन प्रदान करता है. आत्मा को सर्व व्यापी परमात्मा से जोड़ने के साधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है. इसलिए महर्षि पतंजली को चित्त वृत्तियों का निरोध बताया है.

जीवन ही योग है

सरलतम शब्दों में जीवन ही योग है. हमारे दैनिक कर्म ही योग हैं. योग का लक्ष्य समन्वित व्यक्तित्व का विकास है. यह शारीरिक, मानसिक उत्थान के लिए है. दुखी मानवता के लिए यह मनो दैहिक चिकित्सा पद्धति के रूप में एक वरदान है. सत्य खोजने वालों के लिए ईश्वरानुभूति की सीधी राह है. वस्तुत- योग पूर्णता की योजना है. योग आत्मसाक्षात्कार का एक मार्ग है. योग के कई प्रकार होते हैं, जिनमें – जप योग (अपने मन को एक पवित्र नाम या अक्षर पर केंद्रित कर इसका सतत उच्चरण करना) कर्मयोग (फल की चिंता किये बगैर कार्य करना), ज्ञानयोग (आत्मा और अनात्मा में भेद), भक्तियोग (ईश्वर के प्रति श्रद्धा भाव के साथ समर्पण), राजयोग (अष्टांग योग), स्वर योग या नाद योग(श्वास के द्वारा संयोग) हैं.

वर्तमान में योग को रोग निरोधक, स्वास्थ्य वर्धक और रोग निवारण मूल्यांकन हेतु भारत और विदेशों में इस पर योजनाबद्ध तरीके से अनुसंधान हो रहा है. पिछले वर्ष फ्रांस में सरकार ने यूनिवर्सिटी स्तर तक योग की पढ़ाई को स्वीकृति दे दी है.

भारत में कुछ प्रसिद्ध संस्थान जैसे– शरीर क्रिया विज्ञान व संबंधित विज्ञान रक्षा संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स), राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य तथा तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निमहांस), विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान, कैवल्य धाम योग संस्थान, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर आदि योग के प्रभावों के संबंध में गहन अनुसंधान कर रहे हैं.

हर दिन नहीं कर सकती एक सा व्यायाम

तेलुगू फिल्मों के बाद बॉलीवुड में बर्फी व फटा पोस्टर निकला हीरो से पहचान बनानेवाली इलियाना डिक्रूज आकर्षक फीगर के लिए भी जानी जाती हैं. जिम में वर्कआउट में वह यकीं नहीं रखतीं, बल्कि रोजाना योग के साथ कुछ आम एक्सरसाइज अपनाती हैं. फिटनेस के बारे में बता रही हैं इलियाना.

सबको लगता है कि मैं बहुत दुबली हूं, क्योंकि मैं खाती-पीती नहीं, जबकि सच यह है कि मैं बहुत फूडी हूं. मेरा मेटाबॉलिज्म स्ट्रांग है, इसलिए मेरा वजन नियंत्रित रहता है. बचपन से ही हम भाई-बहन दुबले-पतले रहे हैं, इसलिए कभी वजन को लेकर दिक्कत नहीं हुई. घर के कामों में भी रुचि रखती थी. खास कर जब मेड नहीं आती, तो खुद से फ्लोर साफ करती थी.

समुद्र किनारे जॉगिंग पसंद

जिम में वर्कआउट तो बिलकुल पसंद नहीं. समुद्र किनारे जॉगिंग पसंद है. बॉलकोनी में जंप करना अच्छा लगता है. 2011 में शूटिंग के दौरान घुटने में चोट लगी थी, जिसकी सजर्री भी करानी पड़ी. इसलिए हफ्ते में तीन किलोमीटर से ज्यादा नहीं दौड़ती. हफ्ते में दो दिन स्वीमिंग-डांसिंग और 100 लैप्स मैनेज करती हूं. ब्रेस्ट, बैक और बटरफ्लाइ स्ट्रोक को अल्टरेट डे पर करती हूं. मेरा जैसा शरीर है, इसमें इंटरवल ट्रेनिंग से फायदा होता है. हर दिन एक-सा वर्कआउट नहीं कर सकती.

मेरी डायट

मुझे केक देख कर तो कंट्रोल नहीं होता. हां, बर्गर और पिज्जा से दूर ही रहती हूं. रसगुल्ला, रसमलाई और डार्क चॉकलेट पसंद है. मेटाबॉलिज्म को को बरकरार रखने के लिए दिन में चार से पांच छोटे-छोटे मील लेती हूं. ब्रेकफास्ट में एक गिलास फ्रूट जूस, दो अंडों का पोच और दो व्हीट ब्रेड कॉफी के साथ लेती हूं. दोपहर एक बजे लंच में 2 चपाती चिकन या फिश के साथ. इसमें वेजीटेबल, खासतौर से दाल और फूलगोभी पसंद है. डिनर में वही खाती हूं, जो लंच में. ब्रेकफास्ट व लंच के बीच नारियल पानी या नींबू पानी पीती हूं. शाम को सिर्फ चाय और नमकीन बिस्किट.

योग मेरे लिए खास

जल्दी सोती हूं और जल्दी उठती हूं. लेट नाइट पार्टी अवॉयड करती हूं. मेरी फिटनेस में योग सबसे खास है. इसकी ट्रेनिंग मैंने भरत ठाकुर से ली है. हर दिन सूर्य नमस्कार के 11 आसन करती हूं. एक्सरसाइज में बदलाव भी करती हूं.

गरमी में पीएं हेल्दी ड्रिंक्स

चिलचिलाती धूप और गरम हवाओं का मौसम आ गया है. इस मौसम में शरीर के तापमान व पाचन क्रिया को ठीक रखने के लिए संतुलित खाद्य एवं पेय पदार्थो का चुनाव बेहद जरूरी है. खास कर पेय पदार्थो के मामले में तो सावधानी बरतना और भी जरूरी है, क्योंकि गरमी से राहत पाने के लिए लोग अक्सर पेय पदार्थो का ही सहारा लेते हैं. गरमी में कुछ पीते रहने से पेट को ठंडक तो मिलती ही है, साथ ही ताजगी भी महसूस होती है. अत- ऐसे ड्रिंक्स

पीएं जिसे पीने से शरीर को जरूरी पोषक तत्व मिलता रहे और डिहाइड्रेशन से भी बचे रहें. कुछ ड्रिंक्स गले को राहत तो पहुंचाते हैं, लेकिन स्वास्थ्य को नुकसान भी पहुंचाते हैं. जानते हैं कुछ लाभदायक और हानिकारक ड्रिंक्स के बारे में.

ऐसे ड्रिंक्स से करें परहेज

इस मौसम में लोग काबरेनेटेड वाटर का अधिक सेवन करते हैं. लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इससे हमारे शरीर को कोई जरूरी पोषक तत्व नहीं मिलते, बल्कि ये कुछ जरूरी पोषक तत्व जैसे- कैल्शियम इत्यादि को क्षति ही पहुंचाते हैं.

चाय या कॉफी भी सीमित मात्र में लें, क्योंकि ज्यादा चाय-कॉफी से डिहाइड्रेशन होने की आशंका बढ़ जाती है.

ये ड्रिंक्स हैं लाभदायक

कुकुंबर ड्रिंक – 1 खीरा, 3/4 कप लो फैट दही, 4-5 पुदीना पत्ता, थोड़ा धनिया पत्ता, जीरा पाउडर, स्वादानुसार काला नमक और बर्फ मिलाकर इसका जूस बनाएं और पीएं. कैल्शियम, फॉलिक एसिड, विटामिन सी एवं पाचन को राहत पहुंचानेवाले हेल्दी बैक्टीरिया से भरपूर ये ड्रिंक डायबिटीज और हाइपरटेंशन के रोगियों के लिए भी फायदेमंद है.

बेल का शरबत – बेल के गूदे में स्वादानुसार चीनी/नमक नींबू और चाट मसाला मिलाकर इसका जूस बनाकर पीएं. कब्ज एवं गैस के रोगियों के लिए यह ड्रिंक लाभदायक है.

एपल मार्गरीटा – छीले-कटे सेब, नींबू, बर्फ, चीनी और थोड़ा पानी मिला कर इसका जूस बनाएं और इसका सेवन करें. यह ड्रिंक एनिमिया के रोगियों के लिए बहुत ही फायदेमंद है.

अदरक-पुदीना ड्रिंक – 1/4 कप अदरक का रस, 1/2 कप पुदीना पेस्ट, 1/2 कप नींबू का रस, चार चम्मच चीनी, 1 चम्मच जीरा पाउडर, काला नमक और पुदीना स्वादानुसार मिलाकर इसका जूस बनाएं. यह ड्रिंक विटामिन ए, सी और फोलिक एसिड, पोटैशियम, मैग्नीशिययम, जिंक इत्यादि से भरपूर है, यह टेस्टी होने के साथ-साथ गरमी में बहुत राहत देती है.

मैंगो शेक– आम और दूध से बना यह ड्रिंक विटामिन ए, पोटैशियम, मैग्नीशियम, कैल्शियम, प्रोटीन, एवं कैलोरी से भरपूर है. कभी-कभी कुछ हलका खाने का मन करे, तो यह ड्रिंक संपूर्ण भोजन का भी कार्य करती है.

स्वस्थ मन से स्वस्थ तन

पुरानी कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है, पर यह एक पहलू है. दूसरा पहलू यह है कि स्वस्थ मन से स्वस्थ शरीर का निर्माण संभव है. तन और मन का संबंध पारस्परिक है. दानों की निर्भरता एक -दूसरे से जुड़ी है. अत- स्वास्थ्य एक समग्र तत्व है. इसकी प्राप्ति के लिए हमें समग्रता में सोचना चाहिए.

तन और मन का गहरा संबंध है. एक स्वस्थ तो दूसरा भी स्वस्थ. एक बीमार, तो दूसरा भी बीमार. दोनों की स्वस्थता एक दूसरे पर निर्भर है. स्थानांग सूत्र में यह बात प्रमुखता से कही गई है कि विचारों और भावनाओं से मानव का स्वास्थ्य बहुत अधिक प्रभावित होता है. अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ अच्छा भोजन और एक नियमित दिनचर्या अपनाना भर नहीं है. स्वस्थ मनुष्य वह है जो अपनी शुद्ध प्रकृति में स्थिर होता है. यानी स्वस्थ वह है जो शरीर से ही नहीं , विचारों से भी स्वस्थ है. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है - यह अधूरा सत्य है. इसके साथ यह भी जोड़ जाना चाहिए , स्वस्थ मन से स्वस्थ शरीर का निर्माण होता है. वैसे तो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का अद्भुत विकास हुआ है. उसकी सफलताओं और उपलब्धियों पर सभी दांतों तले अंगुलियां दबाते हैं, पर इसके बावजूद दुनिया में बीमार लोगों की कोई कमी नहीं दिखती. नये से नये रोग भी जन्म लेते दिखाई देते हैं. असल में जब तक मानसिक विचारों और भावनाओं में संतुलन नहीं कायम होता और शांति का वातावरण नहीं बनता, तब तक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता. सच तो यह है कि रोग से भी अधिक हम रोग की चिंता से रोगी और दुर्बल बनते हैं. इसलिए जरूरी यह है कि जब भी शरीर पर रोग का आक्रमण हो, हमें विचारों के स्वास्थ्य और उनके संतुलन पर विशेष ध्यान देना चाहिए.

चिंता और भय की तरह क्रोध का भावावेश भी स्वास्थ्य का शत्रु है. दो दिन के ज्वर से जितनी शक्ति नष्ट होती है, तीव्र क्रोध के दो क्षण में उतनी शक्ति नष्ट होती है. क्रोध से रक्तचाप की वृद्धि के साथ हृदय रोग का खतरा भी होता है. इसी तरह भय और भावना से भी स्वास्थ्य बहुत प्रभावित होता है. उसके प्रभाव से अनेक व्यक्ति पागल और रोगी तक बन जाते हैं. स्वास्थ्य पर विचारों के इतने गहरे प्रभाव को देखते हुए कहा जा सकता है कि स्वस्थ जीवन के लिए इलाज और दवा के साथ-साथ विचारों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए, तभी आप खुद को स्वस्थ रख सकते हैं.

इसे आप एक उदाहरण से समझ सकते हैं. एक बार अमेरिका के कृषि मंत्री एंडरसन को दिल की बीमारी हो गयी. कई दिनों की चिकित्सा के बाद भी उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ. एक दिन अस्पताल में ही उन्होंने एक पुस्तक पढ़ी जिसमें लिखा था- 'दिल की बीमारी को दिमाग पर हावी नहीं होने देना चाहिए.' यह वाक्य उनके जीवन का मंत्र बन गया. उसी क्षण उन्होंने दिमाग से रोग की चिंता को दूर कर लिया. परिणाम यह निकला कि थोड़े ही समय में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गये. मन से अच्छा महसूस करते हुए रोग की चिकित्सा करने के इस उपाय को 'फेथ - हीलिंग' कहते हैं. इस तरह का इलाज आस्था और भावना द्वारा की जानेवाली चिकित्सा का ही रूप है. भौतिक चिकित्सा का उपयोग करते हुए भी हमें आध्यात्मिक चिकित्सा का प्रयोग करना चाहिए. जैन परंपरा में ऐसे अनेक मुनियों के उदाहरण हैं, जिनके आधार पर आस्था और भावना द्वारा चिकित्सा की विधि का और अधिक विकास हो सकता है.

वजन कम करने का बेस्ट ऑप्शन है कार्डियो

फिल्म संघर्ष (1999) में प्रीति जिंटा की बाल भूमिका में पहली बार नजर आयीं आलिया भट्ट 'स्टूडेंट ऑफ द इयर' से युवा दिलों पर छा चुकी हैं. आज उनकी प्यारी मुस्कान और परफेक्ट फिगर की हर तरफ चर्चा है. फिल्मों में आने से पहले आलिया भी सामान्य लड़की की तरह दिखती थीं, लेकिन सिर्फ तीन महीने में 16 किलो वजन कम कर उन्होंने यह लुक हासिल किया है. क्या है इसका राज, बता रही हैं आलिया. मैं पांच साल से सेहत को लेकर ज्यादा फिक्रमंद हुई हूं. इन सालों में महसूस किया है कि अगर आप फिट होते हो तो आप बहुत सकारात्मक महसूस करते हैं. मैं साइज जीरो नहीं बनना चाहती. मेरी बहन पूजा ने भी मुझे सख्त हिदायत दे रखी है कि मैं साइज जीरो के चक्कर में न पडूं. हां, आप यकीन नहीं करेंगे कि फिल्मों में आने से पहले मेरा वजन 68 किलो था मगर पहली फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द इयर' में शनाया के रोल के लिए महज तीन महीनों में मैंने 16 किलो वजन कम किये. मैंने महसूस किया कि वजन कम करने में कार्डियो एक्सरसाइज सबसे बेस्ट ऑप्शन है.

वर्कआउट प्लान – मैं सप्ताह में तीन-चार दिन वर्कआउट करती हूं. स्पेशली सुबह एक घंटे कार्डियो करती हूं व शाम में लाइट वेट लिफ्टिंग. शुरुआत ट्रेडमिल से होती है. 10 मिनट वार्मअप के बाद क्रंचेस, बाइस्पे, ट्राइचेस्प, ड्रम्बेल्स वर्कआउट. हर दिन बॉडी के एक हिस्से पर मेहनत करती हूं. वीक में एक दिन ऑफ रखती हूं. योग और डांसिंग भी मेरी फिटनेस का अहम हिस्सा हैं. हर दिन अष्टांग योग भी करती हूं.

मेरी डायट – मैं दिन भर में चार- पांच छोटे-छोटे मील लेती हूं, जो मुझे फिट बनाये रखता है. पानी खूब पीती हूं, जो मुझे दिन भर हाइड्रेटेड रखता है. ऑयली व जंक फूड से दूर ही रहती हूं. सुबह की शुरुआत वेज या फ्रूट जूस से करती हूं. साथ में स्नैक्स, इडली-सांबर. अगर एग सैंडविच या पोहा लेना पड़े तो बिना चीनी के एक कप कॉफी या चाय के साथ लेती हूं. लंच में चिकन ब्रेस्ट, दाल, एक रोटी (बिना बटर), सब्जी और दही. शाम में कुरमुरा या फिर चाय-कॉफी के साथ इडली-सांबर. सोने से दो घंटे पहले डिनर में चिकन या फिश सब्जी के साथ और एक गिलास दूध लेती हूं.

तबीयत बिगाड़ न दे यह मौसम

गरमी का मौसम दस्तक दे चुका है. मौसम का यह बदलाव अपने साथ बुखार, सर्दी–जुकाम जैसी छोटी–छोटी बीमारियां भी ले आया है. अगर चाहते हैं कि आप या परिवार का कोई सदस्य फ्लू की चपेट में न आये, तो जानिए प्रतिष्ठित डॉक्टर से कि कैसे करें बचाव.

बदलते मौसम के कारण विभिन्न बीमारियां लोगों को चपेट में ले रही हैं. रात में ठंड और दिन में गरमी से अक्सर लोग लापरवाही बरतते हैं और कई बीमारियों का शिकार हो जाते हैं. अगर थोड़ी सावधानी और ध्यान रखा जाये तो बीमार पड़ने से बचा जा सकता है. इस मौसम में वायरल, कॉमन कोल्ड, ब्रोंकाइटिस, खांसी, गले व सिर में जकड़न आदि प्रमुख बीमारियां हैं. वहीं डायबिटीज, अस्थमा और हाइ बीपी के मरीजों को इस मौसम में खासी तकलीफों का सामना करना पड़ता है. बदलते मौसम में वायरस हावी रहता है. सुबह में हल्की सर्द हवाएं और दोपहर में गरमी से बुजुर्ग और बच्चे वायरल इंफेक्शन की चपेट में आ जाते हैं. वायरल इंफेक्शन के शुरुआती लक्षण खांसी, जुकाम और हल्का बुखार है जिसे हम 'फ्लू' भी कहते हैं. हैजा भी वायरल इंफेक्शन है. डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, हेपेटाइटिस आदि वायरस से ही फैलता है, जो बदलते मौसम में घातक होता है. इंफेक्शन से जुकाम में नाक बंद रहता है, छींकें भी ज्यादा आती हैं, गला खराब रहता है. बदलते मौसम में छोटे बच्चों में डायरिया का मुख्य कारण भी वायरल इंफेक्शन ही होता है. प्रदूषण के कारण वायल इंफेक्शन अत्याधिक पनपता है. वातावरण में मौजूद वायरस सांस लेने के दौरान शरीर में प्रवेश करते हैं. यह समस्या एसी के साथ अधिक है, क्योंकि वहां ताजी हवा नहीं होती.

लगवाएं एंटी फ्लू टीका – साल में दो बार अपने बच्चों को एंटी फ्लू टीका जरूर लगवाएं. डब्ल्यूएचओ साल में दो बार एंटी फ्लू टीका निकालता है एक सितंबर माह में और दूसरा मार्च माह में, क्योंकि अधिकांश वायरस मौसम बदलने पर ज्यादा अटैक करते हैं. इस लिहाज से ये महीने महत्वपूर्ण हैं. हर 6 माह में बच्चों व बुजुर्गों को यह टीका जरूर लगवाएं.

बुजुर्ग बरतें सावधानियां – अस्थमा, शुगर या हाइबीपी के मरीज अपनी दवाइयों का नियमित सेवन करें, अन्यथा आपकी परेशानी बढ़ सकती है. कोशिश करें कि धूप निकलने पर ही घर से बाहर निकलें. बिस्तर से उठते ही तुरंत खुली हवा में न जाएं. ब्लड थिनर मेडिसिन लेने वाले मरीज इसका नियमित सेवन न करें. बाईपास सर्जरी करा चुके मरीज चिकित्सक की सलाह लेकर दवाइयों का सेवन करें. शराब व धुम्रपान का सेवन न करें क्योंकि इस मौसम में यह अत्याधिक घातक साबित हो सकता है. शुगर मरीज नियमित दवाई लेते रहें व लगातार व्यायाम करें ताकि शुगर कंट्रोल रहे. हार्ट पेशेंट वाले बुजुर्गों को यदि चेस्ट में कोई परेशानी होती है, तो तुरंत चिकित्सक से सलाह लें.

क्या करें जब मौसम बनाये बीमार

मौसम में बदलाव के कारण हमें कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है. यह किन कारणों से होता है?

मौसम में बदलाव के कारण वायरस वातावरण में तेजी से विकसित होते हैं. इस मौसम में होनेवाली सर्दी, खांसी और बुखार इंफ्लुएंजा वायरस के इंफेक्शन की वजह से होते हैं. हृदय रोग और फेफड़ों से जुड़े रोगों से पीड़ित लोगों के लिए यह जानलेवा भी साबित होता है.

प्राय: इस मौसम में अचानक कोई ठंडी चीज पी लेने से तबीयत खराब हो जाती है, क्यों?

वातावरण में विभिन्न जीवाणु और विषाणु होते हैं. हमारे शरीर जैसे– गले, मुंह आदि में ये मौजूद होते हैं. सामान्य रूप से ये अक्रिय होते हैं. अचानक कोई ठंडी चीज पीने से, ये जीवाणु सक्रिय हो जाते हैं और तेजी से वृद्धि करने लगते हैं. इनकी संख्या बढ़ने के कारण ही हम बीमार पड़ते हैं.

सामान्य बुखार और वायरल इंफेक्शन में क्या अंतर होता है?

वायरल इंफेक्शन में बुखार, सिर दर्द, नाक से पानी बहना, खांसी, भूख घटना, काम करने की इच्छा न होना आदि लक्षण हैं. बुखार 5 दिन से अधिक रहे, तो यह मलेरिया, मियादी बुखार, कालाजार या डेंगू हो सकता है. टेस्ट करवाएं. मलेरिया के लिए आप्टिमल टेस्ट, मियादी बुखार के लिए विडाल टेस्ट होता है.

इससे बचाव के लिए क्या उपाय अपनाना चाहिए?

हाइ रिस्कवालों को खास कर हृदयरोगवाले लोगों को एंटी वायरल वैक्सीन लेना चाहिए. डॉक्टर की सलाह लेना चाहिए.

जज शनिवार-रविवार को भी काम करते हैं उन्हें छुट्टी नहीं मिलती

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि जो लोग यह सोचते हैं कि हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों को लंबी छुट्टी मिलती है लेकिन वह यह नहीं जानते कि जजों को शनिवार और रविवार को भी काम करना पड़ता है। सुप्रीम कोर्ट में पश्चिम बंगाल से संबंधित एक मामले की सुनवाई चल रही थी तो सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गुरुवार को सुनवाई की जाए और यह भी कहा कि दोनों पक्ष गर्मी की छुट्टी से पहले अपनी दलील पूरी करें। पश्चिम बंगाल सरकार ने कहा है कि सीबीआई राज्य की इजाजत के बगैर मामले की जांच कर रही है। सुप्रीम कोर्ट पश्चिम बंगाल सरकार की अर्जी पर आगे सुनवाई करेगा। इस मामले में हाई कोर्ट के फैसले को राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दे रखी है। इसी दौरान छुट्टी का मसला उठा। सॉलिसिटर जनरल ने पहले यह बात कही तब जस्टिस बीआर गवई की बेंच ने भी कहा कि जो लोग यह आलोचना करते हैं कि हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जजों को लंबी छुट्टी मिलती है उन्हें शायद यह नहीं मालूम कि जज शनिवार और रविवार को भी काम करते हैं। सुप्रीम कोर्ट की ओर से कहा गया कि जज रोजाना 50 से 60 मामलों की सुनवाई करते हैं और छुट्टियों में भी फैसला लिखते हैं।

लोग बहुत समझदार....वोट से जबाव देने को तैयार : सुनीता केजरीवाल

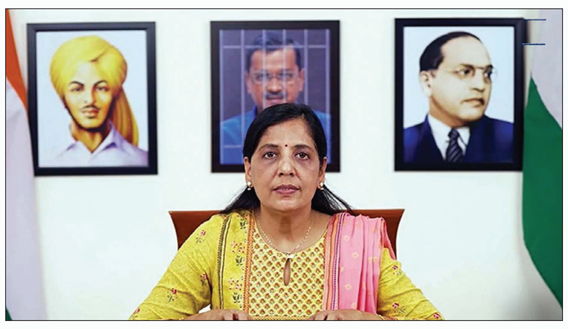

अहमदाबाद । दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने गुरुवार को कहा कि लोग समझदार हैं। आप के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री को जेल में डालने के भाजपा के कदम का जवाब अपने वोट से देने को तैयार है। वे गुजरात के भरूच और भावनगर संसदीय क्षेत्रों में आम आदमी पार्टी (आप) के उम्मीदवारों के समर्थन में रैलियों में शामिल होने से पहले अहमदाबाद हवाई अड्डे पर पहुंचीं। उन्होंने कहा, उन्होंने (भाजपा ने) केजरीवाल को चुनाव के समय जेल में डाला है, ताकि उनकी आवाज जनता तक नहीं पहुंचे। लेकिन लोग बहुत समझदार हैं और वे अपने वोट से जवाब देने को तैयार है। सुनीता के साथ चुनावी दौरे पर गए 'आप' के राज्यसभा सदस्य संदीप पाठक ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उन बयानों के लिए उन पर निशाना साधा कि वह धर्म के नाम पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं देने देंगे। उन्होंने कहा, मैं प्रधानमंत्री से पूछना चाहता हूं कि उन्हें ये सारी बातें चुनाव से पहले ही क्यों याद आती हैं? आप अपने काम के आधार पर वोट क्यों नहीं मांगते? मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री पाकिस्तान के सबसे बड़े दोस्त हैं।''

कुछ लोगों ने मुझे अपनी ही पार्टी में बेगाना बना दिया-अनिल विज

चंडीगढ़। अंबाला कैंट से छह बार के विधायक और हरियाणा के पूर्व मंत्री अनिल विज ने कहा कि कुछ लोगों ने उन्हें अपनी पार्टी में बेगाना बना दिया है। उन्होंने ने बिना किसी का नाम लिए कहा कि कुछ लोगों ने मुझे मेरी पार्टी में ही बेगाना बना दिया है। विज अंबाला संसदीय सीट से बीजेपी उम्मीदवार बंतो कटारिया के नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले एक सभा को संबोधित कर रहे थे। बता दे बीजेपी के वरिष्ठ नेता अनिल विज ने मार्च में हुए सैनी के शपथ ग्रहण समारोह से भी दूरी बना ली थी। उन्होंने लोकसभा चुनाव में अपना चुनाव प्रचार अंबाला छावनी निर्वाचन क्षेत्र तक ही सीमित रखा है। विज ने लोगों से अपील की कि अगर उन्हें लगता है कि उन्होंने अंबाला छावनी का विकास किया है तो वे इस चुनाव में अपनी ताकत दिखाएं और बीजेपी उम्मीदवार बंतो कटारिया को भारी मतों से विजयी बनाएं। बंतो कटारिया पूर्व केंद्रीय मंत्री रतन लाल कटारिया की पत्नी हैं। रतन लाल अंबाला से सांसद थे। पिछले साल उनका निधन हो गया। विज ने अपने भाषण के दौरान 'इंडिया' गठबंधन को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि उनके पास न तो कोई नेता है और न ही कोई नीति। जब विज यहां अंबाला छावनी में सभा को संबोधित कर रहे थे तो सैनी और केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत भी मौजूद थे। बता दें कि इससे पहले मार्च में मनोहर लाल खट्टर के स्थान पर नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बारे में पार्टी द्वारा अवगत नहीं कराए जाने को लेकर अनिल विज के नाराज होने की खबरें आई थीं। सैनी के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल में विज को शामिल भी नहीं किया गया।

चुनावी मौसम में हॉक्स ई-मेल आने से चढ़ गया दिल्ली का पारा

नई दिल्ली । देश में लोकतंत्र का महापर्व अपने पीक पर चल रहा है। इस बीच बम के हॉक्स ई-मेल आने से दिल्ली का पारा अचानक ऊपर चढ़ गया है। दिल्ली में मंगलवार को राष्ट्रपति भवन सहित 103 सरकारी बिल्डिंग में बम रखे होने का ई-मेल आया, तब कोई बहुत ज्यादा हरकत नहीं हुई। लिहाजा बुधवार को सबसे संवेदनशील जगह स्कूलों को टारगेट किया गया। इससे अचानक पूरी दिल्ली हड़कंप मच गया। दहशत फैलाने वाले अपने मंसूबों में कामयाब हो गए। केंद्रीय गृह मंत्रालय, दिल्ली के एलजी और पुलिस के आला अफसरों अलर्ट मोड में आ गए। पैरंट्स और स्टूडेंट्स के बीच दहशत फैल गई। लोगों के बीच स्कूलों की तरफ भागने की होड़ सी मच गई। पुलिस अफसर बताते हैं कि अचानक इस तरह से पैनिक फैलने की आशंका रहती है। भगदड़ मचने पर जानमाल का नुकसान का खतरा बना रहता है। इसकारण जनता से यही अपील की जाती है कि वे इसतरह के हालात में बिल्कुल भी ना घबराएं और हमेशा अलर्ट रहें। एक एक तरह की नई चुनौती है, जिससे पुलिस और पब्लिक दोनों को मिल कर निपटना है। पुलिस अफसर ने बताया कि दिल्ली-एनसीआर के स्कूलों में या अन्य जगह पर बम की हॉक्स कॉल पहले भी आती रही हैं। लेकिन इतने ज्यादा स्कूलों को बम रखने का एक साथ ई-मेल भेजने का ये पहला मामला सामने आया है। ये एक नया ट्रेंड है। इससे आने वाले समय में बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल के इस दौर में दहशत फैलाने वाले किसी भी हद तक जा सकते हैं। इस तरह का पैनिक फैलाने के पीछे साजिशकर्ताओं का क्या मकसद है और वे इससे क्या हासिल चाहते हैं, इसका खुलासा आरोपियों के पकड़े जाने के बाद ही हो सकेगा।

भाजपा के आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल से हटा एनिमेटेड वीडियो

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल द्वारा मंगलवार को साझा किया गया एक एनिमेटेड वीडियो, जिसमें भाजपा द्वारा वोट मांगने के लिए सीधे तौर पर मुस्लिमों को निशाना बनाया जा रहा था, 1 मई को हटा दिया गया। इसके पहले बताया गया था कि किस तरह इस वीडियो में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दावे कि अगर कांग्रेस सरकार में आई है, तब वह हिंदुओं की संपत्ति और धन मुसलमानों में बांट देगी को ही दोहराया गया था। इसमें यह भी कहा गया था कि मुस्लिम इस विपक्षी पार्टी का पसंदीदा समुदाय' हैं। इसमें वहीं भ्रामक और गोलमोल दावे थे, जो दक्षिणपंथियों द्वारा मुस्लिमों को कमतर दिखाने के लिए किए जाते रहे हैं। हालांकि, फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि वीडियो को पार्टी ने ही हटाया, या इंस्टाग्राम ने हटा दिया। क्योंकि इसके सामने आने के बाद बड़ी संख्या में इंस्टाग्राम यूजर्स ने बताया था कि उन्होंने वीडियो को 'गलत जानकारी' और 'हेट स्पीच' के लिए रिपोर्ट किया था। यह पहली बार नहीं था जब भाजपा ने चुनाव से पहले घोर सांप्रदायिक वीडियो प्रसारित किया है। अप्रैल के मध्य में तेलंगाना भाजपा ने एक वीडियो जारी किया, जिसमें एक एनिमेटेड चरित्र पेपे द फ्रॉग को दिखाया गया, जिसका इस्तेमाल अमूमन अमेरिका में ऑल्ट-राइट द्वारा किया जाता था और जिसे अब हिंदुत्व के सोशल मीडिया यूजर्स अपना चुके हैं और इस भारत में मुसलमानों और ऐतिहासिक शासकों का संदर्भ देने के लिए इस्तेमाल में ले रहे हैं।

-प्रियंका का पीएम मोदी पर हमला

भाजपा जनता की समस्याओं की बजाय पाकिस्तान पर बात करती

चिरमिरी (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा संसदीय क्षेत्र के चिरमिरी में कांग्रेस उम्मीदवार ज्योत्सना महंत के समर्थन में आयोजित जनसभा में पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जनता की समस्याओं की बजाय पाकिस्तान और चीन की बातें करते हैं। छत्तीसगढ़ की अस्मिता और सम्मान को बढ़ाने के लिए कांग्रेस की ओर से की गई कोशिश को भाजपा ने पसंद नहीं किया। वर्तमान दौर में किस तरह की राजनीति हो रही है और किस तरह के नेताओं को बढ़ाया जा रहा है, यह हमारे सामने है।

उन्होंने कहा कि चिरमिरी सहित अन्य क्षेत्रों में खुशहाली आए इसकारण कोयला खदानों का राष्ट्रीयकरण किया था। जिसकी वजह से हजारों लोगों को रोजगार मिला। वर्तमान में मजदूर विरोधी, किसान विरोधी राजनीति चल रही है। भाजपा नेता जाति की राजनीति कर बताते है कि देश में खुशहाली और अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। दुनिया के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के भारत आने की बात करते हैं। लेकिन जनता की सबसे बड़ी समस्याओं की बात मंचों पर नहीं हो रही है। इन मंचों पर जो

बात होती है, वह बड़े-बड़े इवेंट की होती है, कोई जी-20 बोलता है, कोई पाकिस्तान की बात करता है, कोई चीन की बात करता है। आप जिन संघर्षों से गुजर रहे हैं, उनकी बात नहीं होती।

उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा में दो तरह के नेता हैं। एक जो सबसे भष्ट्र नेता हैं। उन सभी को इकट्ठा करके अपनी पार्टी में ले लिया। जो दूसरी पार्टियो में भ्रष्ट थे, पहले उनके खिलाफ आरोप लगे और उन पर छापे मारे गए। उन पर दबाव डाला गया और अपनी पार्टी में ले लिया गया। जब उनकी पार्टी में आ गए तब वह पाक साफ हो गए। उनके खिलाफ कोई कार्रवाई और केस नहीं हुआ। सब चुपचाप से बंद किया गया। दूसरी ओर वे नेता हैं, जो सिर्फ हवा-हवाई बातें करते हैं। जो आपकी बात नहीं करते।

सिसोदिया ने जमानत के लिए लगाई याचिका, कोर्ट ने की मंजूर सुनवाई कल

नई दिल्ली। कथित आबकारी नीति घोटाले में जेल में बंद दिल्ली से पूर्व डिप्टी सीएम और आम आदमी पार्टी (आप) के नेता मनीष सिसोदिया ने सीबीआई और ईडी द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार और धन शोधन के मामलों में जमानत के लिए गुरुवार को दिल्ली हाईकोर्ट का रुख किया और एक याचिका दायर कर तत्काल सुनवाई का आग्रह किया है। अदालत याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करने के लिए सहमत हो गई। सिसोदिया की ओर वकील रजत भारद्वाज और मोहम्मद इरशाद ने कहा अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता एक विधायक है। उन्होंने अदालत से जमानत की मांग करने वाली दोनों याचिकाओं को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने का आग्रह किया। तत्काल सुनवाई के लिए कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ के समक्ष याचिका का उल्लेख किया गया। अदालत याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करने के लिए सहमत हो गई। सिसोदिया ने निचली अदालत के 30 अप्रैल के आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। निचली अदालत में दो मामलों में उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी। निचली अदालत ने 2021-22 की आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित अनियमितताओं के संबंध में सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार और धन-शोधन मामलों में सिसोदिया की जमानत याचिका खारिज कर दी है।

एशिया देशों में आग उगल रहा सूर्य.... आग की भटटी बने कई देश

भारत, जापान और बांग्लादेश में तापमान शीर्ष पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया के देशों में इस समय भीषण गर्मी पड़ रही है। इससे गर्मी से संबंधित बीमारियों और मौतों में काफी ज्यादा तेजी आई है। बीते कुछ दिनों में भारत से फिलीपींस तक तापमान 100 से 120 डिग्री तक बढ़ गया है, जबकि जापान में तापमान 90 डिग्री तक बढ़ा है। मौसम विज्ञानी मैक्सिमिलियानो हरेरा ने लिखा है कि पूरे एशिया में तापमान कई पुराने रिकॉर्ड क्रूरतापूर्वक तोड़ रहा है, जो विश्व जलवायु इतिहास में अब तक की सबसे चरम घटना है।

रिपोर्ट के मुताबिक, अप्रैल के आखिरी हफ्ते में एशिया ने भीषण गर्मी देखी और मई के शुरुआत दिनों में भी इसके जारी रहने की संभावना है। दक्षिण एशिया के कई इलाकों में मार्च से ही तापमान सामान्य से ऊपर बना हुआ है। फिलीपींस में 1.4 करोड़ लोगों की आबादी वाले मनीला में बीते शनिवार को अब तक का उच्चतम तापमान 101.8 डिग्री फारेनहाइट (38.8 सेल्सियस) दर्ज किया गया। बांग्लादेश, भारत, चीन में भी गर्मी रंग दिखा रही है।

बांग्लादेश में अप्रैल के आखिरी में गर्मी के कारण स्कूलों को बंद करना पड़ा। देश में तापमान 109.4 डिग्री (43 डिग्री सेल्सियस) तक पहुंच गया। मंगलवार को बांग्लादेश में उच्च तापमान 110.8 डिग्री (43.8 सेल्सियस) था। चीन के हालात भी अच्छे नहीं हैं। चीन के युन्नान प्रान्त में अप्रैल में देश का शीर्ष तापमान 110.1 डिग्री (43.4 सेल्सियस)रहा। हैनान प्रांत में तापमान 109 डिग्री (42.8 सेल्सियस)

तक पहुंचा, जो हैनान के लिए अब तक का उच्चतम तापमान है।

भारत कई हिस्सों में भीषण गर्मी है। खासतौर से कोलकाता में अप्रैल की सबसे लंबी गर्मी की लहर महसूस की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने 2 मई तक कोलकाता और आसपास के क्षेत्रों के लिए अत्यधिक गर्मी के लिए कोड रेड घोषित किया। यहां तापमान औसत से लगभग 9 से 18 डिग्री (5 से 10 डिग्री) अधिक, 114.8 डिग्री (46 डिग्री सेल्सियस) तक पहुंचा है। जलवायु डेटा के विश्लेषण के अनुसार भारत 2030 तक उच्च तापमान के लिहाज से दुनिया का सबसे संवेदनशील देश होगा।

जापान, म्यांमार में भी गर्मी का हाहाकार

जापान में दक्षिण से उत्तर तक गर्मी के नए रिकॉर्ड बने हैं। लाओस में अप्रैल का राष्ट्रीय रिकॉर्ड शुक्रवार को बना, जब नगोन में तापमान 109.8 डिग्री (43.2 सेल्सियस) तक पहुंच गया। म्यांमार में पारा 114.8 डिग्री (46 डिग्री सेल्सियस) तक बढ़ गया है। फिलीपींस में मनीला खाड़ी के सांगली प्वाइंट पर भी न्यूनतम तापमान 86.4 डिग्री (30.2 सेल्सियस) दर्ज किया गया, जो देश के इतिहास में रात का सबसे ज्यादा तापमान है। ताप सूचकांक 110 डिग्री से अधिक होने के कारण स्कूल बंद कर दिए गए हैं। थाईलैंड में भी भीषण गर्मी देखी जा रही है।

एरिजोना विश्वविद्यालय में मौसम विज्ञान के प्रोफेसर किम वुड का कहना है कि इस गर्मी के पीछे की एक अहम वजह असामान्य रूप से समुद्र के पानी का गर्म होना है। उनका कहना है कि कुछ स्थानों पर गर्मी कुछ समय के लिए कम हो सकती है लेकिन औसत से ज्यादा तापमान बना रहेगा। मई के मध्य तक गर्मी और भी बढ़ सकती है।

पिछले चुनावों में मोदी के लिए वोट मांगने पर उद्धव ठाकरे ने मांगी माफी

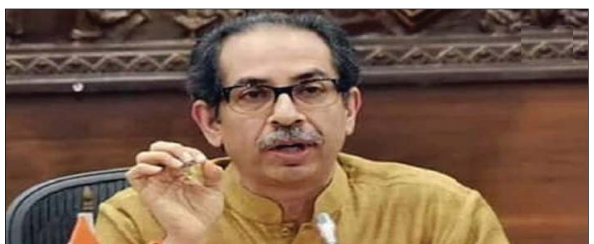

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के इचलकरंजी में एक चुनावी रैली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र को धोखा दिया है और वह पूर्व के चुनावों में पीएम नरेंद्र मोदी के लिए वोट मांगने को लेकर लोगों से माफी मांगते हैं।

उद्धव ठाकरे और महा विकास आघाडी (एमवीए) के उनके सहयोगी एवं राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार ने हातकणंगले निर्वाचन क्षेत्र से शिवसेना (यूबीटी) के उम्मीदवार सत्यजीत पाटिल के समर्थन में पश्चिमी महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के इचलकरंजी में एक रैली को संबोधित किया। 2022 में महाराष्ट्र में सरकार गिरने की परिस्थितियों का जिक्र करते हुए उद्धव ठाकरे ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इस पर अपना फैसला नहीं सुनाया कि असली शिवसेना किसकी है, बल्कि निर्वाचन आयोग और मध्यस्थ (महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर) ने अपना फैसला सुनाया, जो भाजपा के सेवक के रूप में काम कर रहे थे। ठाकरे उद्धव ने कहा कि जब कोई भी दल भाजपा से हाथ मिलाने को तैयार नहीं था, तब शिवसेना ने उसके साथ गठबंधन किया था।

उद्धव ठाकरे ने जून 2022 में अपनी सरकार के गिरने का जिक्र करते हुए कहा कि भाजपा ने एक ऐसे व्यक्ति की सरकार को गिरा दिया, जिसके परिवार ने उसे सब कुछ दिया था। उन्होंने कहा कि मैंने पहले हुए चुनावों में मोदी के लिए वोट मांगने को लेकर आपसे माफी मांगता हूं क्योंकि पीएम मोदी की सरकार ने महाराष्ट्र को धोखा दिया है। वहीं सभा को संबोधित करते हुए शरद पवार ने कहा कि पीएम मोदी महाराष्ट्र दौरे के दौरान राज्य के लिए अपनी योजनाओं के बारे में बोलने के बजाय केवल शरद पवार और उद्धव ठाकरे की आलोचना करते हैं।

बिहार की सियासत में बड़ा सवाल : पप्पू यादव कांग्रेस में है या नहीं ?

पटना (एजेंसी)। चुनावी अखाड़े में अपनाए जाने वाले सियासी दांव पेंच कई बार बड़े रोचक भी होते हैं। बिहार में पूर्णिया सीट पर इन दिनों खूब चर्चा हो रही है। यहां से पप्पू यादव कांग्रेस के नेता हैं और निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। इस सीट पर आखिर तक गहमा-गहमी चलती रही। पप्पू चुनाव के अंतिम दिन तक कांग्रेस का समर्थन प्राप्त होने का दावा करते रहे।अब इस मामले में कांग्रेस ने अपना पल्ला झाड़ लिया है। कांग्रेस की ओर से पप्पू को लेकर चौंका देने वाली प्रतिक्रिया सामने आई है। कांग्रेस ने बुधवार को आधिकारिक तौर पर यह स्पष्ट कर दिया है कि पप्पू यादव ने कांग्रेस की सदस्यता और अपनी पार्टी का विलय नहीं किया है। पूर्णिया से चुनाव लड़ने वाले पप्पू यादव को लेकर पूछे गए सवाल पर कांग्रेस प्रवक्ता आलोक शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान आधिकारिक जवाब दिया। पूर्णिया सीट महागठबंधन में राजद के खाते में चली गई थी। शर्मा ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि पप्पू ने अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय किया है। उन्होंने पटना में सदस्यता पर्ची भी नहीं ली, जो बिहार से पार्टी में शामिल होने वाले किसी भी व्यक्ति को लेनी पड़ती है। बता दें कि एआईसीसी के बिहार प्रभारी मोहन प्रकाश और मीडिया व प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए पप्पू यादव का पार्टी में स्वागत किया और उनकी जन अधिकार पार्टी के विलय की घोषणा की। शर्मा ने कहा कि बहुत से लोग प्रेस कॉन्फ्रेंस में स्नैक्स लेने आते हैं। मैं जो कहना चाह रहा हूं वह यह है कि प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी। बता दें कि बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने यादव से नामांकन पत्र वापस लेने के लिए कहा था। उन्होंने स्पष्ट किया था कि पार्टी अपने सदस्यों को स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में लड़ने की अनुमति नहीं देती है। हालांकि, यह भी अनुमान लगाया गया था कि कांग्रेस पप्पू के लिए कोई भी रास्ता खोज सकती है। पप्पू यादव खुद को आखिरी सांस तक कांग्रेस, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा का सिपाही कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि दबंग सहयोगी राजद के दबाव में उन्हें कांग्रेस का टिकट नहीं दिया गया।

कैसरगंज से बेटे को टिकट मिलने पर गदगद हुए बृजभूषण शरण सिंह, पार्टी का किया धन्यवाद, टीएमसी ने उठाए सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने गुरुवार को कैसरगंज के मौजूदा सांसद बृजभूषण शरण सिंह, जिन पर महिला पहलवानों द्वारा यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया गया है, को हटा दिया और उनके बेटे करण भूषण सिंह को टिकट दिया। पार्टी के फैसले में बृजभूषण शरण सिंह का कहीं ना कहीं दबदबा दिखा है। बेटे को टिकट मिलने पर बृजभूषण शरण सिंह गदगद हैं। बृज भूषण के छोटे बेटे करण भूषण उत्तर प्रदेश कुश्ती संघ के अध्यक्ष हैं। वह गोंडा जिले के नवाबगंज में सहकारी बैंक के अध्यक्ष भी हैं।

कैसरगंज लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार और पार्टी के सांसद बृजभूषण शरण सिंह के बेटे करण भूषण सिंह ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में हनुमान गढ़ी मंदिर में पूजा-अर्चना की। करण भूषण सिंह ने कहा कि मैं यहां बजरंगबली का आशीर्वाद लेने आया हूं। वह मेरे गुरु हैं। बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि मैं इसके लिए पार्टी को धन्यवाद देता हूं। कल नामांकन दाखिल किया जाएगा। इस बार ब्रज भूषण की सीट पर काफी सस्पेंस था क्योंकि भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व प्रमुख, जो छह बार के सांसद भी हैं, पर देश के कुछ प्रतिष्ठित पहलवानों ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था।

बृजभूषण शरण सिंह के बेटे को टिकट दिए जाने पर टीएमसी ने सवाल उठाया है। टीएमसी नेता सागरिका

घोष ने कहा कि भाजपा ने बृजभूषण शरण सिंह के बेटे करण सिंह को टिकट दिया है, यह शर्मनाक और अपमानजनक है। बृज भूषण शरण सिंह पर किसी और ने नहीं बल्कि भारत की ओलंपिक पदक विजेता महिला पहलवानों ने गंभीर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। उन पर पॉस्को एक्ट के तहत भी आरोप लगाया गया है। बृजभूषण शरण सिंह के बेटे को टिकट देना छद्म राजनीति के अलावा कुछ नहीं है. इससे पता चलता है कि बीजेपी बृजभूषण शरण सिंह द्वारा किए गए यौन उत्पीड़न की निंदा करने को तैयार नहीं है। भाजपा कहती है कि वह वंशवाद की राजनीति के खिलाफ है, तो यह वंशवाद की राजनीति के अलावा और क्या है?

छह बार सांसद रहे भूषण अपने राजनीतिक निर्वाचन क्षेत्र और उसके आसपास लगभग 50 निजी शैक्षणिक केंद्र भी चलाते हैं। वह लगभग एक दशक तक भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष रहे। सखी मलिक और बजरंग पुनिया समेत पहलवान भूषण के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर जंतर-मंतर पर लंबे समय तक धरने पर बैठे रहे। कैसरगंज लोकसभा सीट पर लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में 20 मई को मतदान होगा। 2019 में बृजभूषण को 5,81,358 वोट मिले। बसपा के चंद्रदेव राम यादव को 3.19 लाख से ज्यादा वोट मिले, जबकि कांग्रेस उम्मीदवार विनय कुमार पांडे को 37,132 वोट मिले।

निकल गई हेकड़ी.... भारतीय पर्यटकों को लुभाने में जुटा मालदीव

नई दिल्ली (एजेंसी)। मालदीव में मोहम्मद मुइज्जू के राष्ट्रपति बनने के बाद से दोनों देशों में खटास आ गई है। मालदीव के तीन मंत्रियों ने पीएम मोदी को लेकर अभद्र टिप्पणी की जिसके बाद भारत में मालदीव बॉयकाट का ट्रेंड शुरु हो गया। मालदीव की इकोनॉमी में भारतीय पर्यटकों का बड़ा योगदान है। इसके बाद साल 2024 में मालदीव के अंदर भारतीय पर्यटकों की संख्या में गिरावट आने के बाद अब मालदीव परेशान दिख रहा है।

जिसके बाद मालदीव मार्केटिंग एंड पब्लिक रिलेशंस कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक फातिमथ तौफीक ने खुलासा किया है कि भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए अब नए प्रयास शुरू किए हैं। मालदीव पर्यटन बोर्ड के एमडी ने बताया कि जैसे ही पर्यटन मंत्रालय ने साल 2024 में भारतीय पर्यटकों की संख्या में गिरावट देखी, उन्होंने भारतीय बाजार को आकर्षित करने के लिए प्रयास तेज कर दिए हैं। मालदीव पर्यटन विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, साल 2021 से 2023 के बीच मालदीव में सबसे अधिक भारतीय पर्यटक पहुंचे, लेकिन विवाद के बाद भारतीय टूरिस्टों की रैंकिंग पहले से छठे स्थान पर खिसक गई है।

उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि अगर लंबे समय तक भारतीय टूरिस्ट मालदीव से दूरी बनाते हैं, मालदीव को बड़ा झटका लग सकता है। इस बीच फातिमाथ ने कहा कि हम भारतीय बाजार से पर्यटकों की आवक बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय पर्यटकों की आवक बढ़ाने के लिए सीजन से पहले भी अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके लिए मालदीव ने भारत सरकार से भी मदद मांगी है। भारतीय बाजार में मालदीव पर्यटन ब्रांड को बढ़ावा देने के लिए कई एयरलाइंस के साथ मालदीव पर्यटन विभाग ने समझौता किया है। एमडी ने बताया कि वे इसतरह के अभियान चलाएंगे, जिससे पर्यटकों की संख्या बढ़ सके।

दबाव के बावजूद रूस से तेल खरीदकर मोदी सरकार ने बचाए करोड़ों रुपये

नई दिल्ली ।

पश्चिमी दबाव के बावजूद रूस से सस्ता तेल खरीदना जारी रखने की भारत की रणनीति के परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 2022-23 के पहले 11 महीनों के दौरान देश के तेल आयात बिल में करीब 7.9 अरब डॉलर की बचत हुई है। इससे देश को चालू खाता घाटा कम करने में भी मदद मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार मॉस्को के खिलाफ पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद रूस के साथ अपने संबंध बनाए रखने के लिए दृढ़ है। केप्लर और एलएसईजी द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, इस साल अप्रैल के दौरान भारत ने एक महीने पहले की तुलना में अधिक रूसी तेल का आयात किया, लेकिन इराक और सऊदी अरब से कम आयात किया।

आंकड़ों से साफ होता है कि अप्रैल के दौरान आयात 13-17 प्रतिशत बढ़ गया। अप्रैल में रूस भारत का शीर्ष तेल आपूर्तिकर्ता रहा, उसके बाद इराक और सऊदी अरब का नंबर आया। आंकड़ों से पता चलता है कि इराक से तेल आयात में 20-23 प्रतिशत की गिरावट आई है। चूंकि भारत दुनिया में कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा आयातक है, रूसी तेल की इन बड़ी खरीद ने विश्व बाजार में कीमतों को अधिक उचित स्तर पर रखने में मदद की है, जिससे अन्य देशों को भी लाभ हुआ है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा संकलित आंकड़ों से पता चलता है कि मात्रा के संदर्भ में वित्तवर्ष 2024 के 11 महीनों में रूस से आयातित कच्चे पेट्रोलियम की हिस्सेदारी वित्तवर्ष 2022 में 2 प्रतिशत से बढ़कर 36 प्रतिशत हो गई, जबकि पश्चिम एशियाई देशों (सऊदी अरब) से संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत) 34 प्रतिशत से घटकर 23 प्रतिशत पर आ गया। रूसी तेल पर छूट से तेल आयात बिल में भारी बचत हुई।

रिपोर्ट के अनुसार, रूस से आयात का अनुमानित इकाई मूल्य वित्तवर्ष 2023 और वित्तवर्ष 2024 के 11 महीनों में पश्चिम एशिया से संबंधित स्तरों की तुलना में क्रमशः 16.4 प्रतिशत और 15.6 प्रतिशत कम था।

मारुति सुजुकी ने अप्रैल में बेचीं 1.68 लाख कारें

नई दिल्ली ।

देश की वाहन विनिर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) की अप्रैल महीने में कुल बिक्री 4.7 प्रतिशत बढ़कर 1,68,089 इकाई रही। कंपनी ने अप्रैल, 2023 में 1,60,529 वाहन बेचे थे। मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा` कि घरेलू बाजार में यात्री वाहनों की कुल बिक्री 1,37,952 इकाई रही, जबकि एक साल पहले समान अवधि में यह 1,37,320 इकाई थी। ऑल्टो और एस-प्रेसो सहित छोटी कारों की बिक्री अप्रैल, 2023 के 14,110 इकाई की तुलना में घटकर पिछले महीने 11,519 इकाई रह गई। बलेनो, सेलेरियो, डिजायर, इग्निस, स्विफ्ट, टूर एस और वैगनआर सहित कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री भी पिछले महीने घटकर 56,953 इकाई रह गई, जो पिछले साल अप्रैल में 74,935 इकाई थी। ब्रेज़ा, एर्टिगा, एस-क्रॉस और एक्सएल6 जैसे यूटिलिटी वाहनों की बिक्री पिछले महीने 56,553 इकाई रही, जबकि

अप्रैल, 2023 में यह 36,754 इकाई थी। अप्रैल में वैन की बिक्री 12,060 इकाई रही, जबकि एक साल पहले यह 10,504 इकाई थी।

हल्के वाणिज्यिक वाहन सुपर कैरी की बिक्री अप्रैल, 2023 के 2,199 इकाई से पिछले महीने बढ़कर 2,496 इकाई हो गई। एमएसआई के अनुसार, पिछले महीने उसका निर्यात 22,160 इकाई रहा, जबकि पिछले साल अप्रैल में यह 16,971 इकाई रहा था।

डीजीसीए ने गो फर्स्ट के 54 विमानों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल किया

दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश के बाद लिया गया फैसला

मुंबई ।

एविएशन रेगुलेटर डीजीसीए ने गो फर्स्ट एयरलाइन के सभी 54 विमानों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया है। इससे पट्टेदारों को राहत मिली है। हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने एयरलाइन के 54 विमानों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल करने का आदेश दिया था। पिछले शुक्रवार को दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश के बाद ये फैसला ` लिया गया है। दिल्ली हाई कोर्ट ने आदेश दिया था कि रजिस्ट्रेशन कैंसिलेशन को पांच कार्य दिवस के भीतर करना है। इससे अटके हुए विमानों से संबंधित तमाम अन्य मुद्दों पर पट्टेदारों को राहत प्रदान करने की जरूरत बताई गई थी। दिल्ली हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति तारा वितस्ता गंजू ने पिछले शुक्रवार को पट्टेदारों को लंबे समय से खड़े विमानों को लेकर रखरखाव की मंजूरी दे दी थी। बशर्ते उन्हें भारतीय कानून के अनुसार डी-रजिस्टर और निर्यात नहीं कर दिया जाता। कोर्ट ने कहा था, प्रतिवादी डीजीसीए और भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण (एएआई) याचिकाकर्ता पट्टेदारों की सहायता करेंगे और उन्हें हवाई अड्डों तक पहुंच प्रदान करेंगे। गो एयर और एयरलाइन के रेजोल्यूशन प्रफेशनल्स (आरपी) को किसी भी विमान तक पहुंचने, उसमें प्रवेश करने या उसे संचालित करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। साथ ही विमान से सहायक उपकरण, स्पेयर पार्ट्स, दस्तावेज और रिकॉर्ड को हटाने, बदलने से भी रोक दिया गया है। टाटा की एयर इंडिया और वित्तीय रूप से मजबूत इंडिगो दोनों ने लगभग 15 एयरबस ए320 फैमिली प्लेन्स को खरीदने के लिए पट्टादाताओं से संपर्क किया है। उन्हें अपेक्षाकृत जल्दी उड़ान भरने योग्य बनाया जा सकता है। बाकी विमानों को प्रैट एंड व्हिटनी से अपने खराब इंजन, पुर्जों के रिप्लेसमेंट के लिए प्रतीक्षा करनी होगी। वह कई महीनों से इंडिगो को उन्हें उपलब्ध कराने में असमर्थ है। इसके चलते इंडिगो के 75 से अधिक विमान खड़े हैं। गौरतलब है` कि गो फर्स्ट एयरलाइन ने पिछले साल 2 मई, 2023 को परिचालन बंद कर दिया था और कंपनी जमीन पर आ गई थी।

रियल एस्टेट खंड में निवेश बढ़कर 5,743 करोड़ हुआ

- पिछले साल से 3 गुना बढ़ गया निवेश

नई दिल्ली ।

आवासीय रियल एस्टेट खंड में निवेश मार्च तिमाही में तीन गुना से अधिक होकर 5,743 करोड़ रुपये हो गया। एक रियल एस्टेट परामर्श कंपनी के अनुसार यह रियल एस्टेट क्षेत्र में कुल प्रवाह का 63 प्रतिशत है। बुधवार को जारी पूंजी बाजार की एक रिपोर्ट में कहा गया कि मार्च तिमाही के दौरान रियल एस्टेट में निवेश बढ़कर 9,124 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले साल समान अवधि में 8,830 करोड़ रुपये था।

रिपोर्ट के अनुसार कुल निवेश में से आवासीय खंड में निवेश बढ़कर 5,743 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले साल समान तिमाही में 1,735 करोड़ रुपये था। कार्यालय संपत्तियों में निवेश मामूली बढ़कर` वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में 2,248 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले साल इसी तिमाही में 2,180 करोड़ रुपये था हालांकि, मिश्रित उपयोग वाली परियोजनाओं में निवेश मार्च तिमाही में घटकर 865 करोड़ रुपये रह गया, पिछले साल समान तिमाही में 1,645 करोड़ रुपये था। औद्योगिक और लॉजिस्टिक खंड में भी मार्च तिमाही में 268 करोड़ रुपये का निवेश हुआ, जो पिछले साल की समान तिमाही में 2,170 करोड़ रुपये था। होटल परियोजनाओं में निवेशकों ने समीक्षाधीन तिमाही में कोई रुचि नहीं दिखाई। हालांकि पिछले साल समान तिमाही में इस खंड में 1,100 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

अनिल अंबानी की तीन कंपनियां खरीद सकती है आईआईएचएल

मुंबई ।

भारी कर्ज संकट का सामना कर रहे उद्योगपति अनिल अंबानी के हाथ से एक साथ तीन कंपनियां निकल सकती हैं। बताया जा रहा है` कि हिंदूजा ग्रुप की कंपनी इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड (आईआईएचएल) रिलायंस कैपिटल की तीन बीमा कंपनियों को खरीदने की तैयारी में है।

सूत्रों के मुताबिक इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (आईआरडीएआई) अगले कुछ दिनों में इसे हरी झंडी दे सकता है। रेगुलेटर का मानना है कि रिलायंस कैपिटल एक बड़ी गैर-बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी है, बैंकरप्सी प्रॉसीडिंग में उलझ गई है और इसे कोर्ट द्वारा निर्धारित समयसीमा के भीतर बंद किया जाना चाहिए।

पिछले हफ्ते कमेटी ऑफ क्रेडिटर्स ने आईआईएचएल को 27 मई की समयसीमा तक यह प्रक्रिया पूरी करने को कहा था। हालांकि कंपनी ने बैंकों को बताया था कि आईआरडीएआई की मंजूरी के बिना वह लेनदेन को पूरा नहीं कर पाएगी। नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने रिलायंस कैपिटल के लिए आईआईएचएल की 9,650 करोड़ की समाधान योजना को 27 फरवरी को अपनी मंजूरी दी थी। एनसीएलटी ने आईआईएचएल को 90 दिनों की अवधि के भीतर यह सौदा पूरा करने का निर्देश दिया था। मार्च में एडमिनिस्ट्रेटर को लिखे पत्र में आईआरडीएआई ने इस डील के बारे में अपनी आपत्तियां व्यक्त की थीं। रेगुलेटर ने आईआइएचएल के डाइवर्स शेयरहोल्डिंग स्ट्रक्चर पर सवाल उठाया था जिसमें किसी के भी पास 10 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी नहीं है। आईआरडीएआई ने आईआईएचएल के शेयरधारकों के बारे में विस्तृत जानकारी मांगी थी। एक सूत्र ने बताया कि आईआईएचएल ने आईआरडीएआई के सभी सवालों का समाधान कर दिया है और उम्मीद है कि रेगलुटेर जल्दी इसे मंजूरी दे देगा।

कच्चे तेल में गिरावट, पेट्रोल-डीजल स्थिर

नई दिल्ली । वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमत में पहले के मुकाबले कुछ गिरावट देखी गई है। ब्रेंट क्रूड की कीमत घटकर 84 डॉलर और डब्ल्यूटीआई क्रूड 80 डॉलर प्रति बैरल के करीब आ गया है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने गुरुवार को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर है। वैश्विक बाजार में हफ्ते के चौथे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंड क्रूड 83.88 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। वहीं वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 79.43 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

जिंदल स्टेनलैस उत्पादन क्षमता बढ़ाने 5,400 करोड़ का निवेश करेगी

नई दिल्ली । जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड (जेएसएल) 5,400 करोड़ रुपये का निवेश कर अपनी उत्पादन क्षमता को 42 लाख टन सालाना तक बढ़ाने की योजना बना रही है। कंपनी के प्रबंध निदेशक अभ्युदय जिंदल ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह निवेश अगले दो साल के दौरान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लगभग 90 प्रतिशत निवेश आंतरिक स्रोतों से आएगा। निवेश योजना का ब्योरा साझा करते हुए जिंदल ने कहा कि इससे कंपनी की धातु पिघलाने की क्षमता 700 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश के कारण 40 प्रतिशत बढ़कर 42 लाख टन प्रति वर्ष हो जाएगी। दूसरा, कंपनी ने ओडिशा के जाजपुर में अपने संयंत्र में डाउनस्ट्रीम लाइनों के विस्तार के लिए लगभग 1,900 करोड़ रुपये अलग रखे हैं। इसके अलावा कंपनी ने रेलवे साइडिंग, टिकाऊपन से संबंधित परियोजनाओं और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन जैसी अवसंरचना सुविधाओं के संबंधित उन्नयन के लिए लगभग 1,450 करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं। साथ ही कंपनी क्रोमेनी स्टील्स प्राइवेट लिमिटेड (सीएसपीएल) में 54 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी का अधिग्रहण करेगी।

सीसीआई ने अधिवक्ताओं, विधि कंपनियों से मांगे आवेदन

नई दिल्ली । विभिन्न अदालतों और न्यायाधिकरणों के सामने निष्पक्ष व्यापार का प्रति निधित्व करने के लिए भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने अधिवक्ताओं और विधि कंपनियों से आवेदन आमंत्रित किए हैं। कानून फर्मों से जुड़े और अदालतों में प्रैक्टिस करने वाले अधिवक्ता दोनों ही आयोग के विधिक पैनल में शामिल होने के लिए पात्र हैं। पैनल में शामिल होने के लिए आवेदन एक मई से 31 मई तक किए जा सकते हैं। नियामक ने एक नोटिस में कहा है कि विभिन्न न्यायालयों और न्यायाधिकरणों के समक्ष आयोग और महानिदेशक का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिवक्ताओं, कानून फर्मों का एक पैनल का गठन किया जा रहा है। विधि फर्म और प्रैक्टिस करने वाले वकील इस पैनल में शामिल होने के लिए पात्र हैं। पैनल में शामिल होने के इच्छुक अधिवक्ताओं और विधि फर्मों के लिए योग्यता, अनुभव, शुल्क, नियम, शर्तें और आवेदन प्रारूप से संबंधित दिशानिर्देश प्रतिस्पर्धा आयोग की वेबसाइट से प्राप्त किए जा सकते हैं।

विनिर्माण क्रय प्रबंधक सूचकांक अप्रैल में घटकर 58.8 हुआ

नई दिल्ली । भारत के विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधि अप्रैल में सुस्त रही, लेकिन फिर भी परिचालन स्थितियों में साढ़े तीन साल में दूसरा सबसे तेज सुधार दर्ज किया गया जिसे बढ़ती मांग का समर्थन मिला। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अप्रैल में घटकर 58.8 हो गया जो मार्च में 59.1 था। पीएमआई के तहत 50 से ऊपर सूचकांक होने का मतलब उत्पादन गतिविधियों में विस्तार है जबकि 50 से नीचे का आंकड़ा गिरावट को दर्शाता है। एचएसबीसी के एक मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि मजबूत मांग की स्थिति के कारण उत्पादन में और वृद्धि हुई, हालांकि मार्च की तुलना में यह वृद्धि थोड़ी धीमी रही। रिपोर्ट में कहा गया कि भारतीय विनिर्माताओं ने अप्रैल में घरेलू और बाहरी ग्राहकों से अपने माल की मजबूत मांग की सूचना दी। कुल नए ठेके में तेजी से वृद्धि हुई है और विस्तार की गति 2021 की शुरुआत के बाद से दूसरी सबसे मजबूत रही। इसके अलावा अप्रैल में नए निर्यात ठेकों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यद्यपि कुल बिक्री की तुलना में यह वृद्धि धीमी रही, जिससे पता चलता है कि घरेलू बाजार वृद्धि का मुख्य चालक बना रहा। सामग्री और श्रम लागत में वृद्धि की खबरों के बीच भारतीय विनिर्माताओं ने अप्रैल में अपने विक्रय मूल्यों में वृद्धि की। उन्होंने कहा कि हालांकि, कंपनियों ने उत्पादन शुल्क बढ़ाकर इस वृद्धि का बोझ उपभोक्ताओं पर डाल दिया, क्योंकि मांग मजबूत बनी रही जिसके परिणामस्वरूप मुनाफे में सुधार हुआ।

इंडिगो ने आईजीआई एयरपोर्ट पर दिव्यांग यात्रियों के लिए शुरू की विशेष सुविधा

नई दिल्ली । इंडिगो एयरलाइन दिव्यांग यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के टर्मिनल 1 पर खासतौर से नया चेकिंग काउंटर शुरू किया गया है जो दिव्यांग यात्रियों की सहूलियत को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट की टर्मिनल 1 पर इंडिगो ने स्पेशली एबल्ड एयरलाइन स्टाफ को भी तैनात किया है। ये स्टाफ भी स्पेशली एबल्ड है, ताकि दिव्यांग यात्री सहज महसूस कर सकें। वहीं किसी तरह की परेशानी होने पर उनकी मदद की जा सके। इंडिगो में स्पेशली एबल्ड एयरलाइन स्टाफ वर्तमान में 20 है, जिसे आने वाले समय में आवश्यकता के आधार पर बढ़ाया जा सकता है। गौरतलब है कि सभी यात्रियों को किफायती, समय पर, परेशानी रहित यात्रा अनुभव देने के लिए ये शुरुआत की गई है। एयरलाइन ने दिव्यांगों की सहूलियत को ध्यान में रखकर इसकी शुरुआत की है। वहीं बा दें कि इंडिगो ऐसी एयरलाइन है जहां सुविधाएं, प्रौद्योगिकी, जानकारी, विशेषाधिकार विकलांग व्यक्ति के लिए सुलभ बनाए गए है। बता दे की इंडिगो की कोशिश है कि इंडिगो एयरलाइंस यात्रा करने के दौरान यात्रियों को किफायती, परेशानी मुक्त सफर समय पर मिल सके।इसके लिए इंडिगो ने केबिन क्रू सदस्यों को कैरी ऑन और सहायक उपकरणों के संबंध में स्पेशल ट्रेनिंग दी है। दिव्यांग यात्रियों की सहायता करने के लिए अतिरिक्त ग्रैब बार वाले टॉयलेट भी लगाए गए हैं।

शेयर बाजार हल्की बढ़त के साथ बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार गुरुवार को हल्की बढ़त के साथ बंद हुआ। दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों और खरीदारी से बाजार की शुरुआत अच्छी रही पर बाद में आये दबाव से ये सीमित दायरे में पहुंच गया। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप 0.9 फीसदी और स्मॉलकैप इंडेक्स 0.29 फीसदी पर बंद हुए। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 128.33 अंक करीब 0.17 फीसदी बढ़कर 74,611.11 अंक पर बंद हुआ। दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज निफ्टी भी 43.35 अंक तकरीबन 0.19 फीसदी ऊपर आकर बंद हुआ।

वहीं गत दिवस महाराष्ट्र दिवस पर बाजार बंद था जबकि इसके पहले मंगलवार को बाजार सुबह उपर आया पर दिन के अंत में में बढ़त गंवाकर गिरावट के साथ बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह विश्व भर के बाजारों से` मिले अच्छे संकेतों की वजह से गुरुवार को घरेलू शेयर बाजार की शुरुआत तेजी के साथ हुई। बीएसई सेंसेक्स 150 अंक बढ़कर 74,639 पर और एनएसई निफ्टी-50 41 अंक बढ़कर 22,646 पर पहुंच गया। टाटा मोटर्स, एमएंडएम, रिलायंस, अल्ट्राटेक सीमेंट, एचडीएफसी बैंक ने सेंसेक्स पर बढ़त हासिल की, जबकि एचसीएल टेक, बजाज फाइनेंस, एचयूएल और एक्सिस बैंक लाल निशान में कारोबार कर रहे थे!

ऐ शियाई बाजारों में भी गुरुवार को गिरावट के साथ कारोबार हुआ। गुरुवार की सुबह अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दो दिवसीय बैठक के बाद ब्याज दरों को अपरिवर्तित बनाए रखने के फैसले के बाद ज्यादातर एशियाई बाजारों में ये गिरावट आई। जापान का निक्की 225 0.29 फीसदी नीचे था, जबकि व्यापक आधारित टॉपिक्स सूचकांक 0.11 फीसदी गिरा। दक्षिण कोरिया का कोस्पी 0.08 फीसदी की गिरावट के साथ लगभग सपाट कारोबार कर रहा था।

अमेरिकी बेंचमार्क सूचकांक जो पिछले कारोबारी सत्र में 2 फीसदी तक गिर गए थे, यूएस फेड बैठक के परिणाम के बाद मिश्रित नोट पर समाप्त हुए। डॉव में 0.23 फीसदी की वृद्धि के साथ 87.37 अंक की बढ़त हुई जबकि एसएंडपी 500 में 0.34 फीसदी और नैस्डैक कंपोजिट में 0.33 फीसदी की गिरावट रही।

अडाणी पावर के राजस्व में 37 प्रतिशत की वृद्धि

मुंबई ।

अडाणी पावर ने वित्तवर्ष 2024 के लिए राजस्व में 37 प्रतिशत की वृद्धि (साल-दर-साल) 50,960 करोड़ रुपये दर्ज की, जबकि कमाई (ईबीआईटीडीए) दोगुना से अधिक बढ़कर 18,789 करोड़ रुपये हो गई। वित्तवर्ष 2024 के लिए कर पूर्व समेकित लाभ (पीबीटी) पिछले वित्तवर्ष के 7,675 करोड़ रुपये की तुलना में दोगुना से अधिक 20,792 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी ने कहा, चौथी तिमाही के लिए राजस्व 29 प्रतिशत बढ़कर 13,787 करोड़ रुपये (सालाना) हुआ और कमाई (ईबीआईटीडीए) से अधिक बढ़कर 5,273 करोड़ रुपये हो गया।

जनवरी-मार्च अवधि के लिए कर पूर्व समेकित लाभ वित्तवर्ष 23 की चौथी तिमाही में 898 करोड़ रुपये की तुलना में लगभग चार गुना बढ़कर 3,558 करोड़ रुपये हो गया। अदाणी समूह के अध्यक्ष गौतम अदाणी ने कहा कि जैसे-जैसे भारत अधिक टिकाऊ ऊर्जा भविष्य की ओर बढ़ रहा है, अडाणी कंपनियों का पोर्टफोलियो देश की आर्थिक वृद्धि का समर्थन करने और उसकी आकांक्षाओं को साकार करने में मदद करने के लिए नवीन, विश्वसनीय और स्केलेबल समाधान प्रदान करना जारी रखेगा।

चौथी तिमाही के साथ-साथ वित्तवर्ष 24 के दौरान, मुंद्रा, नए चालू हुए गोड्डा प्लांट, उडुपी और महान के नेतृत्व वाले लगभग सभी संयंत्रों द्वारा उच्च मात्रा में योगदान दिया गया। कंपनी ने कहा कि पूरे भारत में बिजली की बढ़ती मांग के कारण घरेलू बिजली की बिक्री जारी रही और आयातित कोयले व वैकल्पिक ईंधन की गिरती कीमतों से बिजली खरीद समझौते (पीपीए) के तहत उठान को और समर्थन मिला।

अदाणी पावर लिमिटेड के सीईओ, एस.बी.ख्यालिया ने कहा, अदाणी पावर ने अपनी मूल शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए एक और उत्कृष्ट तिमाही दर्ज की है, जिसमें एक वर्ष में असाधारण परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन रहा है, जो इसकी ठोस रणनीति और परिचालन उत्कृष्टता का एक उपयुक्त प्रमाण है। बिजली की मांग में सुधार, कम आयातित कोयले की कीमतों और बड़ी स्थापित क्षमता के कारण वित्तवर्ष 2024 में समेकित बिजली बिक्री की मात्रा 79.3 अरब यूनिट थी, जो वित्तवर्ष 23 में 53.4 अरब यूनिट से 48 प्रतिशत अधिक थी।

अब 6 एयरबैग्स के साथ आएंगी कुशाक और स्लाविया

मुंबई: कार चालकों और सवारों के लिए सबसे जरुरी यदि कुछ होता है, तो वह है सेफ्टी। कई मामलों रोड एक्सीडेंट्स जानलेवा भी साबित हो जाते हैं। उनकी जान की परवाह करते हुए और सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के तहत स्कोडा ने कुशाक और स्लाविया के 2024 मॉडल्स में शानदार अपडेट्स किए हैं। ऐसे में, दोनों ही मॉडल्स के सभी वैरिएंट्स में अब 6 एयरबैग्स मिलेंगे। यह पेशकश कंपनी के ऐतिहासिक मेड-फॉर-इंडिया, रेडी-फॉर-द-वर्ल्ड इंडिया 2.0 प्रोडक्ट पोर्टफोलियो के लिए एमवाई24 अपडेट का हिस्सा है। पीटर जनेबा, ब्रांड डायरेक्टर, स्कोडा ऑटो इंडिया, ने कहा, ?सुरक्षा स्कोडा की नींव में है। हमें ग्लोबल एनसीएपी क्रैश टेस्ट में बच्चों और वयस्कों की सुरक्षा के मामले में 5-स्टार रेटिंग मिली है। हम हमेशा से ही अपने ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करते आ रहे हैं, और यह अपडेट भी इसी का हिस्सा है। स्कोडा कुशाक और स्लाविया के टॉप-ऑफ-द-लाइन वैरिएंट्स में ड्राइवर के लिए इलेक्ट्रिक सीट की सुविधा भी शामिल है। साथ ही, डैश के केंद्र में स्कोडा प्ले ऐप्स के साथ 25.4 सेमी की इंफोटेनमेंट स्क्रीन मिलती है। यह सिस्टम एप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो के साथ वायरलेस तरीके से लिंक होता है।

केकेआर और मुम्बई इंडियंस में मुकाबला आज

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल में शुक्रवार को मुंबई इंडियंस की टीम अपने घरेलू मैदान पर कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) का मुकाबला करेगी। इस मैच में केकेआर जीत के साथ ही अपनी लय बरकरार रखने उतरेगी। केकेआर इस मैच में जीत की प्रबल दावेदार है। केकेआर इस मैच में जीत के साथ ही प्लेऑफ के लिए अपनी दावेदारी और मजबूत करना चाहेगी। उसने इस सत्र में 9 मैच में से 6 में जीत दर्ज की है और उसके 12 अंक हैं। वहीं मुम्बई ने केवल तीन मैच जीते हैं और छह अंक ही होने के कारण वह प्लेऑफ से बाहर हो गयी है। मुम्बई की टीम अंकतालिका में 9वें स्थान पर है। केकेआर का लक्ष्य इस मैच में बड़ा स्कोर बनान रहेगा क्योंकि वानखेड़े स्टेडियम की पिच बल्लेबाजी की सहायक रही है। यहां जमकर चौके और छक्के भी लगते हैं। पिच पर अच्छी उछाल के कारण गेंद आसानी से बल्ले पर आती है। ऐसे में 200 रन का स्कोर भी यहां आराम से हासिल किया जा सकता है। इस मैदान पर दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में मुंबई ने 234 रन बनाये थे। ऐसे में इस मैच में बड़े स्कोर देखने को मिलेंगे। मुम्बई की टीम के बल्लेबाज अब तक अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। टीम के पास रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, इशान किशन और कप्तान हार्दिक पंड्या जैसे खिलाड़ी हैं पर टीम में निरंतरता की कमी है। गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह को छोड़कर कोई भी गेंदबाज प्रभावित नहीं कर पाया है। वहीं केकेआर के पास अंगकृष रघुवंशी, फिलिप साल्ट जैसे आक्रामक बल्लेबाज हैं। वहीं सुनील नरेन जैसा ऑलराउंडर है। नरेन ने इस सत्र में जबरदस्त बल्लेबाजी ओर गेंदबाजी की है, कप्तान श्रेयस अय्यर हालांकि अब तक अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। टीम के पास रिंक सिंह, आंद्रे रसेल जैसे हिटर हैं। पिछले मैच में हर्षित राणा ने काफी अच्छी गेंदबाजी की थी। कुल मिलाकर मैच रोमांचक होने की उम्मीद है।

टीम

मुंबई = हार्दिक पंड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, टिम डेविड, इशान किशन, विष्णु विनोद, नेहल वढेरा, सूर्यकुमार यादव, डेवाल्ड ब्रेविस, पीयूष चावला, श्रेयस गोपाल, अंशुल कंबोज, मोहम्मद नबी, शम्स मुलानी, रोमारियो शेफर्ड, तिलक वर्मा, जसप्रित बुमरा , गेराल्ड कोएत्जी, कुमार कार्तिकेय, आकाश मधवाल, अर्जुन तेंदुलकर, नुवान तुषारा, नमन धीर, शिवालिक शर्मा, ल्यूक वुड, क्वेना मफाका।

केकेआर = श्रेयस अय्यर (कप्तान), श्रीकर भरत, मनीष पांडे, रहमानुल्लाह गुरबाज, रमनदीप सिंह, नितीश राणा, शेरफेन रदरफोर्ड, रिंकू सिंह, वेंकटेश अय्यर, सुनील नरेन, अनुकूल रॉय, आंद्रे रसेल, वैभव अरोड़ा, दुष्मंथा चमीरा, हर्षित राणा, मुजीब उर रहमान, चेतन सकारिया, मिशेल स्टार्क, सुयश शर्मा, वरुण चक्रवर्ती, साकिब हुसैन, अंगकृष रघुवंशी, फिलिप साल्ट।

आईपीएल 2024 : तेज गेंदबाज मयंक यादव शेष लीग मैचों से हो सकते हैं बाहर

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जाइंट्स (एलएसजी) के तेज गेंदबाज मयंक यादव मंगलवार को मुंबई इंडियंस (एमआई) के खिलाफ मैच के दौरान पेट में दर्द के कारण मैदान से बाहर चले गए। अब उनके आईपीएल 2024 के शेष लीग मैचों से बाहर होने की संभावना है। सूत्रों ने बताया कि उनके ठीक होने में पहले की अपेक्षा अधिक समय लगेगा।

सूत्र ने कहा, 'वह बुरी स्थिति में नहीं हैं, लेकिन शेष मैचों में उनकी भागीदारी संदेह में है, भले ही फ्रेंचाइजी टूर्नामेंट के प्रमुख भाग के लिए उनकी सेवा सुरक्षित करना चाहती है। वह बुधवार को स्कैन के लिए गए और रिपोर्ट अभी भी आनी बाकी है। मेडिकल टीम ने कम से कम तीन सप्ताह के आराम का सुझाव दिया है, तभी वह पूरी तरह से ठीक हो जाएंगे।'

मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने मंगलवार को एमआई के खिलाफ मैच के बाद मयंक की चोट पर अपडेट देते हुए कहा था, 'ऐसा लग रहा है कि उसे उसी जगह पर चोट लगी है, उसका रिहैब बिल्कुल सही रहा है, उसने पिछले कुछ हफ्तों में दर्द रहित गेंदबाजी की है, वह ठीक दिख रहा है। हम अच्छी स्थिति में हैं, स्कैन होगा और हमें कल पता चलेगा।'

सूत्रों ने दावा किया कि मयंक एमआई के खिलाफ मैच के लिए 'फिट नहीं थे', लेकिन तीन सप्ताह में पांच मैच मिस करने के बाद प्लेइंग इलेवन में लौट आए क्योंकि कप्तान केएल राहुल उन्हें चाहते थे।' 21 वर्षीय तेज गेंदबाज मंगलवार को हुए मुकाबले के दौरान शायद ही अपनी लय में दिखे क्योंकि उन्हें अपनी लैंथ से संघर्ष करना पड़ा और उन्होंने ज्यादातर फुलर गेंदें फेंकी और मोहम्मद नबी का विकेट लेने से पहले 3.1 रन देकर 31 रन दिए।

गौर हो कि इस तेज गेंदबाज ने पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के खिलाफ अपने पहले मैच में अपनी तेज गति से क्रिकेट जगत का ध्यान आकर्षित किया। दिल्ली के इस तेज गेंदबाज ने लगातार 145 से ऊपर गेंदबाजी की और 155.8 किमी/घंटा की शीर्ष गति के साथ 27 रन देकर 3 विकेट लिए। एलएसजी टूर्नामेंट का अपना आखिरी लीग मैच 17 मई को मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेलेगा।

प्लेऑफ के लिए दिल्ली , गुजरात और पंजाब की उम्मीदें शीर्ष पांच टीमों के परिणामों पर निर्भर

मुम्बई (एजेंसी) । आईपीएल के इस सत्र में जहां मुम्बई इंडियंस और रायल चैलेंजर्स आरसीबी प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गयी है। वहीं तीन टीमों का प्लेऑफ में पहुंचना बचे हुए मैचों में जीत के साथ ही अन्य टीमों के परिणामों पर भी निर्भर करेगा। इसका कारण है कि ये तीन टीमें हैं दिल्ली कैपिटल्स, गुजरात टाइटंस और पंजाब किंग अब अपने-अपने सारे मैच जीत लें तो भी अधिकतम 16 अंक तक ही पहुंच सकती हैं। इस प्रकार से इन तीनों के प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना तो बनी है पर ऐसा तभी होगा जब अंक तालिका की शीर्ष-5 में से कम से कम दो या तीन टीमें अपने ज्यादातर मैच हार जाएं। आईपीएल 2024 के लिए प्लेऑफ का वास्तविक मुकाबला इन पांच शीर्ष टीमों के बीच ही है। राजस्थान रॉयल्स अगर अपने बाकी बचे 5 मैचों में से एक भी जीत ले तो उसके 18 अंक हो जाएंगे। वहीं कोलकाता नाइटराइडर्स और लखनऊ सुपरजायंट्स के 12-12 अंक हो गये हैं। अगर ये दोनों टीमें अपने बाकी बचे 5 में से 3 मैच जीत जाएं तो भी आसानी से प्लेऑफ में पहुंच जाएंगी। वहीं चेन्नई सुपर किंग्स और सनराइजर्स हैदराबाद के अभी 9-9 मैचों में से 10-10 अंक हैं। ऐसे में इन दोनों टीमों के बीच ही प्लेऑफ की चौथी टीम के लिए कड़ी टक्कर होगी।

भारतीय महिला टीम ने बांग्लादेश को तीसरे टी20 में हराया, 3-0 से सीरीज में बनाई अजेय बढ़त

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने बांग्लादेश महिला क्रिकेट टीम को तीसरे टी20 मैच में 7 विकेट से रौंद दिया। इसके साथ ही भारतीय टीम ने पांच मैचों की टी20 सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली है। सिलहट में खेले गए मैच में मेजबान टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 117 रन ही बनाए। जिसके जवाब में भारत ने शेफाली वर्मा (51) और स्मृति मंधाना (47) की पारियों की बदौलत 19वें ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया।

बता दें कि, बांग्लादेश के 118 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने शेफाली (51 रन, 38 गेंद, आठ चौके) के अर्धशतक और स्मृति मंधाना (47 रन, 42 गेंद, पांच चौके, एक छक्का) के साथ उनकी पहले विकेट 91 रन की साझेदारी की। इस साल टी20 महिला विश्व कप बांग्लादेश में ही होना है और इसलिए भारतीय टीम का यह प्रदर्शन काफी अहम है।

वहीं बांग्लादेश की टीम इससे पहले सलामी बल्लेबाज दिलारा अख्तर (25 गेंद में 39 रन) और कप्तान निगार सुल्ताना (28) की उम्दा पारियों के बावजूद 20 ओवर में आठ विकेट पर 117 रन ही बना सकी। भारत की ओर से राधा यादव ने 22 रन देकर दो विकेट चटकाए। रेणुका सिंह, पूजा वस्त्राकर और श्रेयंका पाटिल को एक-एक विकेट मिला। लक्ष्य का पीछा करने उतरे भारत को शेफाली और स्मृति ने तूफानी शुरुआत दिलाई। दोनों ने पावर प्ले में बिना विकेट खोए 59 रन जोड़े।

स्मृति ने मारूफा अख्तर जबकि शेफाली ने फारिहा त्रिशना पर चौके से खाता खोला। शेफाली ने शोरिफा खातून का स्वागत तीन चौकों के साथ किया जबकि नाहिदा अख्तर पर भी लगातार तीन चौके मारे। शेफाली ने फाहिमा खातून की गेंद पर एक रन के साथ नौवां अर्धशतक पूरा किया लेकिन अगले ओवर में रितु मोनी को उन्हीं की गेंद पर कैच दे बैठीं। स्मृति ने राबेया पर पारी का पहला छक्का जड़ा लेकिन नाहिदा की गेंद पर फाहिमा के हाथों लपकी गई।

अगले साल भारत में होगी विश्व जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप : बीडब्ल्यूएफ

नई दिल्ली। विश्व जूनियर चैंपियनशिप अगले साल 2025 में भारत में होगी। इसका आयोजन गुवाहाटी में राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र में किया जाएगा। बैडमिंटन की वैश्विक संचालन संस्था (बीडब्ल्यूएफ) ने कहा कि करीब 15 साल बाद ये चैंपियनशिप भारत में होने जा रही है। इससे पहले साल 2008 में इसका आयोजन भारत में हुआ था। बीडब्ल्यूएफ ने कहा, ''टीम और व्यक्तिगत दोनों स्पर्धाएं गुवाहाटी राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र में आयोजित की जाएंगी।'' पिछली बार इन खेलों का आयेजन पुणे में हुआ था। वहीं इसको लेकर बीडब्ल्यूएफ के अध्यक्ष पॉल-एरिक होयर ने कहा, ''भारत में तेजी से बैडमिंटन में बेहतरीन प्रतिभाएं सामने आ रही हैं, ऐसे में विश्व जूनियर प्रतियोगिता का दूसरी बार भारत में आयोजनप और भी अहम है।'' उन्होंने कहा, ''बीएआई के राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र बैडमिंटन में सभी अत्याधुनिक सुविधाएं है और ऐसे में यह उभरती हुई प्रतिभाओं के लिए टीम और व्यक्तिगत खिताब के लिए चुनौती पेश करने का बेहतरीन स्थान होगा।'' इस टूर्नामेंट की तारीखों की अभी पुष्टि नहीं हुई है। वहीं बीडब्ल्यूएफ के थॉमस और उबेर कप फाइनल्स का अगला सत्र डेनमार्क के होर्सेन्स में होगा।

धोनी जैसे फिनिशर बन सकते हैं रिंकू : सिद्धू

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू का मानना है कि रिंकू सिंह एक बेहतरीन फिनिशर हैं और वह इस भूमिका में पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की जगह ले सकते हैं। धोनी के संन्यास के बाद से ही भारतीय टीम किसी अच्छे फिनिशर की तलाश में है और सिद्धू का मानना है कि ये रिंकू से पूरी हो सकती है। उन्होंने कहा कि रिंकू इस मामले में टीम के लिए फायदेमंद साबित होंगे। रिंकू ने कुछ मैचों में भारतीय टीम के लिए अपनी प्रतिभा दिखाई है। कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए वह फिनिशर की भूमिका निभा रहे हैं। रिंकू को इस सत्र में अब तक बल्लेबाजी कौशल दिखने का पूरा अवसर नहीं मिला है। सिद्धू ने कहा, रिंकू धोनी की जगह ले सकते हैं। वह दिग्गज खिलाड़ी की तरह खेल खत्म कर सकते हैं। रिंकू काफी प्रतिभाशाली है और मैदान के सभी हिस्सों में शॉट लगाने में सक्षम है। इसके साथ ही स्वभाव की बात करें तो वह धोनी की तरह ही वह शांत और तनावमुक्त रहता है। कठिन अवसरों पर भी बल्लेबाजी करते समय वह दबाव में नहीं आता और खुलकर बल्लेबाजी करता है। ऐसे में वह भारतीय क्रिकेट का भविष्य हैं और अवसर दिये जाने पर वह वह लंबे समय तक टीम के लिए फिनिशर की जिम्मेदारी निभा सकता है।

एफआईएच प्रो लीग : सविता की बजाय सलीमा टेटे को मिली महिला हॉकी टीम की कप्तानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिडफील्डर सलीमा टेटे को अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया की जगह इस महीने के आखिर में होने वाले एफआईएच प्रो लीग के बेल्जियम और इंग्लैंड चरण के लिये भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम का कप्तान चुना गया है। नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया है।

सलीमा ने हॉकी इंडिया द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा, 'मुझे खुशी है कि टीम की कप्तानी दी गई है। यह बड़ी जिम्मेदारी है और मैं इसे लेकर उत्साहित हूं। हमारे पास मजबूत टीम है जिसमें अनुभवी और युवा खिलाड़ी हैं।% उन्होंने कहा, 'एफआईएच प्रो लीग के आगामी बेल्जियम और इंग्लैंड चरण में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। हमें अपनी कमजोरियों से पार पाना है।'

सविता ओलंपिक क्वालीफायर और उसके बाद प्रो लीग मैचों में भारत की कप्तान रही थी। बेल्जियम में मैच 22 से 26 मई तक और इंग्लैंड में एक से नौ जून तक होंगे। भारत का सामना पहले चरण में दो बार अर्जेंटीना और बेल्जियम से होगा। लंदन चरण में टीम ब्रिटेन और जर्मनी से खेलेगी। भारत इस समय प्रो लीग तालिका में छठे स्थान पर है। सलीमा को हाल ही में हॉकी इंडिया सालाना पुरस्कारों में बलबीर सिंह सीनियर वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का पुरस्कार मिला था।

भारतीय महिला टीम

गोलकीपर: सविता, बिछू देवी खारीबाम

डिफेंडर : निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, मोनिका, ज्योति छत्री, महिमा चौधरी

मिडफील्डर: सलीमा टेटे (कप्तान), वैष्णवी विट्ठल फाल्के, नवनीत कौर, नेहा, ज्योति, बलजीत कौर, मनीषा चौहान, लालरेम्सियामी

फॉरवर्ड : मुमताज खान, संगीता कुमारी, दीपिका, शर्मिला देवी, प्रीति दुबे, वंदना कटारिया, सुनेलिता टोप्पो, दीपिका सोरेंग

पाकिस्तान ने आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के लिए घोषित की टीम

लाहौर (ईएमएस)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने 10 मई से आयरलैंड और 22 मई से इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली टी20 मुकाबलों के लिए टीम घोषित कर दी है। इसमें टीम की कप्तानी बाबर आजम करेंगे। वहीं तेज गेंदबाज हारिस रऊफ को टीम में शामिल किया गया है पर लेग स्पिनर उसामा मीर को को बाहर कर दिया गया है। चयनसमिति के अनुसार टी20 विश्वकप के लिए इन दोनो ही सीरीजों में खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर होगी। पाक टीम आयरलैंड में तीन मैचों की सीरीज 10 मई से और इंग्लैंड के खिलाफ चार मैचों की सीरीज 22 मई से खेलेगी। रज्जाक ने कहा कि टीम में पहले से ही शादाब खान और अबरार अहमद जैसे स्पिनर हैं इसलिए उसामा को जगह नहीं मिली है।

पाकिस्तानी टीम इस प्रकार है- बाबर आजम (कप्तान), मोहम्मद रिजवान, आजम खान, सईम अयूब, फखर जमां, इफ्तिखार अहमद, इरफान खान नियाजी, अबरार अहमद, हसन अली, हारिस रऊफ , शाहीन शाह अफरीदी, मोहम्मद आमिर, इमाद वसीम, नसीम शाह, शादाब खान, उस्मान खान, अब्बास अफरीदी और आगा अली सलमान।

चार भारतीय एएसबीसी एशियाई अंडर-22 और युवा मुक्केबाजी चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में

नई दिल्ली। भारतीय मुक्केबाजों मांदेंगबाम जादुमणि सिंह, निखिल, अजय कुमार और अंकुश ने गुरुवार को अपने-अपने मुकाबले जीतकर एएसबीसी एशियाई अंडर-22 और युवा मुक्केबाजी चैंपियनशिप के पुरुष अंडर-22 सेमीफाइनल में जगह बनाई। जादुमणि ने 51 किग्रा के क्वार्टर फाइनल में भूटान के फुंटशो किनले को 5-0 से हराकर भारत को अच्छी शुरुआत दिलाई। निखिल (57 किग्रा) ने भी इसी तरह का दबदबा बनाया और उज्बेकिस्तान के बख्तियोरोव अयूबखोन को 4-0 से शिकस्त दी। अजय (63.5 किग्रा) और अंकुश (71 किग्रा) ने रेफरी के मुकाबले रोकने (आरएससी) पर अपने-अपने मुकाबले जीते। अजय ने मंगोलिया के दमदिंडोरज पी के खिलाफ पहले दौर में ही मुकाबला जीत लिया जबकि अंकुश ने कोरिया के ली जू सांग के खिलाफ तीसरे दौर में जीत दर्ज की। आशीष हालांकि पुरुषों के 54 किग्रा क्वार्टर फाइनल में मंगोलिया के ओयुन एर्डेन ई के खिलाफ 2-3 से हार गए। बुधवार देर रात आर्यन (92 किग्रा), निशा (52 किग्रा), आकांक्षा फलसवाल (70 किग्रा) और रुद्रिका (75 किग्रा) ने युवा वर्ग में अपने-अपने क्वार्टर फाइनल मुकाबले जीते।

अमिताभ ने भारतीय क्रिकेट टीम का हौंसला बढ़ाया

मुम्बई। आगामी टी20 विश्वकप को देखते हुए महानायक अमिताभ बच्चन ने भारतीय टीम का हौसला बढ़ाया है। अमिताभ ने अपनी आने वाली फिल्म कल्कि के अश्वत्थामा के किरदार में भारतीय खिलाड़ियों को संदेश दिया है। अमिताभ के ये विशेष संदेश वाली वीडियो नाग अश्विन की फिल्म कल्कि 2898 एडी के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से साझा किया गया है। इस वीडियो की शुरुआत में अमिताभ कह रहे हैं, ये महायुद्ध है, अब हो जा तू तैयार। अब बन जा वीर, बुलंद कर अपनी तकदीर, दिखा दम, लगा दम। अमिताभ बच्चन जैसे-जैसे कविता पढ़ रहे हैं, वीडियो में बैकग्राउंड में कल्कि 2898 एडी का म्यूजिक चल रहा है। साथ ही, इस वीडियो में भारतीय टीम के खिलाड़ी कप्तान शर्मा, विराट कोहली, और हार्दिक पांडेया के साथ-साथ वीडियो में पूर्व क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी, और हरभजन सिंह भी नजर आ रहे हैं। अमिताभ की फिल्म कल्कि 2898 एडी जल्द ही सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म में अमिताभ अश्वत्थामा का किरदार निभा रहे हैं।

भारत की टी20 विश्व कप टीम पर बोले कुमार संगकारा- यह बेहद मजबूत टीम है

स्पोर्ट्स डेस्क। श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर और राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के क्रिकेट निदेशक कुमार संगकारा ने आगामी टी20 विश्व कप 2024 के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम की सराहना की और इसे 'बेहद मजबूत' दस्ता बताया। भारत अपने टी20 विश्व कप अभियान की शुरुआत 05 जून 2024 को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में आयरलैंड के खिलाफ करेगा, इसके बाद 09 जून को उसी स्थान पर पाकिस्तान के खिलाफ अहम मुकाबला होगा। इसके बाद भारत क्रमशः 12 और 15 जून को अमेरिका और कनाडा से खेलेगा।

आईपीएल 24 में सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाफ राजस्थान रॉयल्स के मैच से पहले प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में संगकारा ने कहा कि टी20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए मेन इन ब्लू की टीम में 'उच्च गुणवत्ता वाला' स्पिन आक्रमण है। संगकारा ने कहा, 'यह बेहद मजबूत टीम है। उनके पास बल्लेबाजी है, उनके पास हरफनमौला खिलाड़ी हैं, उनके पास बहुत उच्च गुणवत्ता वाली स्पिन है और उनके पास बहुत अच्छा संयोजन है जिसे वे खेल सकते हैं।'

पूर्व श्रीलंकाई विकेटकीपर-बल्लेबाज ने कहा कि रोहित शर्मा की अगुवाई वाली भारत के पास आगामी आईसीसी आयोजन के लिए 'अच्छी तरह से संतुलित' टीम है। संगकारा ने यह भी बताया कि भारत अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में हमेशा मजबूत रहा है।

उन्होंने कहा, 'वहां की परिस्थितियों को जानने के बाद मुझे यकीन है कि राहुल (द्रविड़) और रोहित (शर्मा) को इस बात का अच्छा अंदाजा है कि विश्व कप में अपनी इच्छानुसार क्रिकेट खेलने के लिए टीम कैसी होनी चाहिए। उनके पास दो या तीन अलग-अलग खिलाड़ी होंगे। संयोजन, यह इस पर निर्भर करता है कि वे गहरी बल्लेबाजी लाइन-अप चाहते हैं या अपनी गेंदबाजी में अधिक ताकत चाहते हैं, लेकिन यह वास्तव में एक अच्छी तरह से संतुलित, बहुत मजबूत टीम है और भारत हमेशा अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में बहुत मजबूत रहा है।'

भारत ने ऋषभ पंत और संजू सैमसन सहित दो विकेटकीपरों को अपनी टीम में शामिल किया है। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली, जो मौजूदा आईपीएल 2024 में रनों का अंबार लगा रहे हैं, को भी टीम में शामिल किया गया है। रिजर्व खिलाड़ियों के रूप में शुबमन गिल, रिंकू सिंह, खलील अहमद और अवेश खान को रखा गया है। भारत को आईसीसी टूर्नामेंट के ग्रुप ए में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा और सह-मेजबान अमेरिका के साथ रखा गया है।

टी20 विश्व कप के लिए भारतीय टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पंड्या (उपकप्तान), यशस्वी जयसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), शिवम दुबे, रवींद्र जड़ेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल , अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज

दक्षिणी ब्राजील में बारिश का कहर ...10 की मौत 31 लापता

रियो डी जनेरियो । दक्षिणी ब्राजील में बारिश कहर ढहा रही है। दक्षिणी राज्य रियो ग्रांडे डो सुल में इस सप्ताह भारी बारिश के कारण दस लोगों की मौत हुई और 21 लोग लापता हैं। स्थानीय सरकार ने चेतावनी दी है कि स्थिति गंभीर है और यह कुछ दिनों में और भी खराब हो सकती है। सुरक्षा अधिकारियों ने बताया कि तूफान से हुए नुकसान के कारण 3,300 से अधिक लोगों अपना घर छोड़कर सुरक्षित स्थान पर गए है। राज्य के गवर्नर एडुआर्डो लेइट ने कहा कि उन्होंने राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा से बात की थी और हर संभव संघीय सहायता की मांग की थी। गवर्नर के अनुसार, तूफान ने हाल के वर्षों में राज्य में सबसे व्यापक तबाही मचाई है। बाढ़ और भूस्खलन के बीच पुलों के ढहने और सड़कों के नष्ट होने के कारण कई शहर अलग-थलग पड़ गए हैं।

पाकिस्तान में टैक्स चोरी करने वालों की मोबाइल सिम होगी ब्लॉक, मच सकता है हाहाकार, बैंकिंग सुविधा का लाभ उठाने वाले होंगे परेशान

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सरकार वहां के लोगों की हरकतों से इतनी परेशान हो गई है कि अब उनके खिलाफ एक बड़ा एक्शन लेने जा रही है। जी हां, पाकिस्तान में अधिकारियों ने टैक्स चोरों के खिलाफ कार्रवाई करने का मन बना लिया है। इसके तहत पांच लाख से अधिक कर टैक्स बकायादारों के मोबाइल फोन सिम कार्ड ब्लॉक करने का फैसला लिया है। फेडरल बोर्ड ऑफ रेवेन्यू (एफबीआर) ने एक इनकम टैक्स जनरल ऑर्डर (आईटीजीओ) में कहा कि 2023 में टैक्स रिटर्न जमा नहीं करने वाले 506,671 लोगों के मोबाइल सिम ब्लॉक कर दिए जाएंगे। ऐसे करने से पाकिस्तानी टैक्स चोरों में हाहाकार मच सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक एफबीआर ने पाकिस्तान दूरसंचार प्राधिकरण (पीटीए) और सभी दूरसंचार प्रदाताओं को ऐसे लोगों के सिम को ब्लॉक करने के लिए 2024 के आयकर सामान्य आदेश (आईटीजीओ) संख्या 01 को तुरंत लागू करने और 15 मई तक रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया गया है। एक आधिकारिक सूत्र ने कहा कि एफबीआर ने 2.4 मिलियन (24 लाख) संभावित करदाताओं की पहचान की है, जिन्होंने टैक्स चोरी की है। ऐसे लोगों को नोटिस भी जारी कर दिए गए हैं। एफबीआर ने मानदंड के आधार पर सिम कार्ड ब्लॉक करने के लिए 24 लाख लोगों में से करीब 5 लाख से ज्यादा लोगों का चयन किया है। ये ऐसे लोग हैं, जिन्होंने पिछले तीन सालों में से एक में टैक्सेबल इनकम घोषित की होगी और ऐसे लोगों ने टैक्स साल 2023 के लिए अपना रिटर्न दाखिल नहीं किया है। एफबीआर को 1 मार्च 2024 तक 4.2 मिलियन करदाता प्राप्त हुए, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि के दौरान 3.8 मिलियन रिटर्न प्राप्त हुए थे। बता दें कि ऐसे लोगों के सिम कार्ड तब तक ब्लॉक रहेंगे, जब तक एफबीआर या अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त द्वारा उस व्यक्ति पर अधिकार बहाल नहीं किया जाता। पाकिस्तान में सिम कार्ड ब्लॉक होने से हाहाकार मच जाएगा, क्योंकि इससे लाखों लोग परेशान हो जाएंगे। आज के समय में मोबाइल के बिना रहना आसान नहीं, ऐसे में अगर सिम कार्ड ब्लॉक हो जाता है तो बैंकिंग सुविधा का लाभ उठाने वाले लोग काफी परेशान हो जाएंगे।

क्या हैं जेनोफोबिक....बाइडेन ने भारत पर क्यों साधा निशाना

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा कि भारत, चीन, रूस और जापान से जेनोफोबिया ने अमेरिका के आर्थिक विकास को रोक दिया है। बाइडेन ने कहा कि चीन आर्थिक रूप से क्यों इतना मंद है, जापान को क्यों परेशानी हो रही है, रूस को क्यों, भारत को क्यों, क्योंकि वे जेनोफोबिक हैं। वे अप्रवासी नहीं चाहते। अप्रवासी ही हमें मजबूत बनाते हैं। बता दें कि जेनोफोबिया से ग्रसित उन्हें कहा जाता है, जो अजनबियों से डरते या बाहरी अपरिचित व्यक्तियों से नफरत करते हैं। यानी बाइडेन ने भारत को एक ऐसा देश बताया है, जो दूसरे देशों के लोगों से नफरत करता है। 2024 में फिर से सत्ता में आने के लिए फंड रेसिंग प्रोग्राम में अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था के बढ़ने का एक कारण आप और कई अन्य लोग हैं। क्यों? क्योंकि हम अप्रवासियों का स्वागत करते हैं। बाइडेन इस साल होने वाले अमेरिकी चुनान में राष्ट्रपति पद की रेस में रिपब्लिकन उम्मीदवार और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ मैदान में हैं। उन्होंने अक्सर अपने प्रतिद्वंद्वी की आप्रवासी विरोधी बयानबाजी के लिए आलोचना की है। ट्रम्प ने कार्यालय में चुने जाने पर अवैध आप्रवासन पर अंकुश लगाने और कानूनी प्रवासन को प्रतिबंधित करने का वादा किया है। अपने प्रचार अभियान के दौरान उन्होंने देश में हिंसा बढ़ने के लिए आप्रवासियों को जिम्मेदार ठहराया था। इसके विपरीत बाइडेन ने प्रवासियों के मुद्दे पर अधिक मानवीय रुख की वकालत की है। सत्ता में आने के बाद से बाइडेन ने प्रवासियों पर ट्रम्प-युग की कार्रवाई को कम कर दिया है और नई पैरोल नीतियां पेश की हैं, जो कुछ प्रवासियों को मानवीय कारणों से कानूनी रूप से प्रवेश करने की अनुमति देती हैं। हालाँकि, शोध से पता चलता है कि बाइडेन को बेरोजगारी और आप्रवासन को लेकर मतदाताओं की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।

रूस ने अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती रोकने...पेश किया प्रस्ताव

जेनेवा। रूस ने संयुक्त राष्ट्र में एक प्रस्ताव पेश किया है जिसमें सभी देशों से बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती ''हमेशा के लिए रोकने'' के वास्ते तत्काल कदम उठाने की अपील की है। दिलचस्प बात यह है कि एक सप्ताह पहले कमोबेश इसतरह का प्रस्ताव अमेरिका और जापान ने संयुक्त रूप से पेश किया था लेकिन तब रूस ने वीटो कर दिया था। संयुक्त राष्ट्र में रूस के राजदूत वासिली नेबेंजिया ने जब अमेरिका-जापान के प्रस्ताव पर वीटो किया था तब उन्होंने सुरक्षा परिषद में कहा था कि यह अंतरिक्ष में सभी प्रकार के हथियारों पर प्रतिबंध लगाने के लिए असरदार नहीं है। रूस ने जिस प्रस्ताव पर वीटो किया था उसमें पूरा ध्यान केवल परमाणु हथियारों सहित सामूहिक विनाश के हथियारों पर केन्द्रित था और उसमें अंतरिक्ष में अन्य हथियारों की तैनाती के संबंध में कोई उल्लेख नहीं था।

पापुआ न्यू गिनी में भूकंप के झटके

हांगकांग । पापुआ न्यू गिनी के 101 किमी पूर्वी दक्षिण पूर्वी हिस्से किम्बे में भूकंप के झटके महसूस किए गए है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने कहा कि 2345 ग्रीनविच मीन टाइम (जीएमटी) पर आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.9 मापी गई। भूकंप का केंद्र, 5.83 डिग्री दक्षिण अक्षांश और 151.01 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 31.3 किमी की गहराई पर निर्धारित था।

चीन में हाईवे का हिस्सा धंसा, 36 लोगों की मौत कई घायल

बीजिंग। दक्षिणी चीन में भारी बारिश के बाद हाईवे का एक हिस्सा ढह गया जिससे कई वाहन क्षतिग्रस्त हो गए और उनमें आग लग गई। इस हादसे में कम से कम 36 लोगों की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार दक्षिणी चीन के मीझोउ शहर प्रशासन ने बताया कि बुधवार रात दो बजे राजमार्ग का 17.9 मीटर लंबा हिस्सा ढह गया जिससे 23 वाहन एक गड्ढे में गिर गए। कम से कम 36 लोगों मारे गए हैं और 30 घायल हुए हैं। गुआंगदोंग प्रांत के कुछ हिस्सों में पिछले दो हफ्तों में बारिश और बाढ़ आने के साथ ही ओलावृष्टि हुई है। पिछले सप्ताहांत प्रांत की राजधानी गुआंगझोऊ में एक तूफान में पांच लोगों की मौत हुई थी। ऐसा माना जा रहा है कि बारिश के कारण राजमार्ग के नीचे सड़क का एक हिस्सा भी धंस गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि उन्हें तेज आवाज सुनाई दी जिसके बाद उन्होंने वहां एक बड़ा गड्ढा देखा। स्थानीय मीडिया में घटना के वीडियो और तस्वीरें जारी की हैं जिसमें घटनास्थल पर धुआं निकलता और आग लगी दिखाई दे रही है।

जॉर्जिया में एक महिला विरोध प्रदर्शन के दौरान छोड़ी गयी पानी की बौछार को हाथ से रोकने का प्रयास करती हुई। यहां विदेशी एजेंट्स का विराट हो रहा है।

शांति के प्रयासों में फिर अड़ंगा, किसी की नहीं सुन रहे नेतन्याहू

तेलअवीव। इजराइल और हमास के बीच बीते कई महीनों से युद्ध चल रहा है। तबाही रोकने के लिए कई बार प्रयास किए गए हैं लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला। गाजा में इजरायली सैनिकों का कत्लेआम रोकने के लिए अमेरिका और चार मुस्लिम देश एकजुट हैं। सऊदी अरब में हाल ही में हुई मीटिंग में इस बात पर जोर दिया गया कि जल्द ही गाजा में संघर्ष विराम किया जाए। इसके लिए अमेरिका इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू को मनाने की कोशिश कर रहा है। इस बीच नई डील से पहले ही नेतन्याहू ने अड़ंगा डाल दिया है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने मंगलवार को कसम खाई कि हमास के साथ समझौता हो या न हो, दोनों ही स्थिति में वह राफा में जमीनी हमला शुरू करेंगे। बता दें कि राफा शहर में 12 लाख से ज्यादा गाजावासियों ने शरण ले रखी है। बेंजामिन नेतन्याहू ने इजरायली बंधकों के परिवारों के साथ एक बैठक में कहा कि उनके कार्यालय के अनुसार इज़रायल ने राफा से फिलिस्तीनी नागरिकों को निकालना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा, हम पूरी जीत हासिल करने के लिए राफा में प्रवेश करेंगे और समझौते के साथ या उसके बिना वहां हमास बटालियनों को खत्म कर देंगे। उन्होंने कहा, इजरायल राफा को फिलिस्तीनी क्षेत्र में हमास का आखिरी प्रमुख गढ़ मानता है। राफा गाजा का सबसे दक्षिणी शहर है, जहां करीब 12 लाख फिलिस्तीनियों ने शरण ले रखी है। उन्होंने यह टिप्पणी उस समय की है, जब इजरायल और हमास के बीच संघर्षविराम की बातचीत लगभग सात महीने से चल रही है। इस युद्ध को रोकने के लिए हाल ही में सऊदी अरब ने एक मीटिंग बुलाई थी, जिसमें अमेरिका, मिस्र, कतर, जॉर्डन देशों ने हिस्सा लिया था।

प्रिय नरेंद्र के दोस्त के पास जिनपिंग, यूरोप में कमजोर होती पकड़ के बीच चीनी राष्ट्रपति मैक्रों से क्या करेंगे मिन्नत?

ओटावा (एजेंसी)। भारत का डंका दुनिया में कुछ इस तरह से बज रहा है कि अब चीन को फ्रांस और यूरोप का दरवाजा खटखटाना पड़ रहा है। उसे ये भी कहना पड़ रहा कि वो यूरोपीयन यूनियन में उसके लिए पैरवी कर दे। ये अपील चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की यूरोपीय यात्रा से कुछ दिन पहले आई है। ये अपील चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने फ्रांस के राष्ट्रपति के राजनीति सलाहकार इमैनुएल बोने के साथ फोन पर की है। चीन के विदेश मंत्रालय के अनुसार वांग यी ने टेलीफोन पर बातचीत में कहा कि मुझे उम्मीद है कि फ्रांसिसी पक्ष यूरोपीयन यूनियन में चीन के प्रति सकारात्मक नीति जारी रखने के लिए दवाब डालेगा। बीजींग और पेरिस ने स्वतंत्रता और स्वायत्ता को पीछा करते हुए दुनिया के विभाजनों के टकराव का विरोध किया। अंतरराष्ट्रीय समुदाय दोनों देशों से एक साझा आवाज की उम्मीद करता है। ऐसे में समय में जब अंतरराष्ट्रीय स्थिति जटिल और अस्थिर है।कई चुनौतियों के साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय को उम्मीद है कि चीन और फ्रांस शांति, स्थिरता, मानव जाति के समृद्ध भविष्य संबंधित मुद्दों पर एकमत रुख बनाएंगे।

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अगले सप्ताह फ्रांस, सर्बिया और हंगरी का दौरा करेंगे। बीजिंग रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष में एक बड़ी भूमिका चाहता है जिसने वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक सुरक्षा को प्रभावित किया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने ब्रीफिंग में कहा कि चीन के राष्ट्रपति और सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख शी की यात्रा पांच साल में उनकी पहली यूरोप यात्रा है और यह दुनिया के शांतिपूर्ण विकास को नई गति प्रदान करेगी। चीन यूक्रेन संघर्ष में तटस्थता का दावा करता है, लेकिन फरवरी 2022 में यूक्रेन पर मॉस्को के हमले से पहले शी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की कि उनकी सरकारों के बीच कोई सीमा नहीं दोस्ती है।

यूरोप के देशों में चीन का दबदबा पूरी तरह से घटता जा रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह भारत है। इसकी सबसे बड़ी बात है कि भारत जब किसी भी देश के साथ व्यापार करता है तो उसे अपना दोस्त बना लेता है। फ्रांस और भारत की दोस्ती इसका जीता जागता प्रमाण है। चीन दुनिया के देशों से व्यापार के नाम पर उन्हें चूना लगाना जानता है। उसकी पोल दुनिया के सामने अब खुल चुकी है। लेकिन खुद जिनपिंग फ्रांस जाकर संबंध सुधारने की कोशिश में कुछ भी कर गुजरने को तैयार नजर आ रहे हैं।

जज की चेतावनी के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने न्यायाधीश को कहा कुटिल

-कोर्ट के आदेश का उल्लंघन पर नौ हजार डॉलर का जुर्माना लगाया

वौकेशा (एजेंसी)। कोर्ट की अवमानना मामले में दोषी ठहराए जाने और 'गैग आदेश' का उल्लंघन करने पर जज ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को विचाराधीन मामले में बयानबाजी करने की मनाही (गैग आदेश) के उल्लंघन का दोषी ठहराते हुए उन पर नौ हजार डॉलर का जुर्माना लगाया। जेल जाने की चेतावनी दिए जाने के एक दिन बाद पूर्व अमेरकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने खिलाफ रिश्वत मामले में सुनवाई कर रहे जज को कुटिल कह दिया है।

2024 के राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप पर वयस्क फिल्मों की अभिनेत्री स्टॉर्मी डेनियल्स को, उन दोनों के कथित अवैध संबंधों के बारे में चुप्पी साधने के बदले 130,000 डॉलर की रिश्वत देने का तथा इस राशि के भुगतान को छिपाने के लिए रिकॉर्ड में हेराफेरी करने का आरोप है। मामले की सुनवाई कर रहे जज ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को विचाराधीन मामले में बयानबाजी करने की मनाही (गैग आदेश) के उल्लंघन का दोषी ठहराते हुए उन पर नौ हजार डॉलर का जुर्माना लगाया। यह जुर्माना चुप रहने के लिए धन देने के मामले में गवाहों, ज्यूरी और अन्य

के संबंध में सार्वजनिक बयान देने से रोकने वाले 'गैग आदेश' का लगातार उल्लंघन करने पर लगाया गया। ट्रंप के सोशल मीडिया और प्रचार वेबसाइट पर पोस्ट के लिए जुर्माना लगाते हुए न्यायाधीश जुआन एम. मर्चन ने कहा था कि यदि ट्रम्प ने उनके आदेशों का उल्लंघन करना जारी रखा, तो वह जेल जाएंगे। बता दे 'गैग आदेश' न्यायाधीश द्वारा अदालत के समक्ष वकीलों, गवाहों और पक्षों को किसी मामले के तथ्यों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करने के लिए दिया जाता है। यह आम तौर पर विशेष आपराधिक मामलों में दिया जाता है ताकि प्रतिवादी को निष्पक्ष सुनवाई का आश्वासन दिया जा सके।

वहीं पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विस्कॉन्सिन के वौकेशा में एक कार्यक्रम में समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा, कोई अपराध नहीं है। एक कुटिल न्यायाधीश हैं। वह पूरी तरह से विरोधाभासी न्यायाधीश हैं। उन्होंने दावा किया कि यह मामला और उनके खिलाफ अन्य मामले व्हाइट हाउस द्वारा उनके चुनाव अभियान को कमजोर करने के लिए चलाए गए हैं।

अमेरिका ने रूस के खिलाफ नए प्रतिबंध लगाए

वाशिंगटन। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने कहा कि अमेरिकी सरकार नए प्रतिबंधों के साथ रूस के हथियार उत्पादन को लक्षित कर रही है। चीन, बेल्जियम और स्लोवाकिया जैसे तीसरे देशों की लगभग 200 कंपनियां और 80 व्यक्ति प्रभावित हैं, जो कथित तौर पर अपने हथियार कार्यक्रम के लिए सामग्री की खरीद में रूस का समर्थन करते हैं। विभाग के अनुसार, प्रतिबंधों का उद्देश्य रूस द्वारा रासायनिक और जैविक (बायोलॉजिकल) हथियारों का उत्पादन करना भी है।

फिलीपींस में भीषण गर्मी से सूखा बांध... दिखाई दी 300 साल पुरानी बस्ती

मनीला (एजेंसी)। फिलीपींस में इनदिनों भीषण गर्मी पड़ रही है। गर्मी कितनी खतरनाक हैं, कि यहां बांध भी सूखने लगे हैं। फिलिपींस के एक प्रमुख बांध का पानी सूखने के कारण 300 साल पुरानी बस्ती फिर दिखाई दी हैं। राष्ट्रीय सिंचाई प्रशासन के पर्यवेक्षक इंजीनियर मार्लोन पलाडिन ने कहा कि कई महीनों तक बारिश नहीं हुई है। इस कारण मार्च में नुएवा एसिजा प्रांत में पेंटाबांगन बांध का पानी सूखने लगा। बांध के सूखने के बाद अब एक चर्च, मकबरा और एक कस्बे का हॉल सहित प्रमुख संरचनाएं दिखाई दे रही हैं।

इस कस्बे का नाम पेंटाबंगन है। 1970 के दशक में जब बांध बनाया गया तब यह जलाशय के कारण पानी के नीचे डूब गया। लेकिन इस समय देश के लगभग आधा हिस्से सूखे की चपेट में है। इससे बांध का जल स्तर भी नीचे हो गया। फिलीपींस सरकार की मौसम एजेंसी के आकड़ों के मुताबिक 30 अप्रैल को यह स्तर सामान्य से 50 मीटर कम था। पलाडिन ने आगे कहा, बांध बनने के बाद यह छठी बार है जब यह शहर एकबार फिर दिखने लगा है। लेकिन इस बार यह सबसे लंबे समय तक दिख रहा है।

जब भी पानी जलस्तर नीचे जाता है, तब यह वीरान शहर एक टूरिस्ट स्पॉट बन जाता है। दक्षिण पूर्व एशिया के ज्यादातर हिस्सों की तरह फिलिपींस में भी पिछले कई हफ्तों से भीषण गर्मी का प्रकोप देखा जा रहा है। तापमान यहां 42 डिग्री सेल्सियस पार कर गया है। इस कारण आम जनजीवन अस्त व्यस्त है। स्कूलों को बंद कर दिया गया है। वहीं लोगों को घरों से काम करने की सलाह दी गई है।

फिलीपींस के अलावा बांग्लादेश में भी भीषण गर्मी के कारण स्कूल बंद कर दिए गए हैं। थाईलैंड में जनवरी से अप्रैल तक 30 लोगों की हीटस्ट्रोक के कारण मौत हो चुकी है। थाईलैंड का कहना है 2023 में तापमान 37 डिग्री थी। लेकिन म्यामांर के बॉर्डर इलाकों के करीब यह 45 डिग्री से ऊपर है।

किताब से खुलासा: कविता सुनाने पर कैंप में डाल देते हैं खून और आवाज के लेते हैं सैंपल

– चीन के उइगुर मुस्लिमों पर जुल्म की कहानी जो दुनिया तक नहीं पहुंचती

बीजिंग (एजेंसी)। चीन में सरकार का मीडिया पर इतना नियंत्रण है कि अंदर की खबर बहुत ही कम दुनिया के सामने आ पाती है। चीन में बिना सरकार की इजाजत के कुछ भी प्रकाशित नहीं होता है। चीन में विदेशी पत्रकारों पर सरकार की नजर रहती है कि वह कहां जा रहे हैं। वहीं चीन उइगुरों के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है इसका पता लगाना तो और भी मुश्किल है।

पिछले कुछ सालों में अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उइगुरों के मानवाधिकारों के उल्लंघन की बहुत चर्चा हुई। चर्चा में यह बात भी सामने आई कि हान समुदाय बहुल चीन में उइगुरों कैंपों में बंद कर रखा है, जहां उन पर बहुत जुल्म किए जाते हैं। चीन सरकार के इस जुल्म से अनेक मुस्लिम उइगुरों के परिवार टूट गए हैं और जो लो कैंपों में नहीं है, उनकी सख्त निगरानी की जाती है।

उइगुरों पर अत्याचार के बारे में इस समुदाय के लोग बताते हैं, जो किसी तरह से चीन से दूसरे देशों में भागने में कामयाब हो गए हैं। इसके लिए वे सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं। फिर भी चीन में उइगुरों की वास्तविक हालत क्या है और उनके साथ वहां की

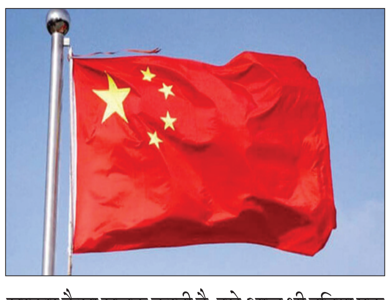

सरकार कैसा सलूक करती है, इसे आज भी दुनिया एक हद तक अनजान है। ताहिर हामुत इजगिल की किताब पढ़ने वाले को इससे रुबरु कराती है। ताहिर उन खुशकिस्मत उइगुरों में हैं, जो चीन से अपने परिवार के साथ भागने में कामयाब हो गए थे और उन्होंने अमेरिका में पनाह ली। ताहिर की किताब में लिखा है चीन में उनके दोस्त दुकानदार, किताब बेचने वाले और उइगुर कविताओं के मुरीद थे। अक्सर ये लोग एक दूसरे को अपनी कविताएं सुनाते थे। ताहिर लिखते हैं कि 2016 में ऐसी ही एक बैठक में जब कविताएं सुनाई जा रही थीं, तो वहां पुलिस आ गई।

पुलिस के आने पर उइगुर कवियों ने उनके चीनी पुलिसवालों के शराब मंगाई और उन्हें ऑफर की। इस शराब को मंगाने का मकसद यह संकेत देना था कि वे अच्छे नागरिक हैं। उसके बाद पुलिसवाले उन कवियों का पहचानपत्र अपने साथ ले गए। ताहिर किताब में लिखते हैं कि इस वाकये के कुछ दिनों बाद उस बैठक में शामिल उइगुर कवियों को एक-एक करके उन कैंपों में भेज दिया गया। ये कैंप उइगुरों की सांस्कृतिक पहचान मिटाने के लिए बनाए गए हैं। ताहिर इस किताब में लिखते हैं कि उस रोज बैठक में जो भी लोग शामिल हुए थे, आखिर में सिर्फ ताहिर ही बचे थे जो कैंप में भेजे जाने से पहले परिवार समेत चीन से भाग निकले।

ताहिर बताते हैं कि इन सबसे पहले जब वह युवा थे, तब भी उन्होंने तीन साल जेल और लेबर कैंप में गुजारे थे। उस वक्त उन पर देश से बाहर अवैध दस्तावेज ले जाने का आरोप लगा था। जब वह रिहा हुए तो उन्होंने फिल्म मेकिंग को अपना करियर बनाया। साथ ही साथ वह कविताएं भी लिखते रहे। लेकिन इसके बाद उइगुर किताबों को चीन की सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया। इसी दौरान ताहिर और उनकी पत्नी को एक बार पुलिस थाने बुलाया गया। वहां उनके ब्लड सैंपल लिए गए इसके बाद उन्होंने चीन से अमेरिका भागने की योजना बनाई। 2017 में वह अपने परिवार के साथ वहां जाने में कामयाब रहे।

संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन का समर्थन करेगा भारत

जेनेवा (एजेंसी)। भारत ने उम्मीद जाहिर की है कि संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बनने के फिलिस्तीन के प्रयास पर पुनर्विचार हो और विश्व संगठन का सदस्य बनने के उसके प्रयास का समर्थन किया जाएगा। अमेरिका ने पिछले महीने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में फिलिस्तीनी को संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता प्रदान करने के प्रस्ताव पर वीटो किया था। फिलिस्तीन राज्य को संयुक्त राष्ट्र में सदस्यता को लेकर 15-राष्ट्र परिषद ने एक मसौदा प्रस्ताव पर मतदान किया। प्रस्ताव के पक्ष में 12 वोट पड़े, वोटिंग के दौरान स्विट्जरलैंड और ब्रिटेन अनुपस्थित रहे और अमेरिका ने वीटो किया। अपनाया जाने के लिए, मसौदा प्रस्ताव को इसके पक्ष में मतदान करने के लिए कम से कम नौ परिषद सदस्यों की आवश्यकता थी, इसके पांच स्थायी सदस्यों- चीन, फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में से किसी ने भी वीटो नहीं किया।

संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि राजदूत रुचिरा कंबोज ने कहा कि हमने नोट किया है कि संयुक्त राष्ट्र में सदस्यता के लिए फिलिस्तीन के आवेदन को उपरोक्त वीटो के कारण सुरक्षा परिषद द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था, मैं यहां शुरुआत में ही कहना चाहूंगी कि भारत की दीर्घकालिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, हमें उम्मीद है कि समय आने पर इस पर पुनर्विचार किया जाएगा और संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनने के फिलिस्तीन के प्रयास को समर्थन मिलेगा। भारत 1974 में फिलिस्तीन मुक्ति संगठन को फिलिस्तीनी लोगों के एकमात्र और वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देने वाला पहला गैर-अरब राज्य था। भारत 1988 में फिलिस्तीन राज्य को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था और 1996 में, दिल्ली ने इस खोला। गाजा में फिलिस्तीन प्राधिकरण का प्रतिनिधि कार्यालय, बाद में 2003 में रामल्ला में स्थानांतरित कर दिया गया।

वर्तमान में, फ़िलिस्तीन संयुक्त राष्ट्र में एक गैर-सदस्य पर्यवेक्षक राज्य है, यह दर्जा फिलिस्तान को 2012 में महासभा द्वारा दिया गया था। यह दर्जा फ़िलिस्तीन को विश्व निकाय की कार्यवाही में भाग लेने की अनुमति देता है, लेकिन वह प्रस्तावों पर मतदान नहीं कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र में एकमात्र अन्य गैर-सदस्य पर्यवेक्षक राज्य होली सी है, जो वेटिकन का प्रतिनिधित्व करता है।

संक्षिप्त खबरें

घाटशिला में झामुमो का बुथ स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन

जादूगोड़ाः झामुमो जिला समिति द्वारा घाटशिला विधानसभा एवं पोटका विधानसभा के डुमरिया प्रखंड झामुमो के कार्यकताओं को घाटशिला में बूथ स्तरीय कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम झामुमो जिला अध्यक्ष रामदास सोरेन जी के अध्यक्षता में हुई। इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री चम्पई सोरेन ने कार्यकताओं को संबोधित किए। मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी बूथ समिति ही जीतने के लिए सबसे अहम भूमिका होती है। इसलिए सशक्त कमिटी बन कर लोकसभा चुनाव में जमशेदपुर को जीतने का कार्य करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी समीर कुमार मोहंती, पोटका के विधायक संजीव सरदार, केंद्रीय महासचिव बाबूलाल सोरेन एवं अन्य नेतागण उपस्थित थे। इस सम्मेलन में विभिन्न दलों के कार्यकर्ता अपने पार्टी को छोड़कर झारखंड मुक्ति मोर्चा के दामन थामा। मुख्यमंत्री ने पार्टी के पटा एवं फूल माला से उन लोगों का स्वागत किया। इसके बाद बहरागोड़ा के कार्यक्रम के लिए निकल पड़े।

अंबेडकराईट पार्टी ऑफ इंडिया से भाटीन पंचायत के धीःधार्मू टुडू ने जमशेदपुर लोकसभा सीट के लिए पर्चा दाखिल किया

जादूगोड़ाः आम चुनाव 2024 के सांसदीय क्षेत्र से पोटका विधानसभा अंतर्गत भाटीन पंचायत के मेचुआ (बगलासाई) के धीःधार्मू टुडू ने जमशेदपुर -9 लोकसभा सीट के लिए पर्चा दाखिल किया, सांसद चुनाव लड़ेंगे। बताते चलें कि विगत चार-पाँच वर्षों से अंबेडकराईट पार्टी ऑफ इंडिया से जुड़कर जिला मिडीया प्रभारी वा प्रदेश कार्यकारणी सदस्य के तौर पर बेहतर कार्य कुशलता का परिचय दिया तत्पश्चात पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष धीमान विजय मानकर ने भरोसा कर जमशेदपुर सीट से प्रत्याशी का टिकट दिए । जिसका आज जिला निर्वाचन कार्यालय में पर्चा दाखिल किया गया।इस मौके पर लोस प्रभारी विजय मुखी ,लोस सह प्रभारी मंगल सोरेन,अधिवक्ता सुब्रतो कुमार प्रधान, जिला मिडीया सह प्रभारी हेमंत मुर्मू ,जिला कोषाध्यक्ष सालहाई माझी,पोटका विधानसभा प्रभारी चम्पाई सोरेन,घाटशिला विस प्रभारी मनोज मार्डी,सदस्य रंजीत लोहार,सुरधू माझी,खुदू हांसदा,कान्हु सोरेन दशरथ हेम्ब्रम गांधी टुडू एवं काफी तादाद में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हुटाप में तीन जलमिनार खराब, ग्रामीण परेशान

लोहरदगाः किस्को प्रखंड के पाखर पंचायत के हुटाप गांव में तीन जलमिनार खराब पड़े हुए हैं। जिसमे एक पीएचडी विभाग से है एवं दो पंचायत से परंतु अगले वर्ष पंचायत से बने जल मीनार में मुखिया द्वारा हल्का मरम्मत कर 1,40,000 रुपए की निकासी कर राशि का बंदर बांट कर लिया गया। इस संबंध में पीएचडी के कार्यपालक अभियंता, प्रखंड विकास पदाधिकारी किसको और मुखिया पाखर को आवेदन देकर मरम्मत कार्य करने का अनुरोध किया गया है, परंतु अब तक इसकी मरम्मत नहीं की गई है। इस वजह से ग्रामीणों को पेयजल के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आक्रोशित ग्रामीणों का कहना है की यदि दो दिनों के अंदर जल मीनार का कार्य नहीं कराया जाता है तो प्रखंड विकास पदाधिकारी के कार्यालय का घेराव किया जाएगा एवं इसकी शिकायत उपायुक्त से की जायेगी।

लोकसभा के निर्दलीय प्रत्याशी चमरा लिंडा का चुनावी सभा आयोजित, भैसमुंदो में जुटे पांचों विधानसभा के कार्यकर्ता

आदिवासियों के इस हाल के जिम्मेदार कांग्रेस और भाजपा : चमरा लिंडा

बिभा संवाददाता

लोहरदगाः भंडरा प्रखण्ड के भैसमुंदो में लोकसभा के निर्दलीय प्रत्याशी चमरा लिंडा की चुनावी सभा का आयोजन किया गया। चुनावी सभा में पांचों विधानसभा से हजारों कार्यकर्ता और मतदाता शामिल हुए। सभा को संबोधित करते हुए चमरा लिंडा ने कहा कि आदिवासियों के इस हाल के जिम्मेदार कांग्रेस और भाजपा दोनों रहे हैं। कांग्रेस ने अपने 60 साल के शासनकाल मे आदिवासियों को बदहाल बना कर रख दिया। उन्होंने कहा कि खतियान में आदिवासियों को छोड़ कर सभी धर्म की अपनी अलग पहचान है। आदिवासियों को अपने वजूद के लिए सरना कोड की जरूरत है। इसके बावजूद राजनीतिक षडयंत्र के तहत सरना कोड को बंद करा दिया गया। भारत में जितने भी खनिज संपदा हैं। सभी आदिवासियों के जमीन के नीचे है। इसे पाने के लिये एकजुट होना होगा। अपने पक्ष में वोट की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि समाज तय करेगा कि अबकी बार सांसद कैसा होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता विशुनपुर विधायक प्रतिनिधि शिवराम कच्छप ने किया। मौके पर मुख्य रूप से आदिवासी छात्र संघ के उपाध्यक्ष आलोक बागे, देवेंद्र तिर्की, संतोष तिर्की, अमित एक्का, रॉबर्ट मिंज, पालयूस टोप्पो, दुर्गा खड़िया, निकोलस मुंडा, रोपना उरांव, धनेश्वर उरांव, सरना प्रार्थना सभा जिला प्रचारक रजवंती उरांव, जिला परिषद सदस्य राजमणि उरांव, पूर्व जिला परिषद सदस्य शामिल उरांव, विधायक प्रतिनिधि भंडरा बिट्टू उरांव, पूर्व विधायक प्रतिनिधि एतवा उरांव, फूलदेव उरांव, सूरज उरांव, आदिवासी छात्र संघ के सुखदेव उरांव, जतरू उरांव, अमित उरांव, प्रार्थना सभा के गुमला जिला अध्यक्ष सुशील केरकेट्टा, मोहनलाल उरांव, जिला परिषद उपाध्यक्ष विनोद उरांव, प्रार्थना सभा संरक्षक सोमरा उरांव, आदिवासी छात्र संघ के संस्थापक सदस्य दिलीप टोप्पो, केंद्रीय उपाध्यक्ष जतरु उरांव, अमृता उरांव, नारायण उरांव, विमल भगत, परदेसिया उरांव सहित हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

माओवादियों ने चार प्रखंडों में लोकसभा चुनाव बहिष्कार के लगाए पोस्टर

बिभा संवाददाता

पलामू। जिले में लोकसभा चुनाव 13 मई में को है, लेकिन उससे पहले ही प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के जरिये चुनाव बहिष्कार को लेकर पोस्टरबाजी की जा रही है। जिले के चार प्रखंड क्षेत्र में माओवादियों की ओर से चुनाव बहिष्कार को लेकर बुधवार रात पोस्टरबाजी की गई है। इन पोस्टरों के माध्यम से आम जनता को कई तरह की जानकारी दी गई है और व्यवस्था पर सवाल उठाया गया है। सूचना मिलने पर गुरुवार सुबह पुलिस ने सभी जगह से पोस्टर हटा दिया है। एक साथ चार प्रखंड क्षेत्र में पोस्टर लगाए जाने से ग्रामीणों में वोटिंग को लेकर दहशत का माहौल है। माओवादियों की ओर से जिले के हुसैनाबाद, हैदरनगर, मोहम्मदगंज और पांडू प्रखंड क्षेत्र में कई जगहों पर पोस्टरबाजी की गई है, जिन इलाकों में पोस्टर लगाए गए हैं वह क्षेत्र काफी सुदूरवर्ती हैं और नक्सलियों का कभी इन इलाकों में गहरा प्रभाव रहा था। सारे प्रखंड क्षेत्र एक दूसरे से सटे हुए हैं। ऐसे में माओवादियों को इन इलाकों में पोस्टरबाजी करने में आसानी हुई। माओवादियों की ओर से हैदरनगर प्रखंड क्षेत्र के बरेवा आंगनबाड़ी केंद्र और पैक्स गोदाम पर पोस्टर लगाया गया। इसी तरह भदुवा, लोहरपुरा स्कूल भवन पर पोस्टर लगा मिला है। पांडू प्रखंड क्षेत्र में भी पोस्टरबाजी की गई। हुसैनाबाद के महुदंड, मोहम्मदगंज के माहुर आदि क्षेत्रों में भी पोस्टर लगा मिला है। यह सारे इलाके 20 किलोमीटर एरिया में है। छह से अधिक जगह पर पोस्टरबाजी की गई है। सूचना मिलने पर पुलिस सारे जगह से पोस्टर हटाते हुए कार्रवाई में जुटी हुई है। ग्रामीणों को भरोसा दिलाया जा रहा है कि पुलिस उन्हें सुरक्षा देने में सक्षम है और पोस्टर बाजी से वह भयभीत न हो। कुछ जगहों पर पोस्टर लगा देखकर ग्रामीणों के द्वारा जानकारी दी गई।

क्या लिखा है पोस्टर में

माओवादियों के जरिये लगाए गए हस्तलिखित पोस्टर में 18 वीं लोकसभा चुनाव को बहिष्कार करने, जनता की नई जनवादी राज कायम करने, वोट के जरिए केवल सरकार का रंग बदलता है। शोषण और शासन बंद नहीं होता है। चुनाव के जरिए सरकार बदलकर जनता की एक भी बुनियादी समस्या का हल नहीं होता है। ब्राह्मणीय- हिंदुत्व- फासीवाद राज को ध्वस्त करो, जनता की जनवादी राज स्थापित करो, जल, जंगल, जमीन पर अपना हक कायम करना है तो मजदूर किसानों का अपना राज बनाना होगा। वोट बहिष्कार करें। पुलिसिया राज ध्वस्त करें। जनता की नई जनवादी राज स्थापित करें। भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था बनाना है तो मौजूदा भ्रष्ट व्यवस्था को ध्वस्त कर क्रांतिकारी जन कमेटी जनताना सरकार (आरपीसी) का निर्माण करें। एनआरसी, सीसीए, एनपीआर, नई कृषि बिल, नए श्रम कानून एवं नई शिक्षा नीति से मुक्ति पाना है तो वोट का बहिष्कार करें। सौ चूहा खाकर बिल्ली चली हज करने वाली कहावत को मोदी सरकार, आरएसएस चरितार्थ कर रही है। आम जनता सावधान रहें।

स्टेटिक सर्विलांस टीम आदर्श आचार सहिता पालन करवाने में मुस्तैद

बिभा संवाददाता

लोहरदगाः सेन्हा के कंडरा में निर्मित अस्थायी चेक पोस्ट के समीप चुनाव आयोग के निदेर्शानुसार उपायुक्त डॉ. बाघमारे प्रसाद कृष्ण तथा पुलिस अधीक्षक हारिश बिन जमा के निर्देश पर शांतिपूर्वक भयमुक्त चुनाव कराने के उद्देश्य से स्टेटिक सर्विलांस टीम द्वारा दण्डाधिकारी अनिल उरांव की मौजूदगी में वाहन जांच अभियान चलाया गया। आगामी लोकसभा आम चुनाव का बिगुल बजते ही आर्दश अचार संहिता लागू होने पर लगातार वाहनों की जांच किया जा रहा है। उसी क्रम में गुरुवार को जांच के दौरान एस आई मनीष कुमार महतो के द्वारा पुलिस बल के सहयोग से सघन वाहन जांच किया गया। वाहन जांच के दौरान राजनीति पार्टी का पोस्टर,बैनर, झंडा, अवैध हथियार के अलावे गंजा,ब्राउन शुगर,चरस,शराब जैसे अन्य नशीला पदार्थ एवं पैसे का बारीकी से जांच किया जा रहा है। साथ ही वाहन जांच के दौरान वाहन में रखे बैग थैला डिक्की सहित अन्य चीजों का भी जांच करते हुए तलाशी लिया जा रहा है। चेक पोस्ट में तैनात पुलिस कर्मियों द्वारा संदेहास्पद व्यक्ति या बाहर से तथा दूसरे जिले से आने जाने वाले लोगों पर पैनी निगाहें रखी जा रही है। और क्षेत्र में अपराधिक गति विधि पर अंकुश लगाने के दिशा में कारवाई भी किया जा रहा है। शांतिपूर्वक भयमुक्त चुनाव सम्पन्न हो सके जिसको लेकर दण्डाधिकारी अनिल उरांव ने कहा कि चुनाव आयोग के निदेर्शानुसार उपायुक्त व पुलिस अधिक्षक के निर्दश पर लगातार वाहन जांच अभियान चलाया जायेगा। मौके पर एस आई मनीष कुमार महतो दल बल के साथ मौजूद थे।

इंडियन यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव इशिता सेढ़ा ने सना परवीन को किया सम्मानित

लोहरदगाः जिले के किस्को प्रखंड अंतर्गत किस्को गांव निवासी मालौना जहांगीर हुसैन और नसरीन अंजुम की पुत्री सना परवीन ने इंटरमीडिएट के फाइनल परीक्षा में विज्ञान विषय के अंतर्गत पूरे राज्य में टॉप टेन में रही। जिसमें 94.6 अंक लाकर झारखंड राज्य में छठा स्थान प्राप्त की है जिसे इंडियन यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव इशिता सेढ़ा ने बुके व अंगवस्त्र देकर एवं मिठाई खिलाकर सम्मानित किया और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इशिता सेढ़ा ने कहा कि सना परवीन ने अपनी मेहनत और लगन से जहां अपनी शिक्षण संस्थान अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है वही लोहरदगा जिला एवं पूरे झारखंड राज्य का भी गौरवान्वित कर दिया है। सना परवीन को सम्मानित प्रदेश महासचिव फहद खान ने कहा है लक्ष्य निर्धारित कर पढ़ाई करने से सफलता प्राप्त किया जा सकता है मौके पर जिला अध्यक्ष गुलाम जिलानी सहित अन्य उपस्थित रहे।

लोकसभा चुनाव को ले झारखंड मुक्ति मोर्चा की जिला स्तरीय बैठक सम्पन्न

झारखंड की अस्मिता, देश संविधान, आपसी समरसता और भाईचारा को कायम रखने के लिए इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी को जीतना आवश्यकः मोजम्मिल

भाजपा लोकतंत्र और संविधान को समाप्त करने की साजिश रच रही है: अनुपमा भगत

बिभा संवाददाता

लोहरदगाः लोहरदगा लोकसभा चुनाव में इंडिया महागठबंधन के प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करने को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा की जिला स्तरीय महत्वपूर्ण बैठक गुरुवार को झामुमो जिला कार्यालय में जिलाध्यक्ष मोजम्मिल अहमद की अध्यक्षता में हुई। बैठक को संबोधित करते हुए झामुमो के जिलाध्यक्ष मोजम्मिल अहमद ने कहा की यह चुनाव हमारे लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कार्यकताओं को निर्देश देते हुए कहा कि अपने-अपने गाँव पंचायत पर ध्यान केंद्रित करें। उन्होंने कहा कि श्री अहमद ने कहा कि झारखंड की अस्मिता, देश का संविधान, आपसी समरसता और भाईचारा को कायम रखना है, तो हमें इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत को भारी बहुमत जीता कर गठबंधन को मजबूती प्रदान करनी होगी। यह चुनाव आम चुनाव होकर भी देशवासियों के लिए बेहद खास है। सत्ताधारी भाजपा जनता के असली मुद्दों से ध्यान भटकाते आई है। पिछले 10 वर्ष के लम्बे शाषण के बाद भी भाजपा और मोदी जी अपनी उपलब्धि के आधार पर चुनाव नहीं लड़ पा रहे हैं। इसलिए उन्हें धार्मिक उन्माद का सहारा लेना पड़ रहा है। हमें इस चुनाव में उन्हें मजबूती से जवाब देना होगा।इसीलिए गठबंधन के सहयोगी दलों के सभी स्तर के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं के बीच समन्वय बनाना आवश्यक है। लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत की अर्द्धांग्नि सह पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष अनुपमा भगत ने उपस्थित झामुमो के नेताओं एवं कार्यकताओं को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार जनता को गुमराह किया है, देश में बेरोजगारी और महंगाई बढ़ी है। भाजपा लोकतंत्र और संविधान को समाप्त करने की साजिश रच रही है। लोकप्रिय पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को को झूठे मुकदमे में जेल भेजा जाना इसी साजिश का परिणाम है। ऐसे में इंडिया गठबंधन ही देश का बेहतर विकास कर सकता है। उन्होंने कहा कि प्रत्याशी सुखदेव भगत को विजय बनाएं, हम आपकी समस्याओं और आपके कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाने के लिए आपके साथ हमेशा खड़ा रहेंगे। संबोधित करने वालों में जिला परिषद सदस्य सह झामुमो नेत्री राधा तिर्की, जिला सचिव अनिल उरांव, केन्द्रीय समिति सदस्य समीद अंसारी, विनोद यादव, इंजीनियर जफर इकबाल, महिला जिलाध्यक्ष सरिता भगत, जिला उपाध्यक्ष मुकेश साहू आदि शामिल थे। सभी ने एक स्वर में कहा इंडिया गठबंधन जिन्दाबाद, गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत जिन्दाबाद, झामुमो जिन्दाबाद और भारी बहुमत से विजय बनाने का आह्वान किया। मौके पर झामुमो केंद्रीय सदस्य विनोद यादव ,केंद्रीय सदस्य समीद अंसारी ,जिला सचिव अनिल उरांव, जिला उपाध्यक्ष मुकेश साहू ,जिला परिषद सदस्य राधा तिर्की, युवा जिला अध्यक्ष अजय उरांव, महिला जिला अध्यक्ष सरिता भगत, सचिव बरखा उरांव, छात्र जिला अध्यक्ष सोमी कुमार ,सचिव संतोष उरांव किद्रा जिला अध्यक्ष सुनील राम ,किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष राजेश कुमार, बुद्धिजीवी जिला अध्यक्ष सयामनंदल लोहरा , अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष सातिम टोप्पो , सचिव मंसूर अंसारी ,पेसरार प्रखंड अध्यक्ष अरविंद कुमार, कुडू प्रखंड अध्यक्ष शंकर उरांव, किसको प्रखंड अध्यक्ष साकिर अंसारी ,सेनहा प्रखंड अध्यक्ष राजकिशोर राम, कैरो प्रखंड अध्यक्ष सजाद अंसारी, सदर प्रखंड अध्यक्ष बुद्धिमान उरांव, नगर अध्यक्ष आकाश साहू, अहद खान, भंडारा प्रखंड अध्यक्ष परवेज आलम, जफर इकबाल ,अनिल उरांव ,सोमा उरांव ,युवांति कुमारी, सुषमा उरांव, मोना उरांव, सोमरा उरांव, मंगरा उरांव ,सामिल उरांव, प्रकाश कुमार, विश्वास कुमार ,यूसुफ अंसारी, समीम अंसारी, अफरोज आलम, अब्दल कुदुष , मनोज कुमार ,राहुल उरांव, मोना कुमार, प्रखण्ड,स्तर के झारखंड मुक्ति मोर्चा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

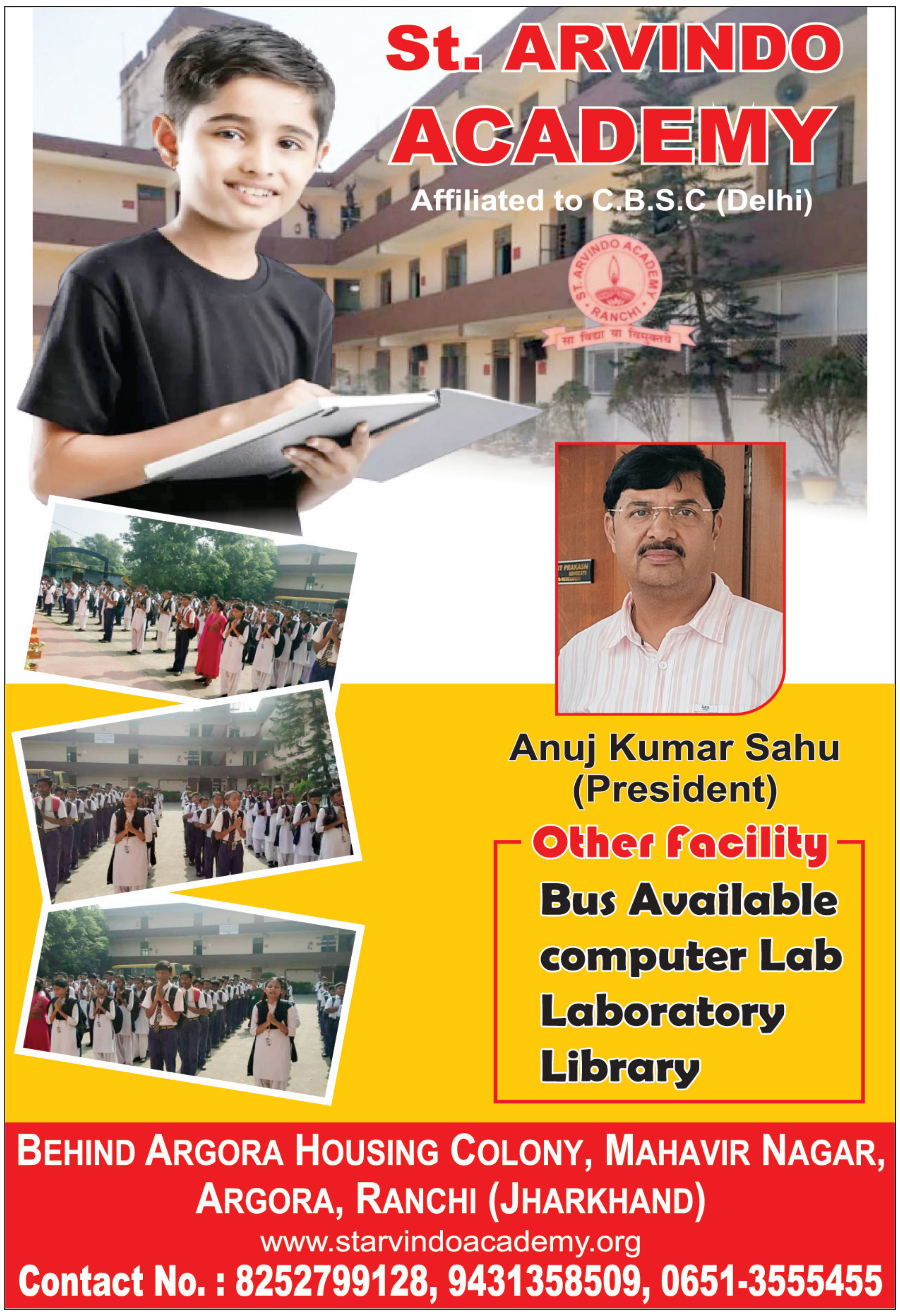

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक संजय कुमार के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। संपादक कविता साहू*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com